Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HINDI PRADEEP 1966

078008
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवीन्द्रप्रदीप
31
1966

RT-0315

078008

STOCK VERIFICATION
Central
Library
2024-25 G.K.D.U. Hdr.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक सं०
आगत सं०
तिथि

वन्देमातरम्

हिन्दी प्रदीप

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन राजनीति इत्यादि के विषय
में
हर महीने की अमावश्या को प्रयाग से निकलता है।

शुभ सरस देश सनेह पुरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

सम्पादक—पं० बालकृष्ण भट्ट

जि० ३१ | कार्तिक बदी आमावश्या शुक्रवार सम्बत् १९६६ | सं० १

विषय सूची।

१—प्रदीप की जगमगाती ज्योति।
२—दिवालियों की दिवाली।
३—आगे क्या होने वाला है।
४—भारत क्यों आरत।
५—बसल सुत्तं।
६—एशिया का उलट फेर।
७—प्रथु चरित्र नाटक।
८—पंजाब हिन्दू कान्फ्रेन्स।
९—हमारे सुशिक्षितों में परिवर्तन
इत्यादि

078008
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक सं०..............
आगत सं०..............
तिथि०..............
गुरुकुल ... कांगड़ी

हिन्दी प्रदीप

जि० ३१ } कार्तिक बदी आमावश्या शुक्रवार सम्वत् १९६६ } सं० १

प्रदीप की जगमगाती ज्योति ।

—:o:—

सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान् सच्चिदानन्द परमात्मा को कोटिशः न्यवाद है कि विघ्न बाहुल्य को पार कर प्रदीप दीपमालिका की दीपावली साथ सदा के लि[illegible]ों के नैराश्य तिमिर को ो। इतनी दुर्गति सह[illegible] लोग दाने २ को तरसते हैं पेटभर अन्न मिलना कठिन हो रहा है हर तरह पर शिकंजे में कसे जाने की भांति दब रहे हैं तब भी नहीं चितावनी होती। तो निश्चय हुआ "मूरख हृदय न चेत यदि गुरु मिलैं विरंचि सम" हज़ार ऐसी दीपमालिका प्रतिदिन हुआ करै तुम पर उसका कुछ भी असर न पड़ेगा। आमोद प्रमोद के लोलुप तुम्हें कोई कैसी ही दशा में रक्खे तुम उसी में सन्तुष्ट रहना पसन्द करते हो। तब एक क्या सौ ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृभाषा का प्रेम बड़ी कठिन तपस्या है । इस दुष्कर तपश्चर्य्या के लिये वही सर्वथा सन्नद्ध हो जो सब सुखों को लात मार अपने को मिट्टी में मिला हुआ समझ ले और देशोद्धार में बद्ध प्रण तथा दृढ़प्रतिज्ञ रह निज उद्देश्य के पूर्ण करने की क्षुरणवर्त्म से रेखा मात्र भी इधर उधर विचलित न हो। साथ ही ऐसे २ ख़यालों से चित्त को आश्वासन और ढाढ़स देता रहे कि "विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्य उत्तमगुणा न परित्यजन्ति" अस्तु ॥

प्रिय पाठक महोदय! आज दीपमालिका महोत्सव है। मार तमाचा गाल लाल करने की भांत आइये आज हम भी आभास मात्र को दिवाली मनालें । सच्ची दीवाली तो तब है जैसा कहा है । "सन दीवाली तेहि घर जेहि घर गेहूं होय"। सो गेहूं हमारा सब अन्यदेशों में ढो जाता है तब यह दिवाली पुरानी दीपमालिकाओं का आभास नहीं तो क्या है। समुचित दीपमालिका तब होती थी जब देश जीर्णोद्यान सा नहीं हुआ था । चारो ओर अनेकानेक महाजन सेठ साहूकार कुबेरपति बने ऋद्धि सिद्धि के घर थे। अविच्छिन्न व्यौपार देश में रहने से लक्ष्मी का सब ठौर देदीप्यमान् प्रकाश था। हर एक वस्तु सस्ती से सस्ती कंगाल तथा धनी सबको एक सी मिलती थी । गोधन की इतनी अधिकाई थी कि देश में दूध की धारा बह रही थी। प[illegible] अब तो—आई दिवाली मुफ़लिसी की। कर नहीं सक्ते कुछ अब हम [illegible] जगत में अपने मन की। था म[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपत् सिधारी

मूढ़ता सब ओर बगरं. तब सनातन आड़ है ॥

था सनातन बड़ा उत्तम देश के उपकार में ।

शुद्ध सात्विक धर्म वैदिक श्रेष्ठ क्रम का आदि में ॥

किन्तु जब से स्वार्थ इसमें आ मिला बहु भेष में ।

एकता चम्पत हुई तब से हमारे देश में ॥

अब तो हम कुछ भी नहीं हैं क़ौम की तारीख़ में ।

हे प्रभो ! भटके सदा हम अलग हो तब ध्यान से ॥

द्रवहु अब तो दीनवत्सल सुमति सम्पति दान से ।

बुद्धि तत्त्व के सर्वस्व पुराने आर्यों ने इस दीपमालिका महोत्सव ो कैसी एक नातिशीतोष्ण सोहावनी ऋतु में रक्खा है जिसमें न बहुत र्मी न बहुत जाड़ा दिन को दिनमणि (सूर्य्य देव) की मृदु किरणें रात ो विमलतारक गगन मनुज के मन को मगन करने में कहीं से त्रुटि हीं करते । ऐसे समय दीपमालिका की दीपावली मानों चेता रही है कि तुम गुलामी की ज़ंजीर में जकड़े हुये जो अज्ञान तिमिर में टटोल हे हो सो अब सावधान और सचेत हो देशसेवा में सन्नद्ध हो जाओ ायरी पस्त हिम्मती आलस्य को दूर हटाओ। दीपावली समान शिक्षा ा इतना प्रचुर प्रकाश पाय भी जो तुम्हारे हृदय का गाढ़ान्धकार न र हुआ तो जान लिया गया कि दुर्दैव दैत्य की ओर से मनुष्य जाति तुम्हीं सदा के लिये अवनति के गड्ढे में पड़े रहने को चुन लिये गये ो। इतनी दुर्गति सहने पर भी कि बहुधा हममे से बहुधा लोग दाने २ ो तरसते हैं पेटभर अन्न मिलना कठिन हो रहा है हर तरह पर शिकंजे ें कसे जाने की भांत दब रहे हैं तब भी नहीं चितावनी होती । तो निश्चय हुआ "मूरख हृदय न चेत यदि गुरु मिलैं विरंचि सम", हज़ार ऐसी दीपमालिका प्रतिदिन हुआ करै तुम पर उसका कुछ भी असर न पड़ेगा । आमोद प्रमोद के लोलुप तुम्हें कोई कैसी ही दशा में रक्खै तुम उसी में सन्तुष्ट रहना पसन्द करते हो । तब एक क्या सौ ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपमालिका तुम्हें कुछ नहीं बतला सक्ती। हमारे बड़ों ने इन तिहवारों को बड़ी बुद्धिमानी के साथ नियत किया है जिनसे हमें बड़ी मेंबड़ी हर तरह पर शिक्षा मिलती है। जो जाति ऊपर को ताकती उसे साधारण से साधारण बातों में बहुत बड़ी शिक्षा मिलती किन्तु, जो नीचे को चितै रही है उस पर बड़ी सी बड़ी घटनाओं का कुछ असर नहीं पड़ता॥

अस्तु इसी तरह का झिखना झीखते हमें ३० वर्ष होगया आपके सुनते २ ऊब हो गई अब फिर वही राम कहानी आरंभ करते हैं आंख मूंद हमारे इस चिरायते के काढ़े को भी पीते चलिये गुन करेगा॥

दिवालियों की दीवाली।

जब होंय चार पैसे तब सूझती दिवाली।
हां किस बिना पै खेलैं जब पेट ही है खाली॥
एक ओर भूख डाइन हम को सता रही है।
बच्चों के दुःख की आहें सीना जला रही है॥
है तन पै एक लगोंटी मैली फटी अधूरी।
औरत के पास धोती सो भी नहीं है पूरी॥
हिन्दू का मेरा घर है हांड़ी तलक नहीं है।
कैसे कहूं कि भाई दिल में कलक नहीं है॥
बाबा के वक्त का बस खाली मकां यही है।
अन्दर का जिसके टुकड़ा कोई नहीं सही है॥
आता न हो सिपाही टिक्कस वसूल करने।
बेहतर है इसके पहले हम उसकी फिक्र कर लें॥
हा! राम! पर करें क्या कोई नहीं है चारा।
इज्ज़त बचाना इस दम दुशवार है हमारा॥

माधव शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे क्या होने वाला है ।

मनुष्य का कुछ ऐसा ही स्वभाव है कि उसको भविष्य के जानने की बड़ी उत्कण्ठा रहती है—वह इस बात को अच्छी तरह जानता है कि भविष्य ईश्वर के आधीन है और परमात्मा ही हर एक कामों का निपटारा करता है तौ भी वह अपनी बुद्धि उसमें बिना भिड़ाये नहीं रहता—यह उत्कण्ठा उसकी और भी अधिक बढ़ती है जब बहुत सी असामान्य घटनायें उसके चारो ओर होने लगती हैं और बुराई या भलाई उस घटना का परिणाम देखने में आता है। बल्कि बुराई और भलाई दोनों साथ २ मिली हुई पाई जाती हैं । इस अवस्था से जब उसकी बुराई या भलाई और उसका स्वार्थ भविष्य के फलों पर निर्भर है तब उसे और विशेष उत्कण्ठा होती है और ऐसी उत्कण्ठा का चित्त में उत्पन्न होना मनुष्य की भलाई का लक्षण है। यद्यपि यथार्थ भलाई परमात्मा के आधीन है तथापि ऐसा देखा जाता है कि भविष्य फलों के बीज वर्तमान ही में रहते हैं और मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वर्तमान को भली भांति सोच विचार और भविष्य में होने वाले हानि लाभ की ओर ध्यान रख तब अपना काम करे। इतना ही नहीं वरन मनुष्य जाति की सभ्यता और उन्नति की यही परख है कि वह भविष्य का ध्यान रख कर अपना काम करती है। उसकी अवनति और परतंत्रता का एक मात्र कारण यही है कि उसने भविष्य पर कुछ ध्यान न दिया । दूर कहां जांय हमारे हिन्दुस्तान का इतिहास इस सिद्धान्त की गवाही दे रहा है। १८वीं और १९वीं शताब्दी में जब कि इस देश की राष्ट्रीयता का इतिहास बदलता था और पश्चिम की कौमों से इसका मिलाप हुआ उस समय जिन राजा महाराजाओं के हाथ में हिन्दुस्तान का भाग्य था उन्होंने इस सिद्धान्त को लात मार कर प्रकार सुलह और लड़ाई नई कौमों से कीं जिसका फल आज हम लोग भोग रहे हैं। आफ्रिका के बुअरों ने भी अङ्गरेज़ों से लड़ाई और सुलह की थी किन्तु इस बुद्धिमान् कौम ने भविष्य की गति सोच और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात का सूत्र ध्यान रख सब काम किया कि उस समय थोड़ा
सुख जो कथमपि चिरस्थाई नहीं है छोड़ देना भविष्य की भलाई का
कारण होगा । इस समय हिन्दुस्तान भी अपनी बदलती हुई दशा में
है परमात्मा की प्रेरणा से इसकी हालत बदल रही है । कोई तो य
कहता है कि जो जो घटनायें इसमें आज तक हुई हैं सब हमें पी
को हटा रही हैं कोई इसके विरुद्ध कह रहे हैं कि उन घटनाओं ह
के बार २ घटित होने से हमारा उद्धार होगा । किसी २ की ऐसी बुद्धि
हो गई है कि यह सब व्यर्थ है इन झगड़ों से अलग रहना ही बुद्धि
मानी है । कुछ लोग ऐसे भी हैं जो नित्य नये सिद्धान्त निकाला कर
हैं और उनकी डांवाडोल राय का कुछ ठिकाना ही नहीं रहता
कौम या जातीयता के अदल बदल के समय कुछ ऐसा ही होता है
उस समय बुद्धि का कुछ ठिकाना ही नहीं रहता और यह देश
सौभाग्य का एक चिन्ह है । अङ्गरेज़ों के जगत् विख्यात विद्वान् औ
वावदूक वक्ता "बर्क" पहले फ्रेंच रिवोल्यूशन के पक्ष में थे किन्तु ज
इस महाविद्रोह का विराट रूप उनके दृष्टि गोचर हुआ तो सदा प्रजा
का पक्ष लेने वाले और अत्याचारियों के काम की निर्भय समालोचना
करने वाले "बर्क" अपने सम्पूर्ण पुराने सिद्धान्तों को लात मार फ्रेंच
रिवोल्यूशन की निन्दा करने लगे और इसी नाम की एक पुस्तक लिखी
जिसे पढ़ आज दिन हम यह शिक्षा ले सकते हैं कि जब परमा
किसी राष्ट्र के भाग्य को बदलता है उस समय बड़ों २ की बुद्धि भ्रष्ट
हो जाना एक मामूली बात है । इसका मूल कारण यही है कि राष्ट्र
की ऐसी अवस्था में कुछ ऐसे उद्दण्ड कर्म होने लगते हैं कि उसको ब
भय मालूम होता है और उनसे उत्पन्न फलों को भला बुरा कहना
बड़ी हिम्मत और बुद्धि का काम हो जाता है । १

बुद्धि भ्रष्ट हो जाने का दूसरा कारण यह है कि ऐसी अवस्था
कभी उसके सिद्धान्तों की जीत होती मालूम पड़ती है और कभी ऐसा
प्रतीत होने लगता है कि उन्हीं सिद्धान्तों से हार हुई । ऐसी दशा में ह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाते हुये भी अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहना सामान्य बात नहीं है। तीसरे यह भी जानना कठिन हो जाता है कि यह सचमुच धर्म युद्ध है या स्वार्थी लोगों ने अपने निज के लाभ के लिये इस उपद्रव को खड़ा कर दिया है और निष्प्रयोजन लोगों को कष्ट में डाल रहे हैं। "बर्क" का भी यही खयाल था कि वालटेर आदि स्वार्थी लोगों ने अपने नाम और लाभ के लिये यह भयानक फ्रूंच रिवोल्लूशना रचा है किन्तु उनकी बात पीछे असत्य पाई गई। निश्चय ऐसे समय में लोग अपने सिद्धान्तों पर बड़ा ज़ोर देते हैं और उनके असिल तत्व को समझना कठिन हो जाता है। चौथे उसी काम में हाथ लगाते हुये उसके फल को कहना साधारण बात नहीं है क्योंकि उस समय सब शक्ति वर्त्तमान ही को सिद्ध करने में लग जाती है। भीड़ में रह यह नहीं कह सकते कि हम किधर को जांयगे पर दूर खड़ा हुआ मनुष्य उस भीड़ के प्रबाह की दशा को बतला सकता है। आज हिन्दुस्तान की भी दशा ठीक ऐसी ही गम्भीर है। चारो ओर अशान्ति फैली हुई है वे नेतागण जिनके ऊपर राष्ट्र भर का पूर्ण विश्वास था अपनी माता का साथ छोड़ अलग हो गये। कितने लोग नित्य अपना सिद्धान्त बदला करते हैं, कितनो ने अपने अमूल्य जीवन को भी खो दिया, कितने पड़े २ बहुत तरह का कष्ट सह रहे हैं और पुकार २ कर कह रहे हैं कि दुःख ही से सुख पैदा होगा। इस दशा में किसे कहें कि यह ठीक कह रहा है और ठीक रास्ते पर चल रहा है। दूसरी ओर राज शासकों के कामों का असिल मतलब हल करना कठिन है। एक ओर तो व प्रजा के दबाने का यत्न कर रहीं हैं और इस प्रयत्न में वे कोई बात नहीं उठा रखते दूसरी और लोगों को फुसलाने और अपनी ओर मिलाने के उद्देश्य से कुछ अधिकार भी दे रहे हैं। मानो एक हाथ में विष और दूसरे में अमृत लेने का दावा कर रहे हैं। Repression और Reform दोनों साथ साथ चल रहे हैं आज दिन हमारे राज्य का भार भी उस मन्त्री महाशय के हाथ में है जो जगत विख्यात Burke बर्क को अपना गुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते हैं और जो आज उसी कीचड़ में आ फसे हैं जिसके कारण से उनके गुरू ने अपने जन्म भर के सिद्धान्तों पर लात मारा। सिर्फ अन्तर इतना ही है कि फ्रांस की जगह India भारत है। तीसरे हिन्दुस्तान के वर्तमान राष्ट्रीय आकाश को और भी अन्धेरा करने वाली और बुद्धि को भ्रम में डालने वाली आठ सौ वर्ष से साथ रहने वाली मुसलमान जाति है जिसका आज दिन मुख्य कर्तव्य हिन्दुओं से अलग रहना और उनके विरुद्ध काम करना मालूम होता है। इस जाति की संख्या इतनी अधिक है कि पारसी, जैन, ईसाई, की तरह हम इन्हें अपने मुकाबिले में भूल भी नहीं सकते। हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय हल चल में उस जाति का निश्चय ख्याल करना होगा। गौर करके देखा जाय तो इस जाति के कर्म्मों से ऐसा मालूम होता है मानो इस जाति का कोई देश ही नहीं है जिसको यह मातृ भूमि समझ कर उसकी सेवा करें। दूसरे इस जाति पर टर्की, फारस, इजिप्ट इत्यादि देशों में रहने वाले स्वजातियों के बीर गुणों और कर्म्मों का कुछ भी असर होते हुये प्रत्यक्ष में नहीं मालूम होता। हिन्दुस्तान में यह जाति एक कटी सूखी डाली के समान प्रबल वायु के साथ २ बह रही है। इस तरह से अपने चारो ओर भिन्न २ शक्तियों को एक दूसरे के साथ टकराते देख कभी तो आशा चित्त में उत्पन्न होती है और कभी फिर चित्त नैराश्य और शोक के सागर में डूब जाता है। जितना ही ज़्यादा वर्तमान पर ध्यान देने की कोशिश की जाती है उतना ही बुद्धि भ्रम में पड़ जाती है।

हिन्दुस्तान का वर्तमान राष्ट्रीय आकाश निश्चय घोर अन्धकार से भरा हुआ है परन्तु इतिहासह में बतलाता है कि इस प्रकार के अन्धकार में हर एक राष्ट्र को किसी न किसी समय पड़ना ही होता है। पहिले घोर अन्धकार में अपनी भलाई और उन्नति के लिये अवश्य जाना पड़ता है यदि वर्तमान पर और भी ध्यान दिया जाय तो शायद यह कहना होगा कि अभी तो हम लोग अपने को Morally इस लायक बना रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कि जब सच मुच आने वाले घोर तिमिर में हमारी परीक्षा होगी तब हम लोग उस समय जीवन और मृत्यु के सवाल को सफलता के साथ तय कर देंगे। हिन्दुस्तान इस समय तैयारी की अवस्था में है और ऐसे समय इसके वास्ते यह भलाई की बात है कि सैकड़ों शक्तियों से आज इसको मुकाबिला करना पड़ता है। ऐसी दशा में हार होना किसी तरह से नैराश्य का कारण न होना चाहिये। ऐसी दशा में नैराश्य पर नैराश्य आना और उसमें अपने उच्च उद्देश्य को न छोड़ना सच्ची तैयारी का लक्षण और राष्ट्र की भावी उन्नति का कारण है। जिस तरह विद्यार्थी को सैकड़ों तरह के प्रश्नों को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये पहिले ही से मेहनत के साथ हल कर लेना पड़ता है उसी प्रकार राष्ट्र को भी अपनी बुराई दूर करने और अपने सच्चे गौरव पर पहुंचने के पहिले सैकड़ों बाधा डालने वाली शक्तियों के साथ लड़ कर और उनका नाश कर अन्तिम परीक्षा के लिये तैयार होना बहुत ज़रूरी है, बिना इस moral preparation मानसिक दृढ़ता की मुस्तैदी के आगे आने वाले दिनों में किसी भलाई की बात की आशा करना निरी मूर्खता है। राष्ट्र की इस पहिली अवस्था में Brain मस्तिष्क से बहुत काम नहीं लिया जाता इस समय Heart चित्त की दृढ़ता की ज़रूरत है। बहुत ध्यान करने और छान बीन करने से डर रहता है कि हमारे विरुद्ध बाधा डालने वाली शक्तियां कहीं सदा के लिये हमें नैराश्य में न डाल दें और हम अपने कर्तव्य को जो सच्चा और धर्म युक्त है छोड़ न दें तब अपनी उन्नति और भलाई से सदा के लिये वञ्चित हो जांय। राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना उद्देश्य पा जाने पर मस्तिष्क की आवश्यकता होती है प्रारम्भ में Heart चित्त की दृढ़ता ही की ज़रूरत है। टर्की और फ़ारस में अब बुद्धि की ज़रूरत है क्योंकि उनका कर्तव्य अब Constructive बनाने वाला होना चाहिये परन्तु अपने मनोरथ को पूरा करने वाली जातियों का कर्तव्य बहुत कुछ destructive बिगाड़ने वाला होता है और ऐसे समय में राजसिक भावों का चित्त में रहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नति का कारण होता है । राष्ट्रीय Struggle में धर्म पर लड़ने वाला पक्ष हमेशा निर्बल रहता है और उसकी निर्बलता को दूर करने के लिये दृढ़ता, धैर्य्य, आशा और अपने धर्म पर अटल विश्वास की ज़रूरत रहती है, ऐसे समय इन्हीं गुणों का राष्ट्र के हर एक व्यक्ति को उदाहरण बन कर अपनी तरफ़ अपने स्वजातियों को खींचना पड़ता है उनकी बुद्धि को नहीं वरन उनके विचार Sentiment को अपील करना पड़ता है । आज हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय पक्ष भी अपने विरुद्ध शक्तियों के सामने बहुत निर्बल है परन्तु इसमें वे शक्तियां भरी हुई हैं जिनके आगे विरोधी की प्रत्यक्ष शक्तियों का अधिक होना इसको नाश नहीं कर सकता, यह अपने सत गुणों के उदाहरण से अपने स्वजातियों को दिन २ अपनी ओर खींच रही है । भविष्य में बहुत कठिन दुःख सहना होगा और बहुत दिन तक सहना होगा क्योंकि हमारा heart चित्त बहुत ही बहुत अधः demoralised and denationalised अधःपतित भ्रष्ट और जातीयता के भाव से च्युत हो गया है परन्तु वर्तमान के चिन्हों से यही मालूम होता है कि हमारी तैयारी ठीक हो रही है और हमारा उद्देश्य निश्चय सफल होगा ।

मदनमोहन शुक्ल ।

भारत क्यों आरत

वही भारत देश है, वही भारत भूमि है, वही जल है, वही वायु है, वही मनुष्य हैं परन्तु तब से अब कौन सी ऐसी विलक्षण बात हो गई कि पहिले का सा सुख स्वप्नवत् हो गया । हाय ! क्रोड़ों हमारे हिन्दू भाई पेट खाते मुंह ललाते हैं । कितने ऐसे भी हैं कि उनको दिन और रात में मुशकिल से एक बार भी भोजन नसीब नहीं होता और कितने अधम से अधम जीविका उठाये हुये भी भूखों मरते हैं । "अली कली ही से फस्यो आगे कौन हवाल"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे का भी जो कुछ हवाल है वह प्रत्यक्ष ही है। देश का देश निष्पुरुषार्थी, निःसत्व, अल्प बल, अल्प आयु और पिंड रोगी, हो गया है। सत्व, पुरुषार्थ, तेजस्विता, आत्म निर्भरता, आत्म त्याग, स्वतंत्रता, साहस, प्रभुत्व शक्ति, आदि पौरुषेय गुण तो मानो रसातल को चले गये स्वार्थ निष्ठा, भीरुता, दास्य भाव, इत्यादि अवगुण हमारे भारत वासियों के हृदय में अटल से हो गये हैं॥

ऐसी अवस्था के होते हमारा भारत आरत क्यों न हो जब कि उसके वासी उस को ग़ारत करने के लिये महा भारत मचाये हुये हैं। पाठक वृन्द सोचेंगे कि किस महा भारत से यहां मतलब है। इसके प्रति मेरा यह कहना है कि महाभारत की रण भूमि कुरुक्षेत्र ही थी परन्तु हमारे कल्पित महाभारत की रण-भूमि समस्त हिन्दुस्तान है। उसके योद्धा कौरव पांडव थे और इसके सकल भारतवासी और समस्त वर्तमान प्रचलित कुरीतियां अर्थात् आपस की फूट, स्त्रियों में अशिक्षा, बाल्य विवाह, अपनी मातृ भूमि का अनादर, अपने देश की बनी हुई चीज़ों पर घृणा प्रगट करना इत्यादि २ हैं। असली महाभारत में तो एकही शत्रु के जीतने की आवश्यकता थी पर यहां तो एक २ दुर्गुण शत्रु बने हैं जब तक एक भी उनमें के बने रह जांयगे हम नहीं उठ सकैंगे। भारत के भाई व भग- नियों! जैसी दशा आजकल भारत की आप लोग देख रहे हैं वैसी प्राचीन काल में कदापि न थी उस समय में यह भारत गौरव तथा प्रतिष्ठा के योग्य था। एक समय यह भारत अपनी प्रतिष्ठा व कारीगरी से सुसम्पन्न व समृद्धिशाली था और दूसरे देशों को तुच्छ समझता था वही आज कल ऐसी गिरी दशा में है कि इसका पूर्ववत् समृद्धिशाली होना अति कठिन है॥

अब अपने भाइयों तथा भगनियों के सामने अपने देश की प्रचलित कुरीतियों पर अपना विचार प्रगट करती हूं। हमारे देश में न जानिये किस कुसायत से जैचन्द और पृथ्वीराज के कलह के समय से फूट की बेल बोई गई है कि वह अचल सी हो गई है, उसको खोद बहाना अब हमारे सुशिक्षित व संशोधक भाई बहिनों का परम कर्तव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ लगा है जिसके बिना देश के किसी काम में सफलता की सम्भावना कदापि नहीं हो सकती। सच पूछिये तो सहानुभूति का पैदा करना ही सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म है यावत् सत्कर्म है, सबों का सारांश है, और सहायक है, क्या आशा की जा सकती है कि कोई दिन ऐसा भी आवेगा जब कि हमारे देश का सम्पूर्ण दल का दल एक सा अपने कर्तव्य पर ध्यान देने वाला हो और पुराने भारत को फिर से नया कर डाले? देशानुराग, साहस, सहानुभूति, एकचित्त हो काम करने की सामर्थ्य, आत्मत्याग अर्थात् अपनी हानि होती हो और समस्त देश और जाति का उसमें फ़ायदा हो तो अपनी निज की हानि को एक प्रकार का लाभ समझना इत्यादि बातें हमारे भारतवासियों के चित्त में उत्पन्न कर दे॥

स्त्री शिक्षा—खेद का विषय है। कि स्त्री शिक्षा पर पुरुषों का बहुत ही कम ध्यान है स्त्रियों को ऐसी हीन दशा में रखने का परिणाम पुरुष लोग उठा रहे हैं सही परन्तु उनकी आंख नहीं खुलती। इस लिये हमारी प्रार्थना उन महानुभाव पुरुषों से यह है कि स्त्रीशिक्षा को तरफ ध्यान दे विद्यादान का पुण्य लूटैं। याद रहे! कि जो स्त्री पढ़ी लिखी शुशिक्षिता होंगी तो अपने बालकों को बचपन ही से अच्छी शिक्षा देने का यत्न करैंगी और मातृभूमि की तरफ भी उनका ध्यान आकर्षित करती रहैंगी जोकि भविष्यत् में हमारे देशोद्धारक होंगे। आज कल स्त्रियों में इतनी अशिक्षा फैली हुई है कि अपना भला या बुरा तक नहीं जानतीं समझतीं। बहिनों! आओ हम सब मिल अविद्या के अन्धकार को विद्या रूपी दीपक से दूर करैं और सुशिक्षिता बन कर अपनी पूर्वज अहिल्या, सीता, गार्गी, द्रौपदी, तारा, विदुला, महाराणी लक्ष्मी बाई आदि का अनुकरण कर एक बार इस गिरे भारत को फिर उठाने का यत्न करें॥

बाल्य विवाह—बाल विवाह भी हमारे देश को बहुत ही हानि पहुंचा रहा है विधवाओं की संख्या जो इतनी इन दिनों बढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है वह इसी का परिणाम है। इसका मूल कारण अविद्या ही है लड़की के पैदा होते ही वर की खोज होने लगती है। दस बरस की लड़की हुई कि विवाह न होने के कारण से मानों पितर लोग नरक में जाने लगते हैं। लड़की का मुंह देखना माता पिता तथा भाई को पाप लगता है, इत्यादि विचार हमारे देश को सत्यानाश करने वाले अपढ़ पण्डितों तथा हमारी निर्बोध देशभगनियों के चित्त में उठने लगता हैं। बहिनों ! ज़रा सोचिये कि जब पुरुषों का आधा अङ्ग बाल्यविवाह अज्ञान रूपी रोग से ग्रसित होजाता है तब वह अपने आधे अङ्ग से किस प्रकार देश का उद्धार कर सकते हैं। यह बाल विवाह ही का परिणाम है कि अल्पबुद्धि, निस्तेज, निष्पुरुषार्थी लड़के पैदा होकर देश को रसातल में डुबो रहे हैं। कुशाग्र बुद्धि, दूरदर्शी, हमारे शास्त्रकारों का अभिप्राय है कियोग्य सन्तान पैदा करें जो कि भविष्य में हमारे देशोद्धारक हों। बहिनों ! उठो और अपने अनेक अज्ञान को दूर कर देश सेवा में तत्पर होजाइये। अस्तु इस समय वैवाहिक कुरीतियों का संशोधन समाज का पहिला अङ्ग है इस लिये बिना इसके दूर हुये हमको कभी सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

देशभक्ति-देशभक्ति का नाम हमारी भारत ललनाएं जानती ही नहीं। उनके चित्त में देशभक्ति न पैदा होने से देश सेवा में कितनी कमी है यह सब जानते ही होंगे। इसका कारण भी वही अविद्या है क्योंकि जब स्त्री पढ़ी लिखी होंगी तो उनका इतना ज्ञान पैदा होगा कि वे अपनी उन्नति और अवनति समझेंगी और जो बिन पढ़ी हुईं तो उनका सारा दिन चवाव और दूसरे की निन्दा मे ही बीत जाता है जैसे, अमुक के लड़की का ब्याह था उसकी लड़की तेरह वर्ष की होगई थी, अमुक के दायजे में इतनी कसर रह गई, फलानी की पहुंची बहुत अच्छी है इत्यादि २ कहां तक गिनावें। यदि ये सब बातें गिनाई जाने लगें तो एक अच्छी छोटी पुस्तक बन जाय। हा ! शोक ! जिस देश में वीर जाया बीर प्रसू व देशभक्त ललनाएं हो चुकी हैं उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश में आजकल ऐसी २ मूर्खा स्त्रियां भरी पड़ी हैं। इसका दोष हम पुरुषोंहीं को देंगी जो कि हम लोगों को हर तरह पर निर्बल किये हैं क्योंकि आठ ही वर्ष की अवस्था में हम को ब्याह कर एक प्रकार के ऋण से उऋण हो जाते हैं। हमको पढ़ाना लिखाना तो जानते ही नहीं। ब्याह होने पर सास ससुर तथा पति के आधीन रहती हैं। यदि वही हम लोगों को अच्छी तरह आदर से रक्खें, पढ़ना लिखना सिखावैं, हमें तुच्छ न समझैं, हम से घृणा न करैं, मनुष्य का सा वर्ताव हमारे साथ करैं और कहां तक कहैं हम से मुंह भर बोल ही लिया करैं तब भी हम लोगों में स्वावलम्बन, स्वाभिमान, स्वदेशाभिमान पैदा हों! बहिनो! हर तरह पर स्वदेशोन्नति के लिये उद्यत रहना चाहिये। विदेशी चीज़ों को भड़कदार देख स्वदेशी वस्तुओं से घिन न करने लगो ये ऐसी २ बाते हैं जो मन को डावांडोल करने वाली है। विदेशी चीज़ हम लोगों के स्वदेश प्रेम को ऐसा बुझा देती हैं कि जैसे पानी आग को बुझा देता है। इतना ही नहीं वरन् विदेशी वस्तुओं पर मन चलाना वैसाही पाप है जैसा कुलवधू को परपुरुष का किसी तरह का मनकर्म से संपर्क पाप पैदा करने वाला है। इस लिये हमलोगों को इन सबों से ऐसे बचना चाहिये जैसे मगर से मछली बचने की कोशिश करती है। भारत के भाई व भगनियों! अपने २ अज्ञान को दूर कर, व अपने स्वार्थ से परहेज़ कर, अपनी इन्द्रियों को वश में कर अनेक कष्ट सहते हुये भी आप लोगों को स्वदेश प्रेम में आरूढ़ हो जाना चाहिये॥

अब मैं अपने इस तुच्छ लेख को पूरा करते समय अपने पाठक व पाठिकाओं से अपने स्वच्छचित्त से प्रार्थना करती हूं कि मुझ अल्पबुद्धि अबला की इस प्रार्थना पर सब लोग अवश्य ध्यान देंगे और आपस के भेद-भाव को तज ऐक्य ग्रहण कर स्वदेश के उद्धार और स्वदेश की उन्नति के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ अटल हो जायंगे जिस प्रकार दीपावली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन पुराने दीपक को यम का दीपक मान घर से बाहर लोग निकाल देते हैं और नये दीपक का संचार करते हैं उसी प्रकार मुझे पूर्ण आशा है कि मेरे प्रिय भारतवासी मेरी उपरोक्त प्रार्थनाओं से अपने २ यहां की प्रचलित कुरीतियों को आगामी दीपमालिका के दिन बाहर निकाल कर सुरीतियों का प्रचार बढ़ा कर मुझे बाधित करेंगे ॥

सावित्री देवी ।

वसल सुत्तं

—:o:—

प्रायः लोग यह कहा करते हैं कि महात्मा बुद्ध ने वैदिकधर्म पर घोर आक्षेप किया है । यह लोक में मिथ्या प्रवाद है । आज हम उन्हीं महात्मा के वाक्य को, जो "वसल सुत्तं" के नाम से प्रख्यात है भाषानुवाद के साथ आप लोगों के सामने उपस्थित करते हैं । यह एक छोटा सा "शिक्षा-प्रद ग्रन्थ" "त्रिपिटक" के सुत्त पिटक के अन्तर्गत है इस में महात्मा बुद्ध ने भारद्वाज को वसल के धर्म अर्थात् कर्म की शिक्षा की है यह ग्रन्थ शब्द प्रति शब्द वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल । है इस में "योहन्ति परिरुघन्ति गामानि निगमानि च ३-तथा मातगं" के इतिहास में से देवयान महविरजं सो महापथं, "तथा २५ सन्त बन्धुनों" आदि वाक्य के पर्य्यालोचना से ज्ञात होता है कि उक्त महात्मा ने वेदों तथा वेद प्रति पादित धर्म के ही तत्वों का उपदेश किया है । इसी प्रकार ब्राह्मण धर्म सुत्तमें महात्मा बुद्धदेव ने ब्राह्मण के लक्षण को कहा है और "सर्वथा शूद्रा ब्राह्मणता मेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रतां" मनु के इस वचन के अनुकूल है । यह ग्रन्थ लंका दीप में सिंहलपुरी में मुद्रित है । मेरा विचार था कि दोनों ग्रन्थों को साथ ही आप के सामने उपस्थित करता पर केवल "वसल सुत्त" ही मिल सका यदि "ब्राह्मण धर्मसुत्त" मिल जावेगा तो उसका अनुवाद भी उपस्थित किया जायगा—ग्रन्थ के अनुवाद में भी सुमेधंकर स्वामी लंकाद्वीपवासी भिक्खु से मुझे बड़ी सहायता मिली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्होंने यह ग्रन्थ मुझे दिया और कहीं २ अर्थ में भी सहायता प्रदान किया जिन का मैं कृतज्ञ हूं ।

जगन्मोहन वर्म्मा काशी ।

वसल सुत्तं ।

एवंम्मे सुतं एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथ पिण्डस्स आरामे । अथ खो भगवा पुब्बराह समयं निवासेत्वा पत्त चीवरं आदाय सावत्थियं पिण्डा य पाविसि, तेन खो पन समयेन अग्गिक भारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स निवेसने अग्गे पज्जलिता होति आहुति पग्गहीता

ऐसा मैंने सुना है कि एक समय भगवान गौतम बुद्ध श्रावस्ती नगर में अनाथ पिण्ड के जेतवन नामक आराम (वाटिका) में ठहरे थे । तब भगवान पूर्वाह्ण समय (तक रह कर) पत्र चीवर कोल भिक्षार्थ श्रावस्तीनगर को गये । उसी समय अग्नी भारद्वाज ब्राह्मण के घर अग्नि प्रज्वलित होती थी और आहुति पड़ रही थी—

अथ खो भगवा सावत्थिय सपदानं पिण्डाय चरमानो येन अग्गिक भारदाजस्स ब्राह्मणस्स निवेसनं तेनुपसं कामि अद्दसाखो अग्गिक भारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं दूरतोव आगच्छन्तं दिस्वान भगवन्तं एतदवोच ।

भा०—भगवान बुद्धदेव श्रावस्तिनगर के गलियों में भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए जिस ओर अग्नीक भारद्वाज ब्राह्मण का घर था निकलते हुये देखाई पड़े तब अग्नीक भारद्वाज ब्राह्मण भगवान को दूर से आते देखकर इस प्रकार बोला—

तत्रेव मुण्डक तत्रेव समणक तत्रेव बसलक तिट्ठा होति । एवं वुत्ते भगवा अग्गिक भारद्वाजं ब्राह्मणं एतदवोच । पजानासि पनत्वं ब्राह्मण वसलं वावसल करणेवा धम्मेति । नखाहं भो गौतम जानामि बसलं वा बसल करणो वा धम्मे साधु मे मवं गौतमो तथा धम्मं दे सेतु यथाहं जानेय्यं वसलं वा वसल करणे वा धम्मेति । तेन हि ब्राह्मण सुता हि साधुकं मणसि करोहि भासिस्सामीति, एवम्भोति, खो अग्गिक भारद्वाजो ब्राह्मणो भगवतो पच्चस्सोसि, भगवा एतदवोच:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भा०—हे मुण्डक, वहीं रहो हे श्रमणक वहीं ठहरो! हे वसलक (चाण्डाल-हीन) वहीं बैठो-अर्थात् यज्ञमण्डप में मत आवो-जब अग्नीक भारद्वाज ब्राह्मण ने ऐसा कहा तो बुद्ध भगवान ने उस से कहा हे ब्राह्मण तुम वसल और वसल बनाने वाले धर्मों को जानते हो। भारद्वाज बोला हे गौतम! मैं तो वसल और वसल बनाने वाले धर्मों को नहीं जानता हूं! आप बतलाइये और उस धर्म को समझाइये जिस से मैं वसल और वसल करने वाले धर्मों को जान जाऊं-तब भगवान ने कहा कि हे ब्राह्मण सुनो मन के समाहित करो मैं कहता हूं अग्नीक भरद्वाज ब्राह्मण (एवम्भोति) एवस्तु कह के भगवान के बचन को सुनने लगा-भगवान बोलेः—

कोधनो उपन ही च पाप मक्खि च योनरो।
बिपन्नि दिट्ठि मायावी तंजञ्ञा वसलो इति॥

जो क्रोधी हो और ऐसा वशीभूत हो कि क्रोध को त्याग न सके, जो पाप दृष्टि हो अर्थात् सब को नीच समझे, जो विरुद्ध दृष्टि और मायावी हो उसको वसल जानो।

एकजं वा द्विजं वापि योधपाणानि हिंसति।
यस्स पाणे दया नत्थि तंजञ्ञा वसलोइति॥ २॥

भा०—चाहो एक जन्मवाला शूद्र हो वा द्विज ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य हो जो प्राणियों का संसार में हिंसा करता है और जिसके हाथ में दया नही है वह वसल है॥

यो हन्ति परिरुन्धन्ति गामानि निगमानिच।
निग्गाहको समञ्ञानो तंजञ्ञा वसलोइति॥ ३॥

भा०—जो मनुष्य ग्राम्य धर्म वा निगम धर्म अर्थात् लोक और वेद का नाश वो अवरोध करता है वा हठी कुवाच्य कहने वाला प्रसिद्ध है उसको वसल जानो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गामे वा यदि वा रञ्ञे यं परेसं ममायितं।
थेया अहिन्नं आदियति तंजञ्ञा वसलोइति ॥ ४ ॥

भा०—चाहे ग्रामवासी गृहस्थ हो बनवासी तपस्वी मुनि हो जो पराये धन को अपना करता है वा चोरी के धन वा बिना दिये वस्तु को लेता है उसे वसल जानो ॥

योहवे इण मादाय छुज्जमानो पालयति।
नहिते बण मत्थीतितजञ्ञा वसलो इति ॥ ५ ॥

जो संसार में ऋण लेकर मांगने पर भाग जाता है वा मैं तुम्हारा ऋणी नहीं हूं ऐसा कहता है उसे वसल जानो ॥

यो वे किञ्चिक्ख कम्यता पन्थस्मिं वजन जनं।
हन्त्वा किञ्चिक्खमादेति तजञ्ञा वसलोइति ॥ ६ ॥

जो मनुष्य कुछ लेने की कामना से राह में चलने वाले पथिक को मार कर वह पदार्थ ले लेता है उसे वसल कहते हैं ॥

यो अत्त हेतु परहेतु धनहेतु च यो नरो।
सक्खी पुट्ठो मुसाब्रूते तंजञ्ञा वसलोइति ॥ ७ ॥

जो पुरुष आत्मार्थ वा परार्थ वा धन के लोभ से साक्षी बन कर पूछे जाने से झूंठ बोलता है उसे वसल कहते हैं ॥

यो जाती नं सखा नं वा दारे सु पति दिस्सति ॥
सहसा सम्पियेनाति तंजञ्ञा वसलोइति ॥ ८ ॥

जो अपने जाति वा सखा (मित्र) के स्त्री को कुदृष्टि से देखता है अथवा बलात्कार उससे प्रेम करने की चेष्टा करता है उसे बसल कहते हैं ॥

यो मातरं वा पितरं छिन्नक गतयोब्बने।
पहू सन्तो न भरति तंजञ्ञा बसलो इति ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीर्ण गत यौवन माता व पिता का प्रभुत्व होते हुये पालन पोषण नहीं करता उसको बसल जानो ॥

यो मातरं वा पितरं वा भातरं भगिनिं ससुं ॥
हन्ति रोसेति वाचाया तंजञ्ञा वसलो इति ॥ १० ॥

जो अपने माता, पिता, भाई, बहिन वा सासु को मारता है- जो वचन से कटु भाषण करके दुःख देता है उसे वसल जानो ॥

यो अत्थं पुच्छितो सन्तो अनत्थ मनुसासति ।
पटिच्छन्नेन मन्तेति तंजञ्ञा वसलो इति ॥ ११ ॥

जो अर्थ पूछने पर विरुद्ध अनर्थ की शिक्षा करता है वा चुपके से विरुद्ध मन्त्रणा करता है उसे वसल जानो ॥

यो कत्वा पापकं कम्मं मा मं जञ्ञाति इच्छति ।
यो परिच्छिन्न कम्मन्तो तंजञ्ञा वसलोइति ॥ १२ ॥

जो पाप कर्म करके यह इच्छा करता है कि मुझे पापी लोग न जाने अर्थात् छिपाना चाहता है वा जो छिप कर कोई कर्म्म करता है उसको वसल जानो ।

यो वे पर कुलं गत्वा भुत्वा न सुचि भोजनं ।
आगतं न परि पूजेति तंजञ्ञा वसलोइति ॥ १३ ॥

जो मनुष्य पराये घर जाकर शुद्ध भोजन को नहीं खाता है और अपने घर आये हुये अतिथि की पूजा नहीं करता है उसे वशल जानो ॥

यो ब्राह्मणं वा समणं वा अञ्ञं वापि वनिब्बकं ।
मुसावादे य बंचेति तंजञ्ञा वसलोइति ॥ १४ ॥

जो ब्राह्मण को वा श्रमण को वा अन्य वन में रहने वाले त्यागी मुनि को मृषावाद से बंचन करता है उसे वशल जानो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो ब्राह्मणं वा समणं वा भत्तकाले उपट्ठिते ।
रोसे तिं वाचा न वदेति तञ्जञ्ञा वसलोइति ॥ १५ ॥

जो ब्राह्मण वा श्रमण को, भोजन के समय, आने पर चिढ़ाता है वा उनसे बोलता नहीं उसे वसल कहते हैं।

यो यत्तानं समुक्कंसे परञ्चमव जानति ।
निहीनो येन मानेन तंजञ्ञा वएलोइति ॥ १६ ॥

जो आत्म श्लाघा करता है अपने को श्रेष्ठ समझता है और दूसरे के हेठ नीच जानता है और जो गर्ब को त्यागता नहीं है उस को वसल कहते हैं।

असतं योध पब्रूति मोहेन पलि गुथिठतो ।
किंचिक्खं निजिगिं सानो तंजञ्ञा वसलो इति ॥ १७ ॥

जो मोह से लपटा हुआ पुरुष असत्य बोलता है और कुछ लेना चाहता है उसे बसल जानो।

रोस को कदरियो च पापीच्छो मच्छरी सठो ।
अहीरी को अनुत्तापी तंजञ्ञा वसलो इति ॥ १८ ॥

जो पुरुष रोष करने वाला कदर्य (कायर) पापिष्ठी मत्सर वाला शठ और निर्लज्ज और अनुत्तापी हो उसे बसल जानो।

यो बुद्धं परिभासति अथ तस्स सावकं ।
परिब्बाजं गहट्ठं वा तंजञ्ञा वसलो इति ॥ १९ ॥

जो मनुष्य बुद्ध से अथवा बुद्ध के श्रावक से वा सन्यासी वा गृहस्थ से विवाद करता है वा दुर्वचन कहता है उसे वसल जानो।

यो वे अनरहा सन्तो अरहं परिजानति ।
चोरोस ब्रह्मके लोके एसखो वसलाधमो ।
एसखो वसला वुत्ता मया वो ये वो पकासिता ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०८४५०८

जो मनुष्य अनर्ह अपूज्य अयोग्य निन्दित कर्म करने वाला हो कर अपने को पूज्य मानता है वह ब्रह्म लोक में चोर है और यही वसलाधम है—यह वसल है जिनको मैंने तुमसे कहा और प्रकाशित किया।

न जाच्चा वसलो होति न जाच्चा होति ब्राह्मणो।
कम्मना वसलो होति कम्मना होति ब्राह्मणो ॥ २१ ॥

जन्म लेने से—जात मात्र से-न कोई वसल होता है और न कोई जाति मात्र से ब्राह्मण होता है कर्म से मनुष्य वसल (चाण्डाल) होता है और कर्म ही से ब्राह्मण होता है।

त दमिना विजानाथ यथा मेदं निस्सनं।
चण्डल पुत्तो सोपाको मातङ्गो इति विस्सुतो ॥ २२ ॥

सो यसं परमं पत्तो मातङ्गो यं सुदुल्लभं।
अगञ्छुं तस्स पुट्ठानं खत्तिया ब्राह्मण बभु ॥ २३ ॥

सोदेव या नमाहम्ह विरजंसो महापथं।
कामरागं विराजेत्वा ब्रह्म लोकू पगोअभू।
नतं जाति निवारेसि ब्रह्म लोकू पत्तिया ॥ २४ ॥

उसको इस प्रकार जानो मैं यह निदर्शन देता हूं कि श्वपाक चाण्डाल के पुत्र जिसका मातङ्ग नाम था वह कर्म के प्रभाव से मातङ्ग ऋषि उत्तम दुर्लभयश को प्राप्त हुये और उसके पास ब्राह्मण क्षत्रियप्रश्न (शङ्का समाधनार्थ) आते थे और थे देवयान मार्ग से अत्यन्त शुद्ध महापथ चढ़ कर काम राग त्याग ब्रह्म लोक को प्राप्त हुये और उनको ब्रह्म लोक जाते हुये जाति ने रोका नहीं अर्थात् चाण्डाल पुत्र होने से वह ब्रह्म लोक से वञ्चित नहीं हुये।

अज्झा यक कुले जाता ब्राह्मण मन्तबन्धुनो।
तेय पापेसु कम्मेसु अभिन्न मुहिस्सरे ॥ २५ ॥

दिट्ठेव धम्म गारय्हा सम्पाराये च दुंगतिं।
नते जाति निवारेति दुग्गच्छा गरहाय वा ॥ २६ ॥

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय करने वालों के कुल में उत्पन्न ब्राह्म मन्त्र कृत् ऋषियों के बन्धु पाप कर्म में अभिन्न अर्थात् निरत हुये और इसी जन्म में नीचत्व को प्राप्त हुये तब जन्मान्तर में दुर्गति हुई और जाति उनको दुर्गति और नीचत्व से न बचा सकी।

न जच्चा वसलो होति न जच्चा होति ब्राह्मणो।
कम्मना वसलो होति कम्मना होति ब्राह्मणो ॥ २७ ॥

जाति मात्र से न कोई वसल होता और न कोई ब्राह्मण होता है किन्तु कर्म्म ही है जिससे बसल और ब्राह्मण होता है।

एवं वुत्ते अग्गिक भारद्वाजो ब्राह्मणों भगवन्तं एतदवोच अभिक्कन्तं भो गौतम अभिक्कन्तं भो गौतम सेय्यथपि भो गौतम निक्कुज्जितं वा उक्कुज्जेय परिच्छिन्नं वा विपरेय्य मूलहस्सवा मग्गं अविक्खेय्य अन्धकारे वा तेथ पज्जोते धारेय्य मन्तो सूपानि दिक्खिन्तीति एवमेवं भोगता गौतमे न अनेक येरियाये धम्मोपकासितो तथाहं भगवन्तं गौतमं शरणं गच्छामि धर्मञ्च भिक्खुसर्घञ्च उपासखं म भवं गोतमोधारेतु अच्छनग्ग पाणु पेतं शरणं गतान्ति ॥ २८ ॥

जब भगवान ने ऐसा कहा तो भारद्वाज ब्राह्मण भगवान से बोला "ठीक है हे गौतम! अच्छा है, हे गौतम ऐसा ही है, हे गौतम आपने बन्द को खोल दिया, ढके हुये को उघार दिया, मूढ़ को राह बताया, अन्धकार में तेल का प्रदीप रख दिया, अब आंख वाले देखने लगे। इस प्रकार से भगवान गौतम ने अपने पर्य्याय से धर्म को प्रकाश किया। मैं भगवान गौतम के शरण को प्राप्त होता हूं धर्म और भिक्षुसंघ के शरण को प्राप्त होता हूं उपासक (अनुष्ठान करने वाला) होता हूं भगवान गौतम मुझे आगे हाथ जोड़ के बैठने वाले शरणागत को धारण करैं।

इति वशल सुत्तं समाप्तम्

जगन्मोहन वर्म्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशिया में उलट फेर

पिछले थोड़े से वर्षों से समस्त एशिया में एक उलट फेर सा हो रहा है। जापान का तो सिक्का पहिले ही जम चुका था। टर्की अर्थात् रूम में भी जिसको योरपनिवासी Sick Man कहा करते थे बहुत दिनों से एक राष्ट्रीय दल यंग टर्की (Young Turkey) नाम का चुपके चुपके अपना काम कर रहा था। अब उस दल की हर तरह पर जीत हो चुकी है। रूम का पिछला स्वेच्छाचारी सुल्तान राज सिंहासन से उतार अलग किया गया तथा नया सुल्तान गद्दी पर बैठाया गया। अब वहां पर प्रजा के अधिकार दिनों दिन बढ़ाये जा रहे हैं और प्रजा तन्त्र राज्य की नींव दृढ़ की जा रही है। अब टर्की वाले सबसे पहिले अपनी सेना और युद्ध के हर तरह के सामान को बढ़ाने में लगे हैं किन्तु इस पर योरोप वाले बड़े घबड़ाये हुये से दीख पड़ते हैं। ये लोग टर्की वालों को सुझा रहे हैं कि सेना की ओर ध्यान न दे उन्हे पहिले अपने भीतर के सुधारों में लगना चाहिये। टर्की भी इन मित्रों की नेक सलाह को खूब भांपता है और जानता है कि अपनी आबरू बचाने तथा योरप के आक्रमणों से अपनी सदा के लिये रक्षा करने के लिये पहिले अपने सैनिक बल को बढ़ाना आवश्यक है॥

फ़ारिस (Persia) में भी यही जाग्रति है। फ़ारिस की नई पार्टी ने भी राज्यस्थिति में संशोधन करने तथा प्रजा के अधिकारों को बढ़ाने के लिये हलचल की। शाह ने प्रजा के अधिकार बढ़ाने में अपने स्वत्त्व को कम होते देख कुछ अड़चन की। नई पार्टी ने चट उन हज़रत को गद्दी से उतार भगाया और नये शाह को जिसकी आयु १३ वर्ष की है गद्दी पर बैठा दिया॥

उधर चीन में भी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो रही है और चीन के युवकों ने अपने यहां १० वर्ष के भीतर प्रजातन्त्र्य स्थापन कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेने की ठान ली है। चीन में प्रान्तिक सभाएं बन गई हैं जो पूरी स्वतन्त्रता के साथ गवर्नमेंट की कार्रवाइयों पर की छान बीन करती हैं Imperial assembly के लिये प्रजा के प्रतिनिधि चुने जाने लगे हैं॥

हमारे भारत वर्ष के भी कुछ लोग "स्वराज्य! स्वराज्य"! चिल्लाने लगे हैं। ऐसी स्थिति में जब कि एशिया के प्रायः सभी देश करवट बदल रहे हैं कैसे सम्भव है कि भारत अकेला सब से पीछे पड़ा रहे। किन्तु हमारे शासक लोग स्वराज्यके नाम ही से चिढ़ते हैं और हमारे कृपानिधान मारले साहब तो भारतवासियों को स्वराज्य के अधिकार देना ऐसा ही असम्भव बतलाते हैं "जैसा किसी के हाथ में आकाश से उतार कर चांद पकड़ा देना"। क्यों न हो हम भी मानते हैं कि जब तक इस देश में फूट चुड़ेल का राज्य है तब तक मार्ले साहब का कथन बिल्कुल सत्य है। हमारे "स्वराज्य! स्वराज्य"! चिल्लाने वाले युवकों को चाहिये कि पहिले इस चुड़ेल को मार भगाने का यत्न करें॥

पृथु चरित्र नाटक।

——:o:——

नान्दी

भक्त्या श्रीपुरुषोत्तमोयदिरहः संसेवितः स्यान्मुदा।
सौभाग्यैकनिकेतनं प्रकुरुते तं कीर्तिमन्तं हरिः॥
सौजन्यामृतवारिधिः सहि भवेत् यस्य कृपाले शतः।
यः सर्वाश्रय सर्वगः श्रुतिनुतः पायाद्पापात्सवः।

नाद्यन्ते सूत्रधारः।

सूत्रधार—अहा पण्डित मण्डिता यह सभा कैसा शोभा दे रही है जैसा विकसित अंरविन्द पर मधुलोलुप चंचल चंचरिकों का झुण्ड आकर सुस्थिर हो बैठा रहे वैसा ही अभिनय रसिक ये सुजन महोदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज यहां इकट्ठे हुये हैं। तो उचित है कि गुण लोभी इन सुजनों को अपने तौर्यत्रिक वाद्यनाद्य गान से ऐसा लुभावें कि सब लोग प्रसन्न हो जांय। अच्छा तो आज कौन से नये नाटक का अभिनय उचित होगा (थोड़ा ठहर याद कर) हम तो भूल ही गये थे अच्छी याद आई हाल में प्रदीप के सम्पादक महाशय ने एक नया नाटक तैयार कर हमें दिया है। वह इस समय के लोगों की रुचि के बहुत ही अनुकूल होगा चलो उसी के लिये तैयार होने को अपने साथियों से कहें (जाता है)

(कलापी और कलकण्ठ गाते हुये दो नटों का प्रवेश) नाथ तुम पीड़ा वेगि हरो। रीती भरोभरी ढरकाओ ढरकी फेरि भरो—नाथ तुम पीड़ा०।

दुसह दुःख यह मिटे सकल कुछ ऐसा यतन करो।
जब जब जग कुनीति बहु बाढ़े धराधाम उतरो।
अत्याचारी दुष्ट दलन मिस अद्भुत रूप धरो।
तिन रूपन मह पृथुल यशस्कर पृथू नाम बगरो।

(नेपथ्य में) यह कौन राजा के विरुद्ध गाना गा रहा है ठहर ठहर अभी हम आय तेरा सिर कच्चे घड़े समान फोड़ चूर २ किये देते हैं।

दोनों (सुन कर) हाय गाना भी पूरा न हो सका अत्याचार का अन्त है चलो चलो जल्द यहां से निकल भागें। जिसमें इस दुष्ट को अत्याचार का अवसर न मिले (दोनों गये) (इति प्रस्तावना)।

(ढिंढोरा पीटते एक पुरुष का प्रवेश)

(एक, दो, तीन, ढिंढोरा पीटता हुआ) सुनो सुनो-सब लोग सुनो सावधान होकर सुनो-कान लगाकर सुनो-महाराजाधिराज वेणु की आज्ञा है जो न सुनैगा उसके कान और नाक दोनों काट लिये जांयगे।

तब उस नककटे कनकटे को कहीं ठिकाना न रहेगा। खबरदार चौकस रहना "न होतव्यं न दातव्यम्" भूल के भी कोई ऐसे रास्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर न चले जिसमें स्वार्थ छोड़ परमार्थ की ओर झुक जाना पड़े। नहीं जानते महाराजा बेणु का कैसा उग्र शासन है शेर और बकरी एक घाट पानी पी रहे हैं। बड़े २ हेकड़ भी सब हेकड़ी भूल गये। प्रत्यक्ष छोड़ परोक्ष की चर्चा जो कोई करेगा उसका उच्छेद कर दिया जायगा। जो कुछ है प्रत्यक्ष है परोक्ष कुछ भी नहीं। और प्रत्यक्ष अपना स्वार्थ शरीर को हृष्ट पुष्ट रख चैन से दिन काटते हुये देहाराम में भी ही होना परम पुरुषार्थ है। ऋण हो जाय कुछ चिन्ता नहीं हलुआपूरी ज़रूर नित्य छाना करो। लोक सिद्ध प्रत्यक्ष देवता राजा ही परमेश्वर है। या इस नये परमेश्वर के देव दूत खुशामदी हां में हां मिलाने वाले सेकंडरी या दूसरे परमेश्वर हैं। स्वर्ग नरक पाप या पुण्य का फल कुछ नहीं है। मौत से आंख मूद जाना ही मोक्ष है। यह सृष्टि अनादि काल से चली आई है और चली जायगी इसका कर्ता धर्ता विधाता मानना राड़ों की गीत है। पूजा पाठ जप तप सब छोड़ राजा बेणु ही को "त्वमेव माता च पिता त्वमेव" मान भजा करो। हमारे राजा न्याय अन्याय जो कुछ करें सब न्याय है। उनके कर्मचारियों की सेवा टहल मुख्य धर्म है।

देखो सचेत रहो उनके दूत मलिकुल मौत से घर २ गली २ कूंचे २ फिरा करते हैं कोई ज़रा भी उनकी इन आज्ञाओं के विरुद्ध चलेगा दण्ड पावेगा एक-दो-तीन-और सुनो जो कुछ है सब राजा का है। पेट मात्र पाल लो अधिक हाथ न फैलाना सुख से जीवन पार करना चाहते हो तो हमारे महाराज के अनुकूल वर्तते रहो प्रतिकूल होने का साहस करोगे जेल में भेज दिये जाओगे वहां पड़े पड़े सड़ा करोगे या जलावतन कर दिये जाओगे। शास्त्र में लिखा है राजा ही परम गुरू है, परम-पूज्य है, सर्वश्रेष्ट है। सबों का सेव्य है, हम सब उसके सेवक हैं। सेवा करना अनादि काल से हमारे कपाल में लिख दिया गया है तब जो स्वंयं प्रभु बनने की चेष्टा करेगा वह जल्द जहन्नुम रसीदा होगा। एक दो तीन जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुण्ड के झुण्ड नागरिक

पहिला—भाई सुना है जब से हमने इस खबर को ।
होश गायब हो सिधारा आसमान को ॥
उस से कांप रहा है तन हमारा ।
कहो कैसे करेंगे यार अब हम सब गुज़ारा ॥
पर क्या चारा है ।

दूसरा—कोई चिन्ता नहीं हम आकर्षण मंत्र जानते हैं । नहीं तो न्यूटन के आकर्षण की ईजाद कब काम आवेगी जो आपके होश को लाके न हाज़िर करेगी । घबड़ाइये नहीं ।

तीसरा—भाई हमतो "राजा करै सो न्याय" वाली गीत गाते हैं। सर्व सधारण के लाभ को लात मारते हैं । जिस्से अपना स्वार्थ सधै सोई किया चाहते हैं। "स्वार्थभ्रन्शोहि मूर्खता" शान्तवृत्ति धरे जोश को पास नहीं फटकने देते हां में हां मिलने को बड़ी पण्डिताई और चतुराई मानते हैं । "कोउ नृप होहि हमैं का हानी चेरी छोड़ न होउब रानी" दासस्य दासस्यच दास दास हो सेवा वृत्ति ही हमारा मूल मंत्र पुरुखों से चला आया है । तब हम क्या इन बातों में पड़ व्यर्थ को सिर पचावें और मन दुखावें।

चौथा—शाबाश ! ग़ाज़ी मर्द शाबास ! (स्वगत) ऐसों को जन्म लेने की क्या जरूरत थी । देश के भिखारी न होने से क्या बिगड़ती थी ।

गान

हे वृन्दारक वृन्दबन्दित सकल शुभ की खान । करुणानिधान सुजान प्रभु तुम करहु सुमति प्रदान ।

सर्व विरुदावलि बिभूषित पतितपावन नाम पुण्य कीर्तन वेद वेदित ज्ञान । प्राणप्रद प्रणतार्तिभंजन श्री निकेत भगवान । द्रवहु दीन दयाल हमपर जानि निज सन्तान । ज्ञान से दुर्मति दहन की बुद्धि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपजी आन। करैं देश सुधार चेष्टा राखि अपनो मान।
सुमति देहु भगवान्, इनको सुमति देहु भगवान्॥

जे छूंछे ख़िताब को लोभि करैं जाति अपमान।
स्वारथ वश नित करैं खुशामद त्यागि देश अभिमान॥

हां जी हां जी ही को जानैं सुख को परम निधान।
मांगत मांगत जनम गवावैं करैं उपाय न आन॥

मेल मुहब्बत भाई चार सब को करिके पान।
पर देशिन के लै पालक बनि भारी करैं गुमान॥

जो पुरखन के पुन्य भाव ते दुरें कबौं भगवान।
पदवी पाप अनादरी ऐहैं ज्यों कूकर को कान॥

देशभक्ति महिमा के ऊपर धरैं न कबहूं ध्यान।
करि भारत अपमान कहावैं भारत के सन्तान॥

पांचवां—इस गान से प्राचीन आर्यों के उत्कट क्षात्र धर्म को याद हमारे चित्त को अत्यन्त क्षोभित करती है कि आज हम इस मर्म भेदी दशा में क्यों आ गये! अपने प्राचीन गौरव को क्यों भूल गये! हमारी इस दीन दशा का मुख्य कारण अपने रूप का भूल जाना है। जब तक इन्हें अपने रूप का ज्ञान था तब तक समस्त भूमण्डल की कोई जाति इनकी किसी बात में बराबरी नहीं कर सकती थी तो अब क्या उपाय हो कि इनमें फिर पुराना गुण गर्व आ समाय (थोड़ा ठहर) हां अच्छी सुध आई ऐसी संकीर्ण दशा में सदा से हमें ब्राह्मणों से सहायता बराबर मिलती रही इस समय भी सिवाय ऋषि समाज के दूसरा कोई समझ में नहीं आता कि इस विपत्ति से हमारा उद्धार करे या उद्धार का मार्ग दिखलावे तो उचित है हम सब लोग ऋषि समाज एकत्र करने का यत्न करैं आओ अब चलें (सब गये)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्जाब हिन्दू कानफ़रेन्स ।

हमारी समझ में पञ्जाब के हिन्दुओं ने अपने सुधार तथा अपनी उन्नति का यह बहुत ही उत्तम उपाय निकाला है—इतने दिनों तक प्रति वर्ष कानग्रेस कर समस्त भारत को गवर्नमेंट की नज़र में एक जाति या एक राष्ट्र प्रगट करने की हम व्यर्थ चेष्टा करते रहे और पण्डाल आदि की रचना में व्यर्थ कई लाख रूपया गवाय बैठे—यदि पहिले ही से समस्त भारत के हिन्दू मिल कर अपने को एक समूह प्रगट करने की चेष्टा करते तो अब तक बहुत दूर तक कृत कार्य हो जाते । अस्तु सूत्रपात तो इसका कानग्रेस के द्वारा हो ही चुका है सुबह का भूला सांझ को आने की भांति अब भी पञ्जाब की तरह एक २ प्रान्त के हिन्दू इसी भांति वर्ष में एक बार एकत्रित हो जाति संशोधन तथा अपनी राष्ट्रीय उन्नति का विचार किया करें तो देश का बड़ा उपकार हो—विशेष भलाई इस पञ्जाब कानफरेन्स की यह थी कि आर्य और सनातनी दोनों सहमत थे यहां तक कि लाहौर के देव समाज और ब्रह्म समाज वाले भी इसमें संमिलित थे । आसार तो देश की उन्नति के सब ठौर देखने में आ रहे हैं पर बहुत धीरे २ जब और २ देश वाले उछालें भर रहे हैं हम चिउटीं की चाल चलते हैं—अस्तु न कुछ करने से कुछ करते रहना फिर भी अच्छा ही है ।

हमारे नये सुशिक्षितों में परिवर्तन

इसे मुक्त कण्ठ हो स्वीकार करने में किसे संकोच होगा कि हमारे देश में अङ्गरेज़ी की तालीम ने बहुत फ़ायदा पहुंचाया है । सब से बड़ा उपकार यह हुआ कि जिन्होंने कुछ अङ्गरेज़ी पढ़ा नेत्र खुल गये अपनी बिगड़ी समाज के अनेक दोष उन्हें सूझने लगें । नेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के खुलतें ही कितनो को ऐसी चकाचौंधी आई कि उस चकाचौंध में उनका अजीब हाल हुआ। जिन्होंने मिशन स्कूल में शिक्षा पाई और पादरी साहबों के जाल में फस गये वे हिन्दुओं की हर एक बात धर्म, कर्म, रीति, रसम को निःसार समझ ईसाई हो गये। जिसके अनेक कारण हुये। बहाना उनके क्रिस्तान होने का यह था कि हमें सच्चा मुक्ति का मार्ग मिला पर इस मुक्ति मार्ग का सच्चा विश्वास तो सौ में किसी एक ही दो को हुआ अधिकतर धन कमाना, कामिनी की कामना और भोग लिप्सा में डग मगाये और अधिकांश तो इस लिये ईसाई हो गये कि समाज की अनेक तरह की क़ैद से बचेंगे। इसमें सन्देह नहीं इस क़ैद से छुटकारा पाना अनेक आध्यात्मिक तथा सामाजिक बातों के लिये बड़ा हानिकारक हुआ किन्तु हम कैसे स्वच्छन्द हों इसका अंकुर उसी समय से उनके जी में जमने लगा। पीछे यही स्वच्छन्दता राजकीय स्वच्छन्दता में परिणत होने लगी। प्रसंग प्राप्त ईसाई धर्म की आलोचना हमें यहां उचित जान पड़ता है। विचार कर देखो तो आध्यात्मिक उन्नति ईसाई धर्म में नाम मात्र को है। ईसाई मज़हब को फ़रोग़ पाने का सबब मज़हब वक्त हुक्मरां है। अगर यह State religion हमारे सामयिक राजा का धर्म न होता तो कभी यहां इसे कोई पूछता भी नहीं। Political basis राजकीय नीव पर जितना यह क़ायम है उतना आध्यात्मिक पर नहीं। और २ देशों में जहां कहीं ईसाई पहुंचे देश के देश को ईसाई कर डाला। यहां पादरी लोग सब तरह का स्वांग लाते हैं पर साल में कहीं एक दो भी ईसाई नहीं होते। इन पादरियों के भाग से यहां जल्द २ दुर्भिक्ष पड़ता है जिसमें सैकड़ों पेट की अग्नि के कारण ईसाई हो जाते हैं। बिलायत तथा अमेरिका की जुदी २ सोसाइटियों को जिनके धन से ये पादरी लोग गुलछर्रे उड़ाया करते हैं उन्हें अपनी काररवाई देखाने का अच्छा मौक़ा मिलता है। नये सुशिक्षित हिन्दू धर्म की बहुत सी बातों को Superstitiou. धर्माभास कह घिनाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। सच पूछो तो इसी धर्माभास में आध्यात्मिक भी समान हो रहा है। पानी में तेल की तरह अध्यात्म Spirituality ऊपर २ उतराता है जिससे चित्त पर धर्म का अङ्क अङ्कित हो रहा है। ऐसे समय में ईश्वरेच्छा से प्रत्येक प्रान्त में एक २ महा पुरुष पैदा होगए. जैसे यहां स्वामी दयानन्द, बङ्गाल में राजा राममोहन, महाराष्ट्र देश में तुकाराम, रामदास जी जिन्होंने लोगों को विधर्मी होने से रोक उनकी रूचि के माफ़िक धर्म चलाय उन्हें हिन्दू क़ायम रक्खा। हमारे सुशिक्षित अब तक बाहरी सभ्यता और फैशनपरस्ती को अपने जीवन का सार समझते थे। पश्चिमी शिक्षा के प्रचार ने उन्हें बहुतेरे बुरे २ कुसंस्कार और मन की बहुत सी कचाहट से अलग कर दिया। आदि में तो इन सुशिक्षितों की यही झुकावट थी कि हम कैसे झट पट साहब बन जांय पर अब उसमें बड़ा परिवर्तन हो गया है। पश्चिमी बेश, खाना लिबास और रहन सहन आदि में जैसा पहिले उनका अनुराग था वैसा अब नहीं देखा जाता बहुधा उससे उलटा इस समय पाया जाता है। विदेशी से घिन और स्वदेशी पर प्रीति जो मातृ भूमि के परम कल्याण का हेतु है तरक्की पर है। अधिकतर इसी पर इनकी लौ लगी है कि अपने देश का प्रबन्ध हम अपने आप क्यों न करें कांग्रेस और कान्फ़रेन्स सब इसी लिये किये जाते हैं जिसमें सरकार को यह मालूम हो जाय कि हम इस योग्य हैं किन्तु उस प्रबन्ध में इनकी पूंछ नहीं होती वरन् ये अयोग्य ठहराये जाते हैं इसी पर ये दुखी और लज्जित हो अनेक उपाय और चेष्टायें करते हैं पर उन सबों में हतोत्साह किये जाते हैं। पिंजरे में पड़े पखेरू के समान फड़फड़ा के रह जाते हैं। जेल और कालापानी तथा प्राण वियोग तक सहने को तैयार हैं पर स्वतंत्र होने का नशा जो चढ़ गया है नहीं उतरता। गवर्नमेण्ट को उचित है मुल्की इन्तिज़ामों में इन्हें वैसा ही नियत करे जैसा गोरे रंग वालों को करती है। इस रंग के फ़र्क को बिल्कुल उठा दे और इन्हें भी वैसा ही विश्वासपात्र समझै जैसा गोरे रंग वालों को समझती है। जहां कहीं विश्वास पात्र किसी ऊंचे पद पर ये नियत हुयेहैं वहां इनकी योग्यता किसी अंश में कम नहीं रही। सभ्य जाति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये यह बड़े ही लज्जा की बात है कि अपने मुल्क का इन्तज़ाम वे न कर सकैं। जो कुछ कानून या क़ाइदा बने उस में इनकी राय न ली जाय कभी राय भी ली जाय तो बराय नाम को। इनका भीतरी हाल बिना जाने विदेशी लोग अपने मन से जैसा चाहैं वैसा क़ानून गढ़ दिया करते हैं। उन पर चलना इन का कर्तव्य हो जाता है। कोई कानून जान बूझ इतने कड़े कर दिये गये हैं जिन पर चलना मानो तलवार की धार को जीभ से चाटना है। क़ानून गढ़ने वाले जहां तक हो सका बहुधा अपना बचाव उन में रखने से नहीं चूके हम लोगों पर रियायत कम की गई है शासक और शासित का भाव उन में सब ओर से उपर उतरा रहा है और यही हम लोगों को अखरता है। विलायत के थोड़े से इनसाफ़ पसन्द लोगों को इसतरह का बर्ताव नहीं रुचता पर उन की कुछ नहीं चलती "समुदाये शक्ति" के अनुसार जिस पर सब लोगों का एक मत्य रहा वही पास कर दिया जाता है। शिक्षा एक तरह पर हमारे में नव जीवन का दान देरही है। एक ओर नई २ उमंगैं दूसरी ओर दरिद्रता के कारण नैराश्य, एक ओर ज्ञान की वृद्धि के कारण चिरकाल से बद्ध मूलक संस्कारों का परि वर्तन तथा उनका मूलोच्छेदन दूसरी ओर धर्म पर अटल विश्वास के कारण प्ररिवर्तन विमुखता Conservatism एक ओर मातृ भूमि के प्रेम का उद्गार-रूप स्वदेशी दूसरी ओर चित्त की कचाहट से अकर्मण्यता अनुद्यम स्वार्थहानि और फेशन परस्ती में कमी इत्यादि दोनों आपस में द्वन्द्व युद्ध सा करते हुये मानो एक दूसरे से टक्कर खा रहे हैं॥ इस दशा में हमारे देश का भावी परिणाम क्या हो यह अब सुस्पष्ट नहीं है किन्तु हमारा बनना निःसन्देह हमारे शासन कर्ताओं पर उपरान्त इन सुशिक्षितों पर निर्भर है। शासन कर्ता यदि उदार भाव से हमारा शासन करते रहैं जिस में इन सुशिक्षित युवकों को सन्तोष होता रहै ये युवक जन भी उद्धत भाव त्याग अपनी शिक्षा का प्रतिफल प्रगट कर अच्छी तरह शान्ति के साथ दिखलाते रहें तो जल्द हमारी भावी भलाई में कोई सन्देह बाकी न रहै। इन दोनो मैं एक भी परस्पर प्रतिकूल रहे तो हमारे बनने की बहुत कम आशा रह जायगी। इसीसे कहा जाता है कि हमारे युवकों में परिवर्तन हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD. NO. A. 305.

९६ गङ्गादास के चौक इलाहाबाद में सुन्दरलाल के प्रबन्ध से छप कर प्रकाशित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री

वन्देमातरम्

हिन्दी प्रदीप

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजनीति इत्यादि के विषय

में

हर महीने की अमावस्या को प्रयाग से निकलता है ।

शुभ सरस देश सनेह पुरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

सम्पादक—पं० बालकृष्ण भट्ट

जि० ३१ { अगहन बदी अमावस्या रविवार सम्वत् तीन } सं० २

विषय सूची ।

१-हमारे तीन गुरु ... १
२-पृथु चरित्र नाटक ... ४
३-सिण्टो मारले रिफ़ार्म और हिन्दूमाडरेट ... १०
४-कालचक्र १८
५-निवृत्ति २१
६-देश में पशुओं की क्षीणता २३
७-हमारी गवर्नमेंण्ट फिर भूलगई २३
८-युधिष्ठिर को द्रौपदी का प्रोत्साहित करना (कविता) २४
१०-महाराष्ट्र इतिहास की थर्मौपिली २७
११-कविता ३३
१२-हैम्पडन ३४
१३-पृथिवी की अन्य जातियां हमे क्या समझती हैं ... ३८
१५-प्रार्थ[illegible] ... ३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोटिस।

जिन सज्जनों के पास यह अङ्क बतौर नमूने के भेजा जा रहा है उन्होंने यदि अगले अङ्क के निकलने तक कोई उत्तर न दिया तो समझा जावेगा कि वे ग्राहक हनेना स्वीकार करते हैं और "हिन्दीप्रदीप" का अगला अङ्क उनकी सेवा में वी० पी० द्वारा भेजा जावेगा, हमको पूर्ण आशा है कि वे लोग वी० पी को स्वीकार कर बाधित करेंगे।

मैनेजर—"हिन्दीप्रदीप"

हिन्दीप्रदीप का

मूल्य १ साल का डाकव्यय सहित साधारण लोगों से २॥)

परन्तु हिन्दी प्रदीप के ३० वें वर्ष के ग्राहकों से इस वर्ष के लिये केवल २) लिया जावेगा।

राजा महाराजा और तालुक़ेदारों से ५)

सरकार अंगरेज़ी, सर [illegible] अफ़सरों तथा दफ़्तरों से २५)

एक [illegible] का मूल्य ।)

मिलने का पता:-

मैनेजर—"हिन्दीप्रदीप"

प्रयाग पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

जि० ३१ { अगहन बदी अमावस्या रविवार सम्वत् १९६६ } सं० २

हमारे तीन गुरू

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस देश या जाति ने उन्नति की उसकी तीन बात लगातार उन्नति के सोपान पर चढ़ती गईं। धर्म, समाज और राष्ट्रीय परिज्ञान। इन तीनों के हमारे तीन गुरू भी माने गये हैं। धार्मिक सम्बन्ध में ब्राह्मण सदा से हमारे गुरू रहे, सामाजिक मामलों में ५० के ऊपर वाले हमारे बड़े लोग और राष्ट्रीय परिज्ञान मे सामयिक शासन कर्त्ता। घुणाक्षर न्याय के अनुसार अब भी इनमें कोई २ ऐसे निकल आये हैं जिन्हें भूल जाना मानो कृतघ्नता और महा पाप है और जो अवश्यमेव हम लोगों से प्रतिष्ठा पाने के योग्य हैं। पर ऐसों की गिनती इतनी कम है कि अंगुलियों पर गिनी जा सकती है। नहीं तो वास्तव में ये गुरू हमारी तरक्की में विघ्न डालने वाले अड़चन के रूप में हो रहे हैं। जैसा धार्मिक बातों का ठीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणों ने ले रक्खा है और ऐसे २ जाल रच डाले कि कभी सम्भव नहीं कि हम उस जाल में पड़े रह कभी भी उन्नति कर सकें। हिन्दू धर्म का जो मर्म है वह इनके जाल में छिप रहा है। सच्चा शुद्ध सात्विक धर्म क्या है उसे ब्राह्मणों की स्वार्थ मूलक पालिसी से अलग करना टेढ़ी खीर है। धर्म का मर्म क्या है वे स्वयं नहीं जानते तो प्रजा को क्या बतलावें तब सिद्ध हुआ कि जिस धर्म पर हम चल रहे हैं वह धर्म के आभास में अधर्म है। नहीं तो कभी सम्भव न था कि हिन्दू जाति इतनी धर्म भीरु हो दास्य भाव की शृंखला में जकड़ी रहती। इससे तो यही निष्कर्ष निकला कि जिसे हम अधर्म मानते हैं और डर रहे हैं कि ऐसा करने से कहीं धर्म न चला जाय उसे ही धर्म कहना उचित जान पड़ता है और जिसे हम धर्म मान पकड़े बैठे हैं वही महा अधर्म है और हमारी तरक्की का बड़ा बाधक है।

अब हम अपने दूसरे गुरुओं की समालोचना करते हैं जिनकी भूल का परिणाम हम भोग रहे हैं। इनके मत से लकीर के फ़क़ीर बन पुरानी लीक पीटते रहना ही सपूती है। ज़रा आज़ादगी को चित्त में स्थान दे उस लकीर से विचलित हुआ कि गया। समाज में उसे पांव रखने का ठांव दुर्घट है। समाज में जो कुछ चल पड़ा है उसके कभी सुधारने का हौसला अब तक जिस २ ने किया कोई कृतकार्य्य न हुये वरन बहुत तरह की हानि उठाय ठंढे पड़ गये। जिस ढंग पर हमारी समाज अब तक ढुलकती रही जब तक हम उसी का अनुसरण करते चले जायगे तब तक हम कभी उन्नति न करेंगे। स्वराज्य स्वराज्य हम चिल्लाते भले ही रहैं किन्तु जो ढंग हमारी समाज का है उससे तो स्वराज्य कोसों दूर है। तब इसे स्वीकार करने में क्या बुराई है कि ये पलित केश जो सामाजिक शिक्षा में हमारे गुरू बनते हैं हमारी उन्नति में विघ्न डालने वाले अड़चन के रूप में हो रहे हैं। वे नहीं चाहते कि हम उनके चंगुल से बाहर हों और उन के चंगुल से बिना बाहर हुये हम कुछ कर नहीं सकते तब लाचारी उन्हें दूर से प्रणाम कर अपने मन की करना ही पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तीसरे गुरुओं के सम्बन्ध में भी यहां पर विचार करना आवश्यक जान पड़ता है जिन्होंने उदार भाव के साथ देश में शिक्षा का प्रचार कर हमारे नेत्र खोल दिये। अपनी हानि और लाभ हम भर-पूर समझने लग गये । राष्ट्रीय विषयों का भी परिज्ञान हमें होते चला । वर्त्तमान शासन प्रणाली किस २ अंश में कहां २ हमारे अनुकूल नहीं है सो भी समझ में आने लगा । शिक्षित लोग अब इस प्रयत्न में प्रवृत्त हैं कि हमारी उन्नति अब किस भांत हो । हमारे देशी भाई जो पड़े सो रहे हैं कैसे जागें । इनमें स्मरण शक्ति कैसे आवे कि ये अपने को पहिचानें, अपने स्वरूप का ज्ञान इन्हें हो । Energy रत्व या बल इनमें कैसे आवे । हमारी निर्धनता कैसे दूर हो । देश धन, धान्य से एक बार फिर कैसे भर उठे । गोरस की क्षीणता कैसे मिटै । ब्राह्मणों का शूद्रत्व दूर हो ब्रह्मवर्चस, क्षत्रियों में बाहुबल और क्षात्र धर्म कैसे फिर नया हो । वैश्यों में पहिले का सा बाणिज्य कौशल कैसे आवे । यहां के रोज़गारी पूर्ववत् कुबेर सदृश धन सम्पति के आगार फिर कैसे हो जांय इत्यादि २ । पर यह सब तभी होगा जब जापानियों की तरह यहां भी एक २ आदमी में देश प्रेम का अंकुर दृढ़तर हो और राष्ट्रीयता का भाव मन में स्थान पावे । किन्तु हमारे शासकों में कोई २ ऐसे हैं जिन्हें इष्ट है कि बहुधा राष्ट्रीयता का मर्म हम से वैसा ही छिपाया जावे जैसा ब्राह्मण धर्म के मर्म को गोप्य किये हैं। जागृति का बीज जो देश में बो गया है अवश्य फब-केगा जितनी देर होती जाती है उतनी ही पुष्टता उसमें पड़ती जाती है । गाढ़ निद्रा के उपरान्त चितावनी बड़े चैन की आती है । यद्यपि हमको अपने पैरों खड़े होने में अनेक बाधायें हैं किन्तु शान्ति के साथ हमें अपना काम करते जाना चाहिये उफनाने से कुछ न होगा । भगवान् कृष्णचन्द्र का वाक्य है "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" तो निश्चय हुआ दूसरों को दोष देना भूल है अपनी तरक्की के अड़चन हम आप हैं । ईश्वर पर दृढ़ विश्वास और दृढ़ अध्यवसाय ही इस अड़चन महाव्याधि की सिद्धौषधि है । इस अड़चन को हटाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साधन भी हैं स्वार्थ का अभाव अपने स्वरूप का ज्ञान और परस्पर का ऐक्य जिसे हम आगे के अङ्क के लिये छोड़ रखते हैं।

पृथु चरित्र नाटक

——:o:——

(गताङ्क से आगे)

[हाव भाव युक्त एक तरुणी का प्रवेश]

तरुणी—लोग कदाचित मुझे न जानते होंगे कि मैं कौन हूं– मेरा सुग्रहीत नाम कुप्रवृत्ति है। ये निपूती के निगोड़े नाहक़ हमारे राजा को बदनाम किये हैं। कहावत है "नाच न आवै आंगन टेढ़ा" अपने को तो इतना ज्ञान नहीं कि जान सकें भला क्या बुरा क्या, उचित क्या अनुचित क्या, हित क्या अनहित क्या। बदनाम अलबत्ता किये हैं कि राजा वेणु अविवेकी, अत्याचारी और प्रजा पीड़क है। सच तो यह है कि ऐसा सुख न पहिले कभी रहा न आगे होगा सब लोग सब भांत आज़ाद और स्वतन्त्र हैं किसी को किसी बात की रोक टोक हई नहीं। जिसका जो जी चाहै कर गुज़रे कोई मना करने वाला नहीं। यहां तक तो है कि सभ्यता की इस नई चलन में बेटा बाप को मूर्ख और गँवार कहता है So wise we born we call our fathers fools इसके आगे आप जानते ही होंगे। इस महा स्वतन्त्रता का मूल वाक्य भी लोगों ने सुनाही होगा "न मांस भक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने प्रवृत्ति रेषा भूतानाम्"। "न मांस खाने में दोष है न मद्य में न मैथुन में। यह तो जीव मात्र की दुर्वृत्ति है" पर इस वचन की कारवाई ठीक २ इसी समय हुई। हमारे महाराज के राज में चरिन्द और परिन्द में कोई न बच रहा जो काम में न लाया जाय। कहा भी है "जीवहि जीव अधार" तब इसमें पाप और दोष क्या। मद्य का तो कहना ही क्या घर २ अमृत सरीखी धारा बह रही है (मचलती हुई) "पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा पतित्वा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरणी तले । उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते" ॥ क्या सुगम उपाय मुक्त हो पुनर्जन्म न लेने का निकाला है मुक्ति का मार्ग सुझाने में कहीं से कसर न रही । ऐसा ही नर नारी दोनों अपनी २ ओर से स्वतंत्र हैं । जब जिसका जी चाहे उतने समय के लिये वह किसी की ब्याही को गाड़ी पर चढ़ाय जहां चाहे डोलता फिरे इसमें बिगड़ा क्या है ! परदा २ चिल्लाने वालों से कहो बैठे २ सिर धुनें उन्हें क्या मालूम कि यह सभ्यता और आज़ादगी का ज़माना है और आने वाला है ।

ज़माना आ लगा आज़ादगी का, चहो सो कर लो भैया अपने जी का।
रखैं छोटे अदब अब मत बड़ों का, करैं भाया हुआ बस अपने ही का ।
उड़ावैं पाव रोटी अब खुशी से, न देखैं रास्ता हरगिज़ किसी का ।
बनैं साहब पहन कर कोट पतलूं, मज़ा इसमें बड़ा है ज़िन्दगी का ।
करें भोजन मज़े से होटलों में, मज़ा चख ले बेरायडी और टी का ।
मटन बिसकुट औ ह्विस्की भी उड़ाये, नहीं इसमें इजारा है किसी का ।
जो डूबी नाम पुरखों का तो डूबे, भला क्या ज़िक्र है नेकी बदी का ।
सदा जोरू को अपने साथ रख कर, मिटा दे नाम अब सीता सती का ।
हवा पछियांव जब से चल पड़ी है, नक़लची भाइयों की बन पड़ी है ।
जो अन्धे आंख के गांठों के पूरे, लगे उड़ने बिना पर के लंडूरे ।
हवा ने रंग अपना है जमाया, लगे करने वही जो जी समाया ।
नहीं दिल में किसी का डर है इनके, बड़ों को हैं समझते मिस्ल तिनके।
हैं कोरे अक़्ल के वे दुम के टट्टू, हुये ऐसे नये फ़ैशन के पै लट्टू ।
समय यह खूब आया सभ्यता का, खिला गुल हिन्द में आवारगी का ।

मैं भी तभी खुलके टांग पसारूंगी अभी तो मैं नाम मात्र की हूं मेरा पूर्ण प्रकाश तभी होगा जब सभ्यता की चाशनी में पग लोग परम स्वतंत्र बन बैठेंगे उस समय मेरा क्या रूप होगा उसे मैंने भविष्य वाणी की तरह कह सुनाया । महाराज की आज्ञा हुई कि हमारे शासन के मूल सूत्रों को जो नहीं समझे हुये हैं उन्हे तू जा सुना इसी लिये आई हूं और अब जाती हूं । (प्रस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा गर्भाङ्क

(स्थान तपोबन)

(गाते हुये दो ऋषिकुमारों का प्रवेश)

तरू तालीस तमाल ताल हिन्ताल मनोहर।
मंजुल वंजुल तिलक लकुच कुल नारिकेर वर॥
एला ललित लवंग संग पूगीफल सोहै।
सारी शुक कुल कलित चित्त कोकिल अलि मोहै॥
धन्य सुखद आश्रम पवित्र जहं ऋषि जन संचारी।
विमल नदी सुभग झील विकसित सित कमल नील॥
जहं निवास करत मनुज होत धर्म धारी॥ धन्य०॥
झरनन ते स्त्रवत नीर, मृगमद युत मृदु समीर॥
मन्द मन्द जबहि बहत सकल शोक हारी॥ धन्य०॥
परवत ढिग हरित कुंज शोभा सुख कान्ति पुञ्ज।
बैठे कोकिल मयूर मधुर धुन उचारी॥ धन्य०॥
सुखासीन ऋषि स्वतंत्र गान करत वेद मंत्र।
यज्ञ धूम की सुबास दिशन स्वच्छ कारी॥ धन्य०॥

आहा! इस तपोवन की अकथ कहानी है। यहां के आश्रमों के वर्णन में कवियों का वाक् बिभव भी चुक जाता है तब साधारण जन की कौन कहे।

कहुं द्विज गण मिलि सुख श्रुति पढ़हीं।
कहुं हरि हरि हर हर रट रटहीं॥
कहुं मृग शिशु मृगपति पय पियहीं।
कहुं मुनि गण चितवत हरि हिय हीं॥
जहां मलिनता हविर्धूम महं, नहि चरित्र महं।
प्रेम जहां है हरि कीर्तन महं, नहिं कलत्र महं॥
गर्व जहां है निज गुण गौरव को नहि संपत को।
प्रणय कलह जहं शुकसारी को नहिं दंपत को॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल चटुल चकोर चंचु पुट चर्वित चारु पलास ।
कोकिल कूजित कुंज कुटीरे कुन्तित पथिक बधू जन आस ॥
इत्यादि इस आश्रम के गुण गान का ओर छोर नहीं ।

दूसरा ऋषिकुमार—सच कहते हो मित्र पतित पावन यह तपोवन ऐसा ही चित्र विचित्र है ।

कहूं विप्र पूजा कहूं देव अर्चा, कहूं योग शिक्षा कहूं वेद चर्चा ।
कहूं साधु पौराण की गाथ गावैं, कहूं यज्ञ की शुभ्र शाला बनावैं ।
कहूं होम मंत्रादि के धर्म धारैं, कहूं बैठि के ब्रह्म विद्या विचारैं ।

होम का धुआं आश्रम की पताका सा आकाश मण्डल में छाया हुआ आगन्तुक पाहुनों को आतिथ्य सत्कार के लिये मानों बुला रहा है । कुटियों के चारो ओर मृग बधू घूम २ अपने २ छवनों को दूध पिलाती हुई परिचित ऋषि पत्नियों की ओर पुआल का चारा पाने को ताक रही हैं आश्रम में प्रवेश करते ही ऐसी अद्भुत शान्ति का संचार मन में होता है कि शब्द के द्वारा जिसे प्रगट करना असंभव सा है तिर्यक् योनि पशु पक्षी जहां स्वाभाविक वैर छोड़ बैठे हैं । देखो यह मुग्ध मृग बालक निज जननी के भ्रम से बाघिनी का दूध पीरहा है । मित्र यह आश्रम क्या है ऐसी २ अद्भुत घटनाओं का घर है । (दूर पर आगे देख) कमल नयन आजानु बाहु कम्बुकण्ठ यह बालक समान बयके बहुत बालकों को साथ लिये इधर ही आ रहा है । यह तो कोई होनहार बालक जान पड़ता है ।

पहिला ऋषि कुमार—भाई हम भी इसे नहीं जानते चलो आश्रम के अधिष्ठातृ देवता सदृश मुनिराज भृगु से चल के पूछैं ।

(दोनों गये)

(गाते हुये बालकों का प्रवेश)

प्रणतारति भंजन खलदल गंजन । देवकी नन्दन पाहि हरे ॥
कंसासुर सूदन जित खरदूषण यदुकुल भूषण चक्र धरे ।
सन्त सुखाकर सब गुन आगर करुणा सागर धनुष धरे ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप क्षय कर दीन दया वर जै नट नागर दैत्य दरे।
दनुज दवानल दितिज विदारक त्रिभुवन पालक देवनुते॥
उपरि धृत मन्दर जित दशकन्धर जानकि जानि नमोस्तुते।
भव भय नाशय बुद्धि विकाशय सत्व प्रकाशय विमल मते॥
तृष्णा तरु खण्डय निज जन रंजय पातक भंजय जगत् पते॥

पहिला बालक—गार्ग्य! गुरू जी ने कल देश काल विभाग समझाया था समझे?

गार्ग्य—हां! हां!! समझा क्यों नहीं। क्या तुम्ही पढ़ कर समझने वाले हो! अरे देश बना है दिश् धातु से जाना। दिश अतिसर्जने अतिसर्जनम् दानम् समझे। अति सर्जन दान को कहते हैं "षट् कर्मा भवेद्विप्रः" मनुस्मृति में पढ़ चुके हैं। ब्राह्मण का छै काम पढ़ना पढ़ाना दान लेना इत्यादि। तो देश के अर्थ भये कैसा ही खज्ज अखज्ज कड़े से कड़ा दान हो ब्राह्मण लैले और काल के अर्थ पुण्य काल इस पर्व में इस समय से इस समय तक पुण्य काल है। दाता उसमें दान देने से सीधा स्वर्ग सिधार जाता है समझे! अब इसके आगे कपिष्ठल कहैं क्या समझा!

कपिष्ठल—तुम्ही बड़े समझने वाले हो हम ने क्या कौड़ी दैके पढ़ा है! गुरू की सेवा नहीं किया बुद्धि विभव में तुम से कुछ हेठे हैं! विभाग में उपसर्ग है और भज के अर्थ सेवा के हैं। तब क्या "सेवा दानं च निष्फलम्" सेवा टहल कराय जिसने कभी गरीब समझ कुछ दे दिया तो उसका देना निष्फल है। क्यों ठीक है न? शब्द के तात्पर्यार्थ और बात के मर्म तक पहुंचना सहज नहीं यह हमारी पैनी बुद्धि का काम है।

काश्यप—नहीं! नहीं!! तुम दोनों ने कुछ नहीं समझा भ्रम में पड़े हुये मर्म तक नहीं पहुंचे दिशा जानते हो दिशा क्या है। यही पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन तब जिस दिशा में जो रहता हो वही उसका देश और काल के अर्थ भूत, भविष्य, वर्त्तमान गुरू जी ने कल हमें मिठाई दी थी जानते हो यह क्या है भूतकाल है भूत-तुम लोगों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पाया पछता रहे हो यह क्या हुआ वर्तमान, जाना। पछता रहे हो और मन में सोचते हो कि हम भी अब सन्ध्या भली भांत याद कर सुनावें तो मिठाई पावें। यह क्या हुआ भविष्य। पर समझे रहो तुम कभी न पावोगे क्या सबी काश्यप से प्रखर बुद्धि के हैं। मिठाई पाया था तुम्हें भी दे देते विभाग हो जाता।

धौम्य—नहीं नहीं यह भी ठीक नहीं है। देश काल विभाग का प्रयोजन ही कुछ और है। देश के अर्थ स्वदेश, पुण्यभूमि, तपोभूमि जहाँ हम लोग निवास करते हैं। काल से प्रयोजन उचित काल जिस समय जो काम करना उचित हो। यह नहीं कि सवेरे का काम सांझ को करने लग जांय प्रातः सन्ध्या सांझ को करें और सांझ की सवेरे। विभाग का अर्थ बांटना। गुरू जी ने जिसे जो काम बांट दिया वह वही करे, तुम लोगों को गोचारण का काम सौंपा है तुम वही करो, हमें होम के लिये बन से लकड़ी लाने को कहा है हम जाते है लकड़ी लाने।

पहिला बालक—नहीं नहीं! तुम लोगों में किसी ने इसके अर्थ को नहीं जाना, यह राजनैतिक विषय है, समझावें सब समझोगे। जो अपने देश का शासन अपने आप किया चाहता हो उसके लिये आवश्यक है कि देश और काल के विभाग को अच्छी तरह समझे। यह तो शासन का मानो प्रथम सूत्र है। देश काल को बिना समझे हम कोई काम कर उठावें कभी कृतकार्य न हों पीछे हाथ मल पछताना ही शेष रहे। देश काल विभाग इन तीन शब्दों पर ग्रन्थ के ग्रन्थ राजनीति के लिखे गये हैं। पेड़ा छील २ खाते २ तुम लोगों की बुद्धि पेटारे में बन्द हो गई, जल्दी समझ में न आवेगा। अब चलो इस समय खेलें गुरु जी ने आज शिष्टानध्याय माना है। कुछ शिष्ट जन आज उनसे मिलने आये हैं।

(सब गये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Minto-Morley Reform and Hindu Moderates

मिण्टो-मारले रिफ़ार्म और हिन्दू माडरेटस्।

रिफ़ार्म ! रिफ़ार्म !! रिफ़ार्म !!! जिस के आगमन का डङ्का लग भग तीन साल से हिन्दुस्तान में बज रहा था, आ पहुंचा। जिस प्रकार अरेबिया (Arabia) के उजाड़ बन में दयालु परमात्मा ने भूखे इसराईलज़ (Israelites) को Manna (मैना-रोटी) बरसा कर उनको सन्तुष्ट किया था उसी प्रकार हिन्दुस्तान भी आशा किये था कि मारले महात्मा भी रिफ़ार्म बरसा कर उसकी राजनैतिक क्षुधा (Political aspirations) को सन्तुष्ट करेंगे, परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि सब आशायें नष्ट हो गईं। (Manna) मैना शब्द हीबरु, Hebrew भाषा के दो शब्दों से बना है मैन तथा हू, जिसके अर्थ "यह क्या है ?" जिस समय इसराईलजाति ने परमात्मा की दयालुता को लेकर "यह क्या है ?" शब्द मुंह से निकाले तत्क्षण उनको मालूम हुआ कि यह रोटी है। परन्तु जब हिन्दुस्तानी देश भक्तोंने रिफ़ार्म के क़ायदों और उनके भीतरीभावों को देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि जो रोटी कह के दिया जाता है वह पत्थर है। इस बात की पीड़ा ख़ास कर उन हिन्दू माडरेटों को हो रही है जिन्होंने इसके आगमन का डङ्का बजाने में बहुत कुछ भाग लिया था। पहिली अप्रतिष्ठा तो उनकी तभी हुई जब मुसलमानों को पृथक अपने प्रतिनिधि चुनने का हक़ मिला। हिन्दुओं की इस अप्रतिष्ठा से और पृथक हक़ मिलने से मुसलमानों को एक रत्ती भर फ़ायदा नहीं है क्योंकि जब दोनों जाति एक ही क़ानून और सरकार के अधीन हैं तो क्यों कर कोई क़ानून दोनों जातियों की भलाई बुराई पर असर न डालेगा। पर जो हो मुसलमानों की बात तो रख ली गई और हिन्दुओं को अप्रतिष्ठा सहनी पड़ी। जिन लोगों का यह विश्वास है कि अङ्गरेज़ी राज्य में इन दो जातियों में दिन पर दिन मेल बढ़ रहा है उनका यह विश्वास सर्वथा ग़लत है। हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानों को एक करने का प्रश्न (Hindu-Muhammeden problem) दिन पर दिन अधिक भयानक और गम्भीर होता जाता है और यह रिफ़ार्म अपनी कुटिल नीति से जलती आग में और भी घृत डाल रहा है। यदि कोई व्यक्ति लेख द्वारा दो जातियों के ऐक्य को भङ्ग करे तो सरकार उस को फ़ौरन् फ़ौजदारी सुपुर्द कर सज़ा देती है पर जब सरकार ही उसी दोष की भागी होती है तो कौन उसको कहे। आज कोई बर्क (Burke) भी तो विलायत में नहीं है जो किसी शासन कर्त्ता को दोषी (Impeach) प्रमाण करने को खड़ा हो। इससे यह न समझा जाय कि मुसलमानों को हक़ पृथक मिलने से राष्ट्रीय पक्ष वाले हिन्दुओं को—हम माडरेटों की नहीं कह सकते—कुछ भी बुरा लगा हो वरन् इस बात को सोच कर कुछ आनन्द ही मिलता है कि क्रमशः मुसलमानों को यह बात अच्छी तरह मालूम हो जायगी कि सरकार किस राजनीति से उन पर राज्य करती है क्योंकि वे हिन्दुओं से उनका पुराना अनुभव नहीं लेना चाहते जिसमें ठीक नैराश्य है। जब तक बालक आग से हाथ नहीं जला लेता तब तक कितना ही समझाने से भी आग को पकड़ने दौड़ता है। भोली हिन्दू जाति इस अप्रतिष्ठा को सहने को भी तैयार थी क्योंकि जो जाति १००० वर्ष से अप्रतिष्ठा सह रही है उसमें (Sensitiveness) अपमान असहन की चेतना कब तक रह सकती है, यदि मारले महाशय कुछ भी सच्चे हक़ प्रजा को देते। नया राष्ट्रीय पक्ष तो पहिले ही से कह रहा था कि सच्चा राजनैतिक हक़ दुनिया की किसी भी प्रजा को कभी दिया नहीं गया है वरन् प्रजा ने उनको हमेशा अपनी योग्यता सिद्ध करके लिया है। इसलिये इस ऐतिहासिक सिद्धान्त से सेल्फ़ गवर्नमेंट दान में मिलना सर्वथा असम्भव है किन्तु माडरेट भाई कब विश्वास करने लगे। परन्तु अब वे ही इस रिफ़ार्म को नक़ली बतलाते हैं और कह रहे हैं कि धोखा हो गया। सच्चे माडरेट देशभक्त सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी अपने बङ्गाली पत्र में रिफ़ार्म की बाबत यों लिखते हैं—

"All that we can say is that they have created a sense of painful disappointment...........The spirit of the Regulations is thoroughly retrograde."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रिफ़ार्म के नियमों की बाबत हम यही कह सकते हैं कि इनसे दुःखदाई नैराश्य का भाव चित्त में पैदा होता है। इन नियमों का पूरा आशय भलाई से बुराई की तरफ़ अर्थात पीछे हटाने का ही है"—बाबू जी का कथन अक्षर अक्षर सत्य है। रिफ़ार्म के नियमों को पढ़ कर कौन सच्चा देश भक्त आशा कर सकता है कि वह भी कभी बड़े लाट वा प्रान्तीय लाट के सभा भवन में घुस सकता है। सभा भवन में जाने की बहुत सी बाधाओं मे एक बाधा जिसके द्वारा सरकार ने बड़ी चालाकी के साथ सच्चे देश भक्त को भीतर आने से रोक दिया है वह यह है—

"No person shall be eligible for election as a member of the council if such person has been declared by the Governor General to be of such reputation and anticidents that his election would in the opinion of the Governor General, in Council, be contrary to the public interest."

सारांश यह है कि वह मनुष्य जिसका पिछला काम और नाम इस प्रकार का हो कि लाठ साहब उस का चुना जाना सर्वसाधारण की भलाई के विरुद्ध समझते हों तो वह मेंबर नहीं चुना जा सकेगा। नये दल वालों के लिये तो यह खुल्लम खुल्ला रोक है। लाजपत, अरविन्द, तिलक, अश्वनी इत्यादि देशभक्तों को तो सरकार ने यों निकाला। सुरेन्द्र बाबू भी छुड़ाये हुये सरकारी कर्मचारी हैं इस लिये ऐसे माडरेट भी नहीं जा सकते। अब बचे दूसरे माडरेट उनको भी यह बाधा पहिले से चेताती है कि अपने नाम और काम पर होशियार न रहोगे अर्थात ज़रा से भी नेशनलिस्ट हुये कि सभा भवन का दरवाज़ा तुम्हारे वास्ते भी बंद। इंगलैण्ड इत्यादि स्वतंत्र देशों में जब कोई मेम्बर अपनी राय पर गवर्मेंट को लाने से सभा भवन में हरा दिया जाता है तो वह अपने देश भाइयों के बीच बाहर देश में हल चल मचा कर लोगों की राय अपनी ओर खींचता है और उसका इस तरह से हलचल मचाना सरकार बुरा नहीं समझती न उसके काम वा नाम में कुछ भी धब्बा लगने का डर रहता है, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां से नहीं है। सच है और देशभक्त और खुशामदी दरबारी एक साथ कहां बिना तकरार पैदा किये बैठ सकते हैं अंगरेज़ी कवि काउपर (Cowper) ने इस विषय पर एक अति उत्तम पद्य यों लिखा है:—

"Courtier and Patriot cannot mix
Their heterogeneous Politics
Without an effervescence"

"दरबारी और देशभक्त अपने बे मेल राजनैतिक सिद्धान्तों को बिना घट बढ़ किये नहीं मिल सकते" इसी गड़बड़ी और आन्दोलन को दूर हटाने के लिये शासन कर्त्ताओं ने यह बाधा डाली है। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। और यह बात भी तो है कि सभा भवन की इज़्ज़त घट जायगी यदि ऐसे मनुष्य सभा में रहेंगे।

यह ऊपर लिखी बाधा केवल मेम्बरों ही को डांट में अपनी राय पर नहीं रक्खे है वरन् देश में सीमा बद्ध राजनैतिक आन्दोलन को भी रोक रही है क्योंकि हमारे थोड़े से माडरेट भाई जो इस समय कुछ आन्दोलन करने पर उद्यत हो जाते हैं और जिनकी तरफ़ से देश को यह भी आशा है कि क्रमशः राह पर आजावेंगे मेम्बर हो जाने पर उनको आन्दोलन से अलग रहना होगा क्योंकि दोनों बात तो अब एक साथ हो ही नहीं सकतीं। पुराना समय गया, यह नये रिफ़ार्म की महिमा का फल है। क्या यह बाधा भी एक रीप्रेसिव ऐक्ट नहीं है? जो शिक्षित समाज देश के सुख, दुःख, भलाई बुराई को समझती है और आन्दोलन द्वारा सरकार के कान तक प्रजा पीड़ा को पहुंचाती है जिस की राजनैतिक क्षुधा मेटने के वास्ते यह रिफ़ार्म दिया जाता है और जो प्रजा का सच्चा प्रतिनिधि है-आज रिफ़ार्म उसी को सभा भवन से अलग कर रहा है। ऐसी अवस्था में क्या रिफ़ार्म अपने उद्देश्य में सफलता पा सकता है? क्या कोई आशा कर सकता है कि रिफ़ार्म द्वारा देश की असंतुष्टता कम होगी? जड़ ही नहीं काटते तो क्या फूल, फल, पत्ती नोचने से पेड़ सूख जायगा? असंतुष्टों को संतुष्ट न करोगे तो क्या कभी देश की आग कम होगी? बड़े जोश के साथ सुरेन्द्र बाबू भी अपने पत्र बंगाली में इस विषय पर यों लिखते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"We cannot rise from a perusal of the Regulations without coming to the conclusion that their drift is to exclude the most distinguished leaders of the educated community......... An experiment which is handicapped at the start by the want of sympathy of those who can most conduce to its success, is, we fear, FORE--DOOMED TO FAILURE."

"नियमों को पढ़ कर हम यह नतीजा निकाले बिना नहीं उठ सकते कि इसका मतलब शिक्षित समाज के नामी अगुवाओं को काउनसिल से अलग करनाही है। इस साधन अर्थात् रिफ़ार्म को जो पहिले ही से उन लोगों की जिनके हाथ से इसको सफलता मिल सकती है सहानुभूति से वंचित कर दिया गया है असफलता ही पाना बदा है।" यह तो रिफ़ार्म के गुप्त रहस्य हैं। अब ज़रा उसके ऊपरी ढांचे की तरफ़ कुछ ध्यान देना चाहिये। बड़े लाठ की सभा में जहां ग़रीब हिन्दुस्तान के भाग्य का निपटारा होता है सरकारी कर्मचारी सभासदों की संख्या अधिक रहेगी, यह बात साफ़ २ लिख दी गई है। इस के माने और क्या हो सकते हैं सिवाय इसके कि अब भी सरकार ही की राय के मुताबिक़ हिन्दुस्तान का शासन किया जायगा। सिर्फ़ पहिले से फ़र्क़ इतनाही है कि बड़ा भारी आडम्बर रच दिया गया है और निडर होकर बोलने वालों पर निकाल दिये जाने का डर लगा दिया गया है। क्या इसी का नाम Self-Government है? क्या इसीको प्रजा को अपने भाग्य के निपटारे में हस्तक्षेप करने देना कहते हैं? क्या तीन वर्ष के गम्भीर विचार के बाद मारले साहब ने इतना ही देना ठीक समझा? ठीक ही तो है! ग़लती हमी लोगों की है जो निष्प्रयोजन आशा लगाये बैठे थे और अब आशा भंग होने पर बक २ करते हैं। एक अङ्गरेज़ी पत्र ने इस बक २ का शिक्षाप्रद उत्तर यों दिया है।

"One is disposed to ask where and when Government promised to surrender the executive authority into the hands of non-officials".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारांश यह है कि जब हिन्दुओं को यों बकर करते देखते हैं कि यथार्थ में हमको रिफ़ार्म से कुछ नहीं मिला और प्रान्तीय सभाओं में भी प्रजा के प्रतिनिधियों का सरकारी मेम्बरों से अधिक होना सिर्फ़ देखलावा है तो यही पूछने का मन होता है कि कहां और कब सरकार ने प्रतिज्ञा किया था कि हिन्दुस्तानियों को कार्य्यकारिणी ताक़त दी जायगी। माडरेट लोग इस बात का क्यों नहीं उत्तर देते? क्या मारले साहब ने पहिले नहीं कहा था कि कनाडा का फ़र कोट गरम हिन्दुस्तानियों के लायक़ नहीं है? इतने पर भी आशा किये रहना अपने ही लोगोंकी भूल थी। बुद्धिमान के वास्ते तो एक शब्द काफ़ी है पर मूर्ख हिन्दुस्तानी तो मारले, करज़न इत्यादि राजनीतिज्ञों के सम्पूर्ण व्याख्यानों को भी पढ़ सुन कर अक़ल नहीं लेते।

बड़े लाठ की सभा से तो हाथ धो बैठे अब ज़रा प्रान्तीय सभाओं की ओर देखना चाहिये। इनमें भी ऊपर से तो यों दिखलाया गया है कि प्रजा प्रतिनिधि ज़्यादा रहेंगे परन्तु जब ध्यान पूर्वक इलेक्टरेट की ओर देखा जाता है तो साफ़ सब भेद इस कपट जाल का खुल जाता है। दूर कहां जांय अपने ही प्रान्त की सभा की बनावट पर विचार किया जाय। इसमें सरकार २६ और २ एक्सपर्ट कुल मेम्बर २८ चुनेगी जिसमें २० और २ एक्सपर्ट मिला कर २२ तो निश्चय सरकारी कर्मचारी रहेंगे जो हमेशा सरकार की तरफ़ होंगे। बाक़ी छै सरकारी चुने हुये नान-अफ़ीशल बचे। क्या सरकार कभी ऐसे मनुष्य को प्रजा में से चुनेगी जो उसको सभा में दिक़ करे सो इन छै मनुष्यों की राय भी ९९ सैकड़े सरकार ही की तरफ़ रहेगी इसमें किसको सन्देह हो सकता है। ४८ में २८ तो यों निकल गये। अब बचे २० प्रजा के चुने हुये। इनमें ४ मुसलमान मुसलमानों के चुने हुए रहेंगे। सो क्या कभी सरकार के ख़िलाफ़ मुंह उठावेंगे, जब सरकार ने उनके साथ ऐसा पक्षपात किया है? बचे १६ इनमें २ ज़िमींदारों की तरफ़ से रहेंगे सो तो ख़ूब प्रजा का पक्ष करेंगे यह तो सब को विदित है। शायद ही इन दो में से कभी प्रजा को इनकी वोट मिले। १ यूनीवर्सीटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का रहेगा। पढ़ाई का महकमा तो अब नीम सरकारी हो ही रहा है सो उसका मेम्बर क्यों प्रजा की तरफ़ से बोलेगा। अब १३ में से १ कामर्स का साहब रहेगा। सो वह भी सरकार का भया। अब १२ रहे यह १२ म्यूनीसिपैल्टी और डिसट्रिक बोर्ड के रहेंगे। इन्हीं १२ प्रतिनिधियों की तरफ़ से कुछ आशा की जा सकती है और यथार्थ में इन्हीं में प्रजा के सच्चे प्रतिनिधि रहेंगे परन्तु इनकी कम से कम ३० से ऊपर सरकार की तरफ़ से बोलने वालों के आगे क्या चल सकती है? इतनी भी आशा करना अभी जल्दी करना है। म्यूनीसिपैल्टी और डिसट्रिक्ट बोर्ड भी तो नये नियम अनुसार बदले जांयगे इनमें भी कहीं बाधायें चालाकी से लग जांयगी तो प्रजा का कोई भी सच्चा देशभक्त प्रान्तीय सभा में न बैठने पावेगा। जो हो प्रजा को सभाओं में हमेशा सरकारी वोटों से हार जाना पड़ेगा और सरकार अपनी मन मानी कर लेगी। सभा की कारवाई में एक और भी अनोखी बात यह है कि सभापति (लाट साहब होंगे या उनका नियुक्त किया कोई अफ़सर होगा) को अधिकार है कि वह मेम्बर के उस सवाल का जिस को वह किसी तरह से सर्व साधारण के लाभ के विरुद्ध समझता है उत्तर न मिलने दे। क्या इसके अर्थ यह नहीं हैं कि जब प्रजा का प्रतिनिधि सरकार या सरकारी कर्मचारी के अत्याचार पर प्रश्न करेगा तो उसका उत्तर देना सरकार की इच्छा पर रहेगा अर्थात् सरकार न देगी या प्रश्न ही को होने से रोक देगी।

लाला लाजपत राय ने प्रयाग में व्याख्यान देते हुये ठीक कहा था कि मांगने वाले को या तो ठोकर मिलती है या ठोकर से बचा तो टुकड़ा मिलता है। पूरी रोटी कभी उसको नसीब नहीं। क्या हिन्दू जाति इसी टुकड़े के लायक़ है? क्या यह जाति चीन, जापान, फ़ारस, टर्की इत्यादि एशिआ की जातियों से किसी प्रकार सभ्यता (आधुनिक वा प्राचीन) में कम है कि वे जातियां तो स्वराज्य के भोग के लायक़ समझी जांय और हमारे लिये यह टुकड़ा? हमारा तो स्वराज्य लेने का दावा इन एशिआ की जातियों से यों बढ़ कर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हम आज क़रीब एक शताब्दी से उस पच्छमी जाति से शिक्षा आधुनिक सभ्यता में पा रहें हैं जो यूरोपीय राष्ट्रों में शिरोमणि समझी जाती है। क्या यह रिफार्म जो इङ्गलैण्ड के एक रेडिकल मारले ऐसे तत्वज्ञानी पंडित की बुद्धि से निकला है उस स्वतंत्र देश की स्वतन्त्रता और ईमानदारी पर हमेशा के लिये एक दाग़ न रह जायगा। क्या रिफार्म हिन्दू और मुसलमान, दोनों जातियों के सभ्यता की अप्रतिष्ठा नहीं कर रहा है। सच्चे देश भक्त अपने पुराने गौरव, सभ्यता और पुरुषों की प्रतिष्ठा करने वाला हिन्दू हो व मुसलमान इस रिफार्म को देख कर अपनी आधुनिक अवस्था पर बिना विलाप किये और आंसू बहाये न रहेगा। हाय! हम लोग अपने पुरुषों के नाम पर एक दाग़ हैं जो दिग्विजयी थे उन्हीं के औलाद के आगे यह टुकड़ा फेंका जाय और वे आपस में उसके वास्ते भी लड़ें। क्यों मुसलमान भाइयों! क्या गुलामी के साथ रह कर तुम भी अपने पुराने इतिहास को भूल गये। यदि पुराना भूल गये तो अपने फ़ारस और टर्की में रहने वाले भाइयों के नये इतिहास की तरफ से भीक्यों आंख बंद किये हो—ग़रीब हिन्दुओं से अलग होकर अपना रिश्ता तो उन्ही वीर भाइयों से जोड़ते हो और हिन्दुओं की रोटी खाकर भी अरब ही से हुब्बुलवतनी दिखाने को दौड़ते हो पर खेद के साथ कहना पड़ता है बुरा मत मानना—तुम्हारे में न तो वह वीरता है न वह आग है—करो जो तुम्हारा मन हो रिफ़ार्म तुमको भी थोड़े अरसा में सिखला देगा कि हम कहां तक सच कहते हैं। रिफ़ार्म से यही एक बड़ा भारी लाभ होगा कि जो लोग राष्ट्रीय दल वालों की बात अभी तक नहीं मानते थे अब मानने लगेंगे।

मदनमोहन शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालचक्र

"काल" को चक्र के साथ क्यों समावेश किया जाता है ? इसके साथ समावेश करने का कारण यही प्रतीत होता है कि वह अपनी स्थिति में स्थिर नहीं रहता। सदैव गाड़ी के पहिये कि भांति चक्कर लगाता रहता है इसी से इसे "काल चक्र" कहते हैं। आज हम जिस विषय को लेकर लेखनी उठाते हैं उस का स्मरण करते ही नेत्रों के सामने एक नूतन ही प्रभा का आविर्भाव होता है। मेरी समझ में संसार की समस्त बातें इस चक्र से विलग नहीं हैं। जैसे वर्षा के बीतने पर शरद का आगमन होता है और इसी प्रकार हेमन्त, शिशिर, बसन्त, ग्रीष्मादि एक एक के पश्चात् आया जाया करते हैं; प्रातःकाल हुआ, मध्याह्न होकर सायङ्काल को प्राप्त होते ही मार्तण्ड महाराज भी अस्ताचल में जा छिपते हैं। रात्रि हुई और उसके बीतने पर फिर वही प्रातःकाल! इसी प्रकार काल चक्र का कार्य्य जारी रहता है। जिस प्रकार प्रकृत और उसका कार्य्य तथा चन्द्र सूर्यादि कालचक्र के पहिये में नधे हुए हैं उसी प्रकार सुख और दुःख भी उसी कालचक्र में घूमा करते हैं। हमें अपनी प्राचीन बातों को स्मरण कर दुःख होता है किन्तु दुःख हो चाहे सुख यह तो चक्र का प्रभाव ही है। यदि एक सा समय रहे तो कालचक्र फिर काहे का ? देखिये पहिले महाराज दिलीप, रघु और धर्मराज युधिष्ठिरादि कैसे परम धार्मिक और पूर्णनीतिज्ञ राजे राज्य करते थे कि जिनको देख कर एक बार देवराज इन्द्र सरीखे नृपति गण भी शिर झुकाते थे। उनका राज्य कैसा अखण्ड (सार्व भौम) और धन धान्य पूर्ण तथा जगद्व्यापी था कि जिसके कारण से इस हमारी आर्य भूमि का डङ्का चहुं ओर बज रहा था। तात्पर्य यह कि पहले की समस्त बातें जो सर्वसाधारण में हुआ करती थी उन में से अब कुछ भी न रहा। हाय! हमारे इस विभव को किसने अपने उदरस्थ कर लिया। कहना होगा कि अवश्य यही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालचक्र की ही महिमा है। कालचक्र के कहने का अभिप्राय यह है कि जैसे "चाकी के मुंह परयो सो मैदा होय" इसी प्रकार इसमें सभी अग जग पिस कर नाश हो जाते हैं। क्यों न हो! क्या आज हम जिस भूमि को देख रहे हैं यही हमारी जन्मभूमि 'भारत माता' हैं? इसके लिये कैसा अच्छा लिखा जाता था कि "लसत लहलही जहां सघन सुन्दर हरियाई" हाय! आज उसी को इस प्रकार लिखा जाता है कि "तहां अब ऊसरमयी भई नसि गई निकाई"। चक्र का काम घूमने ही का है, जिस प्रकार सुख से दुःख मिलता है अब उसी चक्र के घुमाव से सुख की बारी होगी। सचेत हो जाओ! अपने उद्योग में परिणत होजाओ!

प्रिय पाठकों! अब देह संवारना और अनेक प्रकार के उपादानों से उसे सुरक्षित रखना तथा पश्चिमी सभ्यता के विस्तार के साथ ही साथ नयें नये फेशनोँ का चसका डालना श्रेयस्कर न होगा। क्योंकि सांसारिक भोग विलासों तथा नये नये फेशनों में ही पड़ कर आज यह दशा भुगतनी पड़ी है। किसी ने कहा है:—

क्षणे क्षणे यन्नवतां विधत्ते तदेवरूपं रमणीयतायाः।

अर्थात् "क्षण क्षण में जो नया होता रहे उसी का नाम मन का रमाने वाला सौन्दर्य है"। यह वाक्य यदि चरितार्थ होता है तो पश्चिमी सभ्यों के नये नये फेशनों ही में हम लोग तो इसे भूल गये। जो वस्तु हम बैपरते आये हैं वही बैपरते रहेंगे। यहां तक कि बहुत बातों में ऐसा चलन मान लिया गया है कि उनका त्याग करना अधर्म तथा पाप में शामिल है। यद्यपि उसके मूल तत्व को समझ भी गये हैं किन्तु यह समझ कर कि हमारे बड़ों का यही विश्वास था इस लिये चाहे वह लाभदायक हो और चाहे हानिकारक हो उसे न छोड़ेंगे। इसी से हम लोग कितने ही सालों से अपनी तरक्की न कर सके। पाश्चात्य लोगों ने वाइसेकिल, मोटरकार और व्योमयानादि कितने ही प्रकार की सवारियां निकाल चुके और हम वही निरे निकम्मे बने हुए बैलगाड़ी के अतिरिक्त कुछ न सीख बना सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दूसरे के दाल भात में मूसरचन्द' की भांति अपना खोकर दूसरे की ही नक़ली चमक दमक में भूल गये। पाठकों! यदि तुम्हें अपने को पहचानना है, संसार में अपने मुख की कालिमा धो कर चन्द्रवत् मुख दिखाना है तो जिन वस्तुओं में भूल कर अपने पैरों कुल्हाड़ी मार रहे हो उन्हीं वस्तुओं को देश में बेचने और पैदा होने का उपाय सोचो।

विचारने का स्थान है, ध्यान देने की बात है कि महाराज श्रीरामचन्द्र जी और युधिष्ठिरादि के समय में उनके लिये वस्तुयें कहां से बन कर आती थीं? क्या देश के बड़े बड़े धर्मात्मा, शूर बीर और प्रतापवान राजा देश की बनी हुई वस्तुओं से अपना काम नहीं चलाते थे? अवश्य इसी देश की वस्तुएं अपने काम में लाते थे क्योंकि अनेक शिल्प विज्ञान और चौंसठ कलाओं की गाथा शास्त्रों में पाई जाती हैं। अबतो हमको आलस्य ने इस प्रकार दबा लिया है कि छोटी सी छोटी वस्तु के लिये भी बाहर ही को हाथ पसारना पड़ता है।

बाहरे कालचक्र! तेरा चक्कर बड़ा ही निराला है। तेरे ही बिकराल चक्करों को लोग चारों युगों में भी सन्निवेशित करते हैं। जहां तेरा चक्कर अपने अनुकूल है तहां ही सतयुग कहा जाता है और प्रतिकूल होने ही को कलियुग कहते हैं। आज हमारी इस पवित्र भूमि में तेरा चक्कर बड़ा ही प्रतिकूल दिखाई पड़ता है इसी लिये लोग चिल्ला रहे हैं कि यहां विकराल कलिकाल ही वर्त्त रहा है। जिससे बचा बचाया गौरव भी सब नष्ट हुआ जाता है। हम लोग जिनकी नस नस में इस आर्य्य भूमि के जल वायु का प्रभाव बिधा हुआ है और जो हमारी मातृ भूमि कहलाती है जिस पर प्रेम करना हमारे लिये स्वाभाविक बात है और जिस के स्वत्वों के अधिकारी हमी लोगों को होना चाहिये। आज उसी कालचक्र की प्रतिकूलता से हम लोग सब बातों से वहिर्मुख हैं। जो कुछ तत्व है उसका भोक्ता कोई अन्य ही है। हम तो केवल मुंह ताकते हुये भिक्षुक ही बन गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब अन्त में निवेदन है कि अपनी प्रगाढ़ निद्रा का विसर्जन कर प्रचलित कुरीतियों को त्याग अपने में जातीयता और एकता का संगठन कर तथा मातृ भूमि के प्रेम को दृढ़ कर कालचक्र की बक्रगति को सीधा करने का साहस कर लो।

बाबा दीन शुक्ल

निवृत्ति

———:0:———

हमारे पूर्वजों ने प्रवृत्ति और निवृत्ति अलग २ दो मार्ग (रास्ते) मनुष्य के लिये जीवन पार करने के नियत किये हैं। और इन दोनों में आकाश और पताल का अन्तर समझा जाता है पर बास्तव में निवृत्ति भी प्रवृत्ति का पोषक ही मालूम होता है प्र पूर्वक वृत् जिसके अर्थ वर्तने के हैं क्तिन् प्रत्यय के जोड़ने से प्रवृत्ति हुआ और नि पूर्वक-वृत्त से निवृत्ति अर्थात् पाप कर्म या बुराई से निवृत्ति या अलग हो भलाई या पुण्य के काम में प्रवृत्त हो। पर अन्ध परम्परा में निवृत्ति से यही समझा जाता है कि यावत् कर्म से निवृत्त हो थूनी या कुन्द सा निर्जीव के समान अकर्मण्य हो बैठे। हिन्दुस्तान के नीचे गिर जाने के अनेक कारणों में निवृत्ति की ओर रूचि का होना भी एक है। जिसने यहां तक ज़ोर पकड़ा कि हमारे यावत् सत् कर्म, दान, धर्म आदि किये जाते हैं अन्त सबों का विचार कर देखो तो यही निकलता है कि संसार से हमारा छुटकारा हो और हम परमपद के अधिकारी बनें। यह कौन उन्हें समझावे कि इस तरह की निवृत्ति से तो परमपद बनता भी हो तो बिगड़ जायगा। जिसने भूत दया आदि अनेक लोकोपकारी कामों के द्वारा यह लोक न सुधारा वह परलोक किस भरोसे पर सुधारने चला है। तो सिद्ध हुआ निवृत्ति अलग कुछ हई नहीं वह भी प्रवृत्ति का अंग है। निवृत्ति का एक दूसरा रूप वासना क्षय है सो देखने में आता है कि जितनी वासना इन मुण्डी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कषाय वस्त्र वाले सन्यासी, उदासी, वैरागियों को है उतनी गृहस्थों को नहीं जिनके लिये वासना महोपकारी है। वासना का मिट जाना निःसन्देह बहुत अच्छा है जिसका दूसरा नाम निष्काम कर्म है। अर्थात् काम करने से पीछे न हटो उसका फल तुम्हें मिलै तो अच्छा है नहीं तो उदास और उद्विग्न चित्त न हो ऐसा करते रहोगे तो निरुत्साह कभी तुम्हारे पास न फटकेगा और तुम संसार के बड़े काम के होगे।

"दुःखे ष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः"।

गीता के इस उपदेश का यही तात्पर्य्य है कि दुःख में घबड़ाना नहीं और सुख की इच्छा न रखना। सुख दुख दोनोंको Let Thywill be done जगन्नियन्ता परमात्मा की इच्छा पर छोड़ ऊपर से मानो संसार में लिप्त पर भीतर से सर्वथा निर्लेप "पद्म पत्र मिवाम्भसा" जो लोग अपने इस सिद्धान्त के दृढ़ और पक्के हैं उन्हें मुक्ति की कामना कभी नहीं रहती वरन मुक्ति की चाह रखने वालों पर ऐसे लोग हंसते हैं और मुक्ति को महा अनर्गल और निरी निकम्मी मानते हैं। कर्मयोग ही है जिसमें काम करने को उन्हे मिलता जाय। हमारे उपास्य देव भगवान कृष्णचन्द्र का यही गीता में अर्जुन के प्रति उपदेश है। हमारे देश के कई लाख विरक्त जो बिना कुछ काम किये दूसरों के परिश्रम से उपार्जित धन को खा कर भारत की पृथ्वी को बड़ा बोझ सा हो रहे हैं और झूठ ही निवृत्ति मार्ग वाले बनते हैं कृष्ण भगवान के उपदेश पर आरूढ़ हो जांय तो देश का कितना अधिक उपकार हो। स्वामी दयानन्द तथा रामतीर्थ बंगाल के विद्यासागर प्रभृति अवश्य जन्म ले चुके होंगे या जन्म लेंगे और देश का उपकार किये बिना न रहैंगे। तब क्यों न कहा जाय कि निवृत्ति वही है जो प्रवृत्ति का पोषण करे अतएव वस्तु तस्तु निवृत्ति प्रवृत्ति का एक अङ्ग है। आलसी अकर्मण्य देशद्रोहियों ने निवृत्ति को अलग मान बने ठने भारत को गारत कर डाला। धिक्!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश में पशुओं की क्षीणता

घी और दूध जैसा मँहगा होता जाता है उससे यही मन में आता है कि पशु नित्य २ देश में घट रहे हैं। दो वर्ष पहिले जो भाव दूध घी का था उससे अब सवाई डेहुड़े का अन्तर है। तो निश्चय हुआ पशु बहुत तेज़ी के साथ घट रहे हैं। सर्कार ने इसका प्रबन्ध न किया तो पशु देश में रही न जांयगे और दूध घी अलभ्य हो जायगा समाई वाले चाहे घी दूध खा सकें साधारण जन उसके लिये तरसैंगे। पर सरकार इसका प्रबन्ध कर ही क्या सकती है सैन्य दल देश में नित्य २ बढ़ रहा है उनके लिये भोजन चाहिये ही तब हम लोगों को दूध घी न भी मिले तो क्या हानि है। दूसरे यह कि हिन्दुस्तान कृषि प्रधान देश है और खेती के प्रधान हेतु बैल हैं सो भी घट रहे हैं तब कृषि को भी बड़ा धक्का पहुंच रहा है। इन बातों से हमारे शासनकर्ता अजान हों सो भी नहीं है तब पशुओं की घटती के लिये पछताना व्यर्थ है। न इसके लिये कोई यत्न कारगर हो सकता है लाचारी है। शीशा बर्तन आदि विलायत की बनी चीज़ें जैसा इंपोर्ट होती हैं वैसा ही गाय बैल भी इंपोर्ट हों तब भी पशुओं में घाटा न रहे यही एक सुगम उपाय घाटा पूरा करने का मालूम होता है सरकार भी इसमें सहायक हो तो और भी सुगमता इसमें हो जाय।

हमारी गवर्नमेंट फिर भी भूल गई

बङ्ग भङ्ग के उपरान्त यहाँ के लोगों को खास कर बङ्गालियों को प्रसन्न रखने के लिये रिफ़ार्म दिये गये और इस रिफ़ार्म में मुसलमानों का सत्कार और हिन्दुओं का अपमान बहुत अधिक किया गया इससे हिन्दू प्रसन्न नहीं हैं बल्कि चिढ़ से गये हैं। कितने लोग इसके यह भी माने लगाते हैं कि मुसलमानों से सर्कार को डर है हिन्दू जो हज़ार बर्ष से गुलामी मे पड़े हैं इन का जोश spirit बुझ गया है कुछ करही न सकेंगे मुसलमानों को अलबत्ता प्रसन्न रक्खो। टर्की परशियो आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई एक स्वतन्त्र राज्य भी अभी मुसलमानों के हैं। इससे इन्हें अपनी मूठी में लिये रहना बहुत आवश्यक है। अस्तु सर्कार को इस बात का निश्चय रखना चाहिये कि काम पड़ने पर हिन्दू ही काम आये हैं और आवेंगे। दीन हीन हिन्दुओं को तो जिस ढङ्ग से रक्खो रहने को तैयार हैं। दूसरे एक यह भी है कि सर्कार कितना ही पुचाड़ा दे दे मुसलमानों को बढ़ावें हिन्दुस्तान में अब तरक्की करेंगे तो हिन्दू ही करेंगे। इस रिफ़ार्म से उपकार तो कम हुआ हिन्दू और मुसलमानों में अनैक्य अलबत्ता बढ़ा जो देश की समष्टि के लिये अहित है।

युधिष्ठिर को द्रौपदी का प्रोत्साहित करना

सारा राज्य पाण्डवों का जब दुर्योधन ने जीत लिया।
चौदह वर्ष वास बन में करने का यों आदेश दिया॥
"जाओ देश को त्याग विपिन जो भीतर अवधि दिखाओगे।
तो फिर चौदह वर्ष आदि से जङ्गल बीच बिताओगे" ॥ १ ॥
छली, नीच दुर्योधन की ऐसी जब आज्ञा पाते हैं।
लिये द्रौपदी साथ पाण्डु सुत राज त्याग बन जाते हैं॥
चारो दिशा घूमते फिरते द्वैत विपिन में आते हैं।
तहँ विश्राम हेतु तरु नीचे आश्रम एक बनाते हैं ॥ २ ॥
वहां भीलगण निशि वासर जे बन में सदा विचरते हैं।
बड़े भक्ति से धर्म मूर्त्ति का आकर दर्शन करते हैं॥
कन्दमूल, फल, बनज वस्तु सब ढूंढ़ ढूंढ़ कर लाते हैं।
सच्ची भक्ति बनेचर अपनी इस प्रकार दिखलाते हैं ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दिखा कर कभी हंसाते अपने कौतुक नए नए।
इस प्रकार भीलों में रहते कितने ही दिन बीत गए॥
प्रजा गणों में किस प्रकार दुर्योधन करता है व्यवहार।
इसे जानने हेतु बनेचर तब भेजा तहं पाण्डु कुमार॥ ४॥

बन कर रूप ब्रह्मचारी का तब उसने प्रस्थान किया।
कुरुपति नीति जान कुछ दिन में आकर सब सन्देश दिया॥
प्रजागणों में दुर्योधन का देखा जो कुछ सद् व्यवहार।
कहा प्रशंसायुत शब्दों में त्याग पक्ष निष्पक्ष विचार॥ ५॥

भड़क उठा सुन क्रोध अधिकतर कृष्णा का रिपु उन्नति जान।
पाकर वायु वन्हि तृण की ज्यों हो जाती प्रज्वलित महान॥
इस प्रकार सुन शत्रु प्रशंसा जान पाण्डु सुत ज्ञान विहीन।
तिन के क्रोध बढ़ाने के हित बोली कृष्णा गिरा प्रवीन॥ ६॥

"आप सरीखे, विज्ञ, धीर, धर्मज्ञ, सुजन हित।
प्रमदा जन उपदेश यदपि होता है अनुचित॥
पर हे नृप! वह कठिन हृदय की व्यथा हमारी।
प्रेरित है कर रही बात कहने को सारी॥ ७॥

भरतादिक जे इन्द्र तुल्य थे तव पुरुषे गन।
तिनकी रक्षित यह अखण्ड पृथिवी बहु बर्षन॥
तिसे आप ने आज हाथ निज क्षय कर डाला।
जैसे शीघ्र मतङ्ग फेक देता है माला॥ ८॥

वे कुबुद्धि जन सदा पराभव को पाते हैं।
जे दुष्टों संग नहीं पराक्रम दिखलाते हैं॥
कवच हीन तन ज्यों प्रवेश कर बाण विनासत।
सरल चित्त जन को सोई बिधि धूर्त्त करत हत॥ ९॥
आप छोड़ सुसहायवान औ कुल अभिमानी।
होकर ऐसा कौन नृपति होगा सज्ञानी॥
मनोरमा गुणवती वंशजा जौन कहावै।
ऐसी श्री को शत्रु हाथ से हरण करावै॥ १०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे नरेन्द्र ! यह कठिन शत्रु संतापित जग में।
सहते हुए अनेक दुःख निन्दित हो जग में ॥
होती जैसे अग्नि शमी तरु सूखे में त्यों।
होता है प्रज्वलित आप में क्रोध नहीं क्यों ? ॥ ११ ॥
अति क्रोधी जन जे विपत्ति बिन सावन हारे।
होते तिनके लोग आप ही वश में सारे ॥
जे नर क्रोध विहीन मित्र का भाव दिखाते।
वे आदर नहिं लहैं शत्रु भी नहीं डराते ॥ १२ ॥
जो रथ चारी सदा रक्त चन्दन से पूरित।
किन्तु आज हा ! सोई पैदल धूल धूसरित ॥
गिरि कन्दर बिच फिरत अहो ! सोइ भीम, सत्यधन ! ।
क्या तेहि यह विधि देख नहीं होता दुःखित मन ॥ १३ ॥
चन्द्र तुल्य यह पार्थ जीत कर उत्तर कुरु जो।
स्वर्ण रजत धन अखिल दिया था लाय आप को ॥
आज लपेटे छाल वस्त्र सोई तव सम्मुख।
अहो ! आपको तदपि नहीं होता किञ्चित दुःख ॥ १४ ॥
रूखी जिनकी भई देह वन भूमि लोटते।
बिखरे शिर के केश फिरत जङ्गली गजन से ॥
ऐसे माद्री यमज पुत्र की दशा देख कर।
होता है नहि धैर्य्य भङ्ग अब भी तब क्यों कर ॥ १५ ॥
कैसी है तव बुद्धि नहीं जानी जाती है।
चित्त वृत्ति लोगों की अद्भुत दिखलाती है ॥
किन्तु आप पर यह विपत्ति ! यह सोच सोच कर।
होता जाता हृदय हमारा व्यथित अधिकतर ॥ १६ ॥

क्रमशः।

माधव शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र इतिहास की थर्मौपिली
(डान से अनुवादित)

हमारे राष्ट्र के सांग्रामिक इतिहास में मरहठों का नाम उस विग्रह रीति के संबन्ध में सर्वदा पाया जाता है जिसमें शारीरिक शूर वीरता खुले संग्राम में दिखलाने के बजाय कपटता और छल बहुत करके काम में आते हैं । मरहठों की कपटता इतनी प्रसिद्ध है कि आज तक यह वचन कहावत सा हो गया है परन्तु अन्य उक्तियों के समान यह भी केवल अर्ध सत्य दर्शक ही है क्योंकि इस उक्ति ने मरहठों के मानसिक लक्षणों में से इस एक को ही विशेषता से बतलाया है। इस कारण महाराष्ट्र आचार के अन्य प्रशंसनीय और उदार लक्षणों को देखने को हमें अक्षम कर दिया है। किन्तु इतिहास इस बात का प्रमाण देता है कि महाराष्ट्र सैनिकों और सेनापतियों की मानवी शूरता और पौरुष के तथा सामूहिक विक्रम और बलिदान के अगणित उदाहरण मिलते हैं जिनकी उपमा केवल हमारे राजपूत भाइयों के आख्यानों में ही देखने में आती है । आज हम मरहठों की शूरता और आत्म-त्याग का एक ऐसा वृत्तान्त पाठकों के सामने रखते हैं कि जो यथार्थ में मरहठों की थर्मौपिली कही जा सकती है ।

शिवा जी के जीवन के अनेक आपत्ति कालों में से एक का वृत्तान्त यह है । पन्हाले दुर्ग के अवरोध को चार महीने होचुके थे और इस काल सिद्दी जौहर बीजापुर वाले के सेनापति ने उस दक्षिण दुर्ग में उसको बन्द कर रक्खा था ।

हम सब जानते हैं कि अफ़ज़ल ख़ां और उसकी सेना कैसे नाश को प्राप्त हुई और फिर शिवा जी ने पन्हाला दुर्ग के दक्षिण और सब देश को कैसे जीता, फिर उसने पन्हाला दुर्ग को भी ले लिया, यहां तक कि बीजापुर के द्वार पर जा कूदा । इन सब बातों ने उस मुसलमानी राजधानी में एक घोर उपद्रव पैदा कर दिया और इस लिये सिद्दी जौहर हवशी अफ़सर शिवा जी के उठते हुये बल को चूर्ण कर डालने के लिये एक बड़े भारी दल सहित भेजा गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवा जी ने नवगृहीत दुर्ग पन्हाले को एक बड़ा अच्छा रक्षा का स्थान समझा। और वहां स्वयम् रक्षा करने की प्रतिज्ञा कर शरण ली। यह दुर्ग वास्तव में विश्वसनीय न था। पहले पहल तो शिवाजी ने बीजापुर की सेना का रास्ता रोकने के लिये कोई उद्योग न किया किन्तु जब वे दुर्ग के आस पास आ टिके तब शिवाजी ने देश को लूटना मारना आरम्भ कर दिया। इसलिये कि शत्रु को खाने पीने को कुछ न मिल सके। शिवाजी उनके तुरगबल को आना कानी देते और रात्रि को अतर्कित अवस्कन्दों से उन्हें तंग करते थे। इसमें दुर्ग बल ने भी बहुत सहायता की। मवालियों के समूह के समूह खाड़ियों की आड़ में छिपे हुये रिपु निवेशन तक पहुंच जाते और शत्रु को अनुद्यत पा परिवेष्टियों पर असि हाथ में ले गिर पड़ते। और यदि बैरी को पता लग जाता तो वे उन पर अग्नि वाण छोड़ देते। इस प्रकार उन्होंने रिपु को बड़ी हानि पहुंचाई और अपनी अत्यन्त ही कम हानि से बीजापुर के अनेक सैनिक मार डाले। किन्तु सिद्दी जौहर अतीव क्रुद्ध हुआ उसके आधिपत्य में अत्यन्त बलवान सेना थी। उसने स्वयं आयातों में आदेश किया तथा सब बाहर वाले स्थानों को ले लिया और अति कठोर प्रबन्ध से दुर्ग को घेर लिया। वर्ष की कष्टतम ऋतुओं में कई महिनों तक घोर प्रयत्न शिवाजी को वश में करने का करता रहा।

पूरे चार महीने इस रीति से व्यतीत हो गये। शिवा जी अब यहां से निकलने के लिये उत्कण्ठित हुए। स्थान अब भी बैरी से लिया न जाता लेकिन प्रत्येक रास्ता बड़ी सावधानी से रक्षित था। शिवा जी ने अब इस बात को समझा कि इस प्रकार रिपु से घिरे हुए दुर्ग में बन्द हो जाना भूल था जिस से कि अब और स्थानों के संवाद पूर्णता से बन्द थे। देश के अन्य भागों की न तो कुछ अवस्था जान पड़ती थी और न उन का किसी प्रकार का प्रबन्ध ही हो सकता था। अपने आप को इस आपत्ति से निकालने के लिये शिवाजी को एक छल खेलना पड़ा। उन्होंने दुर्ग को रिपु के हस्तार्पण करने के प्रस्तावों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से वैरी को असावधान कर दिया । यहाँ तक कि शत्रु इस विचार में मग्न अथवा विमुग्ध थे कि दुर्ग उन के हाथ आही गया है । शिवा जी रात्रि के अंधेरे में मवालियों के आदमियों के साथ पहाड़ी के नीचे उतरे और अनजान रक्षकों के पास से होकर निकल गये । जब वे रंगाने के दुर्ग की ओर पूरे धावे पर जा निकले तब उनके निकल जाने का वैरी को पता लगा । जब यह ठीक २ मालूम हुआ तब अफ़ज़ल खां के पुत्र फ़ज़ल मुहम्मद खां और सिद्दी जौहर के बेटे सिद्दी अज़ीज़ ने तुरग बल और उसके पीछे पदाति सहित पीछा किया किन्तु शिवा जी को वे उस समय पकड़ सके जब कि दिन खूब चढ़ चुका था और जब वह रंगाने से छै मील की दूरी पर जौली के विवर में घुस रहा था ।

अब शिवा जी ने देखा कि यदि वैरी अपनी यात्रा में न रोका जाय तो दुर्ग तक पहुंचना असंभव होगा । जौली का दर्रा एक तंग सुरङ्ग है और यहां वैरी एक छोटी सेना से बहुत समय तक रोका जा सकता है परन्तु फ़ज़ल खां के पास एक बड़ी भारी सेना थी और दर्रा केवल ऐसे ही मनुष्यों से रक्षित हो सकता था जो अपने स्थान को छोड़ने के बजाय मृत्यु के मुख में पड़ने को उद्यत हों । यह कठिन कर्म एक उसी स्थान के देशपण्ड्या बाजी प्रभु नाम को सौंपा गया जो रिपु से शिवा जी का अनन्य भक्त हो गया था । दर्रे में उसको एक सहस्र मवालियों के गण के आधिपत्य पर स्थापित किया गया और शिवाजी ने उससे यह बात कही कि तुम दर्रे को तब तक न छोड़ना जब तक कि मुख्य सेना की पहुंच की सूचना तोपों के छुटने से तुम को न मिले । वीर्यवान देशपण्ड्या ने विश्वासपात्र होने का प्रमाण दिया । बीजापुर के सेनापति के साथ जिसके आधिपत्य में अगणित सेना थी उसने इंच इंच भूमि पर कठोर युद्ध किया और नौ घण्टे से अधिक बराबर लड़ाई जारी रक्खी । बीजापुर के तुरग बल के आगे बढ़ने के उद्योग में मुंह फेर दिये और पदाति सैन्य आने पर यथाक्रम दो लगातार अश्रान्त सैनिकों के हमलों को वीरता के साथ रोक दिया ।

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरे पहर मैदलों का तीसरा दल अफ़ज़ल ख़ाँ के पुत्र के साथ बड़ी व्यवस्थित रीति से आगे बढ़ा। जी तोड़ उन्होंने हमला किया। किन्तु धीर रक्षक तब तक डटे रहे जब तक उनके तीन चौथाई आदमियों के प्राणघात न हो चुके। उसी समय तोपों की नाद ने रङ्गाने में शिवाजी के सुरक्षित पहुंचने की सूचना दी। बाजीप्रभु चोटों से आक्रान्त हो रहे थे और हर्ष प्रकट करते हुए उस समय देवलोक पधारे जिस समय कि उनको अपने स्वामी की तोपों के घोष ने कह दिया कि वे कृतकृत्य हो चुके थे। मवाली अगणित पीछा करने वालों के सन्मुख उनके मृत शरीर को उठा ले गये और इस प्रकार उन्होंने उसकी ओर सन्मान और अपनी स्थिरता दिखलाई। इस रीति से इन अनुरक्त मवालियों और उनके वैसे ही भक्त नेता के प्राणोत्सर्ग ने बन्दी होने के दुर्दैव से शिवा जी को बचा लिया और सिद्दीजौहर के सब प्रयोगों और युक्तियों को रद्द कर दिया। अब शत्रु को इस बात का संशय हुआ कि वह रङ्गाने की ओर बढ़े वा पन्हाले के दुर्ग को घेरे रक्खे। स्वामी रामदास के वचन इन मवालियों के हृदय में अच्छे फलीभूत हुये। "क्षत्रिय धर्म" पर व्याख्यान देते हुये उन्होंने इन वाक्यों को उच्चारण किया था "सच्चा पुरुष वही है जो धैर्य को कभी नहीं त्यागता परन्तु विजय उन्हीं को होती है जो ठीक स्थान पर उचित काल में और युक्त पक्षों की ओर अपना शौर्य दिखलाते हैं"।

थियोसोफ़ी और हिन्दू धर्म

अभ्य्य सन्तान आज दिन इतने गिर गये कि सब कोई इनके गुरु बना चाहते हैं। कोई इन्हें सभ्य बनाने का प्रयत्न करता है, कोई इन्हें धर्मच्युत कर अपने मत में लाना चाहता है और कोई कोई मिसेज़ ऐनी बेसेण्ट जैसी दिलचली हिन्दुओं को हिन्दू धर्म सिखाने का भी दम रती हैं। पाठक थियोसोफिकल सोसाइटी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास से परिचित होंगे ही । हर्ष इस बात का है कि मिसेज़ बेसेंट और थियोसाफ़िकल सोसाइटी का पोल अब खुलता जाता है । थियोसोफ़िकल सोसाइटी के एक मेम्बर की लेखनी से निकले हुये नीचे के शब्द जो दिसम्बर मास के माडर्न रिव्यू में प्रकाशित हो चुके हैं बहुत ही आशा जनक हैं:—

"भारत की थियोसोफ़िकल सोसाइटी तीन रूप बदल चुकी है । मैडेम ब्लैवेट्स्की के समय में यह सोसाइटी बौद्ध धर्म की मानने वाली समझी जाती थी कारण यह था कि इसके दोनों संस्थापकों ने अपना (ईसाई) मत छोड़ कर बौद्ध धर्म ग्रहण कर रखा था । ये दोनों संस्थापक ईसाई मत के पक्के (uncompromising) शत्रु थे और हिन्दू धर्म की ओर आदर प्रगट करते थे इसी कारण वे सोसाइटी को सर्व प्रिय बनाने में कृतकार्य हुये ।

"सोसाइटी ने अपना दूसरा स्वरूप उस समय धारण किया जब कि मिसेज़ बेसेंट भारत में आईं । भारत में आने से पहिले मिसेज़ बेसेंट ईसाई मत की विरोधिनी होने तथा स्वतंत्र विचार रखने के लिये अत्यन्त प्रख्यात हो चुकी थीं । और यह भी कहा जाता था कि कट्टर ईसाइयों की ओर से इन्हें बहुत कष्ट सहने पड़े थे । भोले भाले हिन्दुओं ने यह समझ कर कि मिसेज़ बेसेंट ईसाई पादरियों के हमलों से हिन्दुओंकी रक्षा करेंगी उनका स्वागत किया । कुछ काल बीत जाने पर जब हिन्दुओं को यह मालूम हुआ कि मिसेज़ साहबा ने हिन्दू धर्म ग्रहण कर लिया है और युक्त प्रान्त के एक विख्यात हिन्दू सन्यासी ने उनको हिन्दुओं की पूजा आदिक की विधि भी सिखला दी है उस समय हिन्दुओं का उत्साह चोटी पर पहुंच गया । उसके पीछे कई वर्ष तक यही दशा बनी रही । थियोसोफ़िकल सोसाइटी की इस अवस्था में ही काशी में सेण्ट्रेल हिन्दू कालिज का जन्म हुआ । उन दिनों जब कभी मिसेज़ बेसेंट खड़ी होकर हिन्दुओं से रुपये के लिये अपील करती थीं चारों ओर से रुपैया टपकने लगता था । किन्तु अब वह समय भी बीत गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज दिन थियोसोफ़िकल सोसाइटी पर एक ऐसे मनुष्य का प्रभुत्व है कि जो पहिले ईसाई पादरी (Christian clergyman in holy orders) थे और अब बौद्ध हैं। किन्तु ये महाशय अभी तक अपने पिछले दिनों को नहीं भूले और कोई कोई तो यह समझते हैं कि आप भीतर से ईसाई धर्म के उपदेशक ही हैं केवल बाहर से रङ्गे हुये जोगी बने हुए हैं। मिसेज़ बेसैण्ट पर भी जब से आप का प्रभाव पड़ा है और उन्होंने अपने पिछले इष्टदेव की मूर्ति अपने हिन्दू गुरु को लौटा दी है उस समय से ही मिसेज़ साहबा एकाएक ईसाइयों को प्रिय हो गईं। हाल में जब मिसेज़ बेसैण्ट इङ्गलैण्ड में दौरा कर रहीं थीं तो इनके व्याख्यानों की पूरी पूरी रिपोर्ट "क्रिश्चियन कामनवैल्थ" नामक एक परम विख्यात ईसाई पत्र में छपा करती थी। तब कौन आश्चर्य है कि इङ्गलैण्ड के लोग मिसेज़ साहबा के किसी विशेष ईसाई सम्प्रदाय से सम्बन्ध न रखते हुए भी इनको ईसाई मत की उपदेशिका और इन के हिन्दू कालिज को केवल ईसाई मत की शिक्षा मिलने का एक स्थान समझते हैं। और न मिसेज़ बैसैण्ट ने इस समय तक इङ्गलैण्ड निवासियों के चित्तों से इस विचार को दूर करने की कोई चेष्टा ही की। यही नहीं किन्तु मिसेज़ साहबा वहां पर हज़रत ईसा के फिर एक बार जन्म लेने का संदेशा अपने व्याख्यानों में सुनाती रही हैं। थियोसोफ़ी के इस नवीन समाचार का आविर्भाव उन महाशय को ही हुआ है जिनका हम ऊपर ज़िकर कर चुके हैं। समाचार यह है कि शीघ्र ही अर्थात् हम में से बहुतों के जीते जी हज़रत ईसा फिर जन्म लेने वाले हैं और थियोसोफ़िकल सोसाइटी का कर्त्तव्य उनके लिये रास्ता साफ़ करना है जिससे कि इस जगत के मनुष्य उनका वैसा निरादर न करें जैसा कि उनके पिछले जन्म के समय किया गया था। यदि कोई मुसलमान भाई इस बात का उपदेश करने लगे कि हज़रत मेहदी जन्म लेने वाले हैं तो हम उसे उन्मत्त कहने लगते हैं। किन्तु यदि मिसेज़ बेसैण्ट हज़रत ईसा के पुनर्जन्म का उपदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती हैं तो बहुत से कट्टर कहलाने वाले हिन्दू उस उपदेश को भूखों की तरह गटक जाते हैं।

"कौन आश्चर्य की बात है कि मिसेज़ बेसेण्ट की वक्तृताओं की चकाचौंध से अन्धे न हो जाने वाले अनेक सीदे सादे हिन्दू "हिन्दू कालिज" की ओर सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। हम मिसेज़ बेसेण्ट की सच्ची प्रशंसा करते हैं किन्तु यदि वे हिन्दुओं को हज़रत ईसा के पुनर्जन्म का उपदेश देती रहीं जैसा कि वह इंगलैण्ड में और कहीं कहीं भारत में भी कर चुकी हैं तो इसमें सन्देह नहीं हो सकता कि भारत में और कम से कम हिन्दुओं में थियोसोफ़ी का अन्त निकट आ रहा है। बनारस के हिन्दू कालिज के विषय में हम यही कह सकते हैं कि अब इस कालिज को सच्चे हिन्दुओं के अधिकार में कर देना परमावश्यक है। हम वर्त्तमान प्रिन्सिपल के विरुद्ध कुछ नहीं कहा चाहते। वे अपने विद्यार्थियों में अति प्रिय हैं तथा बिना वेतन लिये कार्य करते हैं। हम उनको और उनके समान अन्य आत्मत्यागी कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद देते हैं किन्तु 'हिन्दू कालिज' यदि किसी हिन्दू घराने में जन्मे हुए हिन्दू धर्मावलम्बी के अधीन ही रहे तो अधिक अच्छा है।"

एक हिन्दू एफ़० टी० एस०

कविता

(१)

भूमि हमारी, प्राण पियारी, जो न कहे जन-प्रेम प्रफुल्लित।
ऐसा मरा मन-बुद्धि असंगत, है क्या कहीं, कहो तो सही।
अचम्भा भारी।

(२)

बहु देश भ्रमा, निज भूमि फिरा, नहि हीय जला-टुक प्रेमानल।
कहिये तो भला-वह कूट अचल, मन वाला नर, है मूढ़ किधर।
दुष्ट आचारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

लहि नाम बड़ा, अभिमान भरा, धन भी पाया-यदपि यथेष्ट।
धिक् धिक् माया-बल गुण श्रेष्ठ, कवि गुण धाम, न लेंगे नाम।
छी छी तनधारी।

(४)

मिथ्या जीवन, धी बल यौवन, नाम गंवाया-जो जीते दम।
क्यों जग आया-अन्ध अधम, जो द्विगुण मरा, क्या काम सरा।
आपाधारी।

(५)

जिस थल धूर, से उपजा कूर, उसी ग्राम के-सब नर नार।
श्वान सींग से-देंय बिसार, ज्यों वर्ण गलत, त्यों नाम मिटत।
(हो) नर या नारी।

राधामोहन गोकुल जी

हैम्पडन

कोई ऐसा देशभक्त फिरंगी या इतिहास तत्ववेत्ता मनुष्य न होगा जो हैम्पडन को न जानता हो और प्रेमदृष्टि से न देखता हो। उसकी देशभक्ति में स्वार्थ के धब्बे का नाम तक नहीं था उसने शासन शक्ति का सामना अवश्य किया पर उससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ। वह बादशाह के अधिकारों के छीनने की इच्छा और चेष्टा का अपनी जिह्वा और लेखनी से उस समय तक सामना करता रहा कि जहां तक मनुष्य से होना सम्भव है परन्तु जब उसने देखा कि इन निर्बल अस्त्रों से काम न चलेगा और सीधी उंगलियों घी न निकलेगा तब उसको प्राणप्रिय देश की स्वतन्त्रता स्थिर रखने के निमित्त अस्त्र धारण करने पड़े क्योंकि यदि वह ऐसे अवसर पर भी चुप रहता तो महान पाप का भागी होता।

महात्मा जोन हैम्पडन बकिंघमशायर के एक प्राचीन कुल के व्यक्ति थे। आप सन् १२०० ई० से पहले कोई प्रसिद्ध पुरुष न थे; सन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६३७ ई० के लग भग फिरंगी राज ने एक पोतों का बेड़ा (Fleet of ships) बनाने के लिये प्रजा पर कर लगाया, यह कर (Tax) पार्लिआमेंट की सम्मति से नहीं लगा था और प्रजा इसको असह्य भी समझती थी। जब हैम्पडन से यह कर मांगा गया तो उसने देना स्वीकार न किया, उस पर राजाज्ञा भंग करने का दोष लगाया गया और स्वयं राजा के सन्मुख उपस्थित किया गया। मूल मन्तव्य इस अभियोग का यह था कि असन्तुष्ट प्रजा भय भीत हो जाय किन्तु कल्पित अपराधी की वीरता के प्रत्युत्तर ने उसको देश का प्यारा बना दिया और अचानक एक अनजान बालक देश भर में प्रसिद्ध हो गया। इस लड़के ने ऐसी धर्मज्ञता और वीरता से इस अभियोग में जवाबदिही की कि "यदि राजा ने कर बलात् ले ही लिया तोभी वास्तव में उसके राजकीय वृक्ष की जड़ में घुन लग गया है"। न्यायालय के अन्यायी और अत्याचारी जजों की आज्ञा ने एकदम जाति का मन न्यायालयों की ओर से पूर्णतया फेर दिया और देश के सब योग्य पुरुषों की जो राजविप्लव की नींव डाल रहे थे हिम्मतें बढ़ गईं और उनको अवसर मिल गया कि उस असंतोष की अग्नि को जो प्रजा के हृदय में दबी २ सुलग रही थी हवा से भड़का दें।

इस अभियोग के पीछे हैम्पडन अपनी जाति का प्रियतम व्यक्ति और पार्लियामेंट का अग्रगण्य (pillar) बन गया। क्लेरेंडन नामक इतिहास लेखक कहता है कि उस दिन से सारी जाति उसको देश-भक्तों का पिता मानने लगी और वह उस नाव का मांझी बन गया जिसके सहारे जाति की स्वतन्त्रता प्राप्त होनी थी और जो अब तक अन्याय और राजकर्मचारियों की दुष्टता रूपी झंझा में डगमगा रही थी तथा डूबने वाली थी। जिस दिन से हैम्पडन ने असीम न्यायालयों के अधिकार पर पुल बांधने का विचार किया और देश की शासन पद्धति का सुधार करना ठाना तब से यद्यपि वह बच्चा था और उसके खेल कूद के दिन थे उसने अत्यन्त दृढ़ता से इन बातों को छोड़ दिया और अपने आचार, स्वभाव, चाल, ढाल का विचार रक्खा और यद्यपि उसमें स्वाभाविक लड़कपन की प्रसन्नता शेष थी तौ भी उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६४० ई० की पार्लियामेण्ट में अपने देश वासियों की आशाओं से कहीं बढ़ चढ़ कर मेहनत, चतुराई, योग्यता और सौन्दर्य्य से काम किया।

वह राजविरुद्ध दल का मुख्य पथप्रदर्शक और संचालक था जो सब से महान काम उसके हाथ में सौंपा गया था वह यह था कि वह राजा की छल युक्त नीतियों और चालाकियों पर दृष्टि रक्खे। क्योंकि राजदल के लोग स्काटलैंड की प्रजा को भांति भांति के लालच और दम झांसों से स्वतन्त्रता मांगने वाले दल से पृथक रखने की चेष्टा कर रहे थे और आपस में फूट डाल कर अपना मतलब सिद्ध करना चाहते थे।

इङ्गलैण्ड में राजा के पक्षपाती और जातिविक्रेता लोग तो यह चाल करते थे कि अंगरेजों और स्काटलैण्ड वालों में विरोध डाल कर जब एक जाति कोई स्वत्व या न्याय चाहती थी दूसरी जाति को उकसा कर उसके सामने खड़ी कर दिया करते थे। किन्तु हैम्पडन ने दोनों जातियों को ऐसी चतुराई के साथ उनके स्वत्वों और हानि लाभों को समझा दिया कि देशविक्रेता दुष्टों की कोई चाल न चली और स्वतन्त्रता पाने के लिये दोनों जातियां मिल गईं।

जब राजा और प्रजा का विरोध समर सीमा तक पहुंच गया तब माननीय हैम्पडन, अर्ल आफ़ एलासेक्स के अधिकार में जो पैदल सेना थी उसका सेनापति नियत हुआ और उन लोगों में जिन्होंने बकिंघमशायर के वर्ल स्थान पर राज्य सेना के साथ युद्ध किया सब से आगे हैम्पडन रहा। इस देशोद्धारक सोलह वर्ष के बालक की चतुराई, धर्मज्ञता, सदाचार सर्वथा निष्कलंक थे। इस धर्मवीर बालक का नाम राजा ने उन छै पारलियामेण्ट के मेम्बरों में लिख लिया था जिनसे बदला लेने की उसने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली थी। समर भूमि में उस ने ऐसी बुद्धिमत्ता, धीरदर्शिता, शौर्य्य और चैतन्यता से काम किया कि वह राज सहायक मुखिया अर्ल का भयानक प्रतिभट बन गया और यदि वह बहुत जल्दी समय आने से पहले न मारा जाता तो उक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्ल के अधीन समस्त बल इससे ही आ मिलता क्योंकि अर्ल के आचरण और बर्ताव से सब लोग बहुत रुष्ट रहते थे। हैम्पडन को जब तक यह आशा रही कि न्याय संग्रह ठीक हो सकता है और देश प्रबन्ध की दशा सीधी सीधी राह से सुधर सकती है और वर्त्तमान संस्थाओं को उलटना पलटना न पड़ेगा तब तक वह सब मन्त्रों में इसी मन्त्र को गुरुतर समझता रहा कि जहाँ तक बने राजा का चित्त वश में और ठीक रक्खा जाय, उसके स्वभाव का निरीक्षण होता रहे क्योंकि यदि व्यक्तिगत शासनशक्ति स्थिर ही रही तो यही जाति के सौभाग्य और दुर्भाग्य का स्रोत है; परन्तु राजा कट्टर घोड़े के समान इस कटीली लगाम को मुंह में लेने से बिदकता था और देश सुख और स्वातन्त्र्य रक्षा के निमित्त इस लगाम का लगाना परमावश्यक था। राजा भीतर ही भीतर मनसूबे गांठ रहा था कि येन केन प्रकारेण संशोधकों की गरदन पर कर्द रक्खी जाय और जो देश को कलुषों से पवित्र बनाना और सुप्रबन्ध का प्रचार करना अपना कर्त्तव्य जानते हैं उनको कठिन शिक्षा (दण्ड) दी जाय। इसी से बेचारे हैम्पडन को अपना ढङ्ग बदलना पड़ा वह जान गया कि चार्ल्स कैसा मनुष्य है और उस का कुछ भी भरोसा करना महान हानिकारक है। न उसको धर्म शिक्षा सुधार सकती है, न उसको सत् मन्त्र मनुष्य बना सकता है; तब हताश होकर उसको अपना मार्ग ग्रहण करना पड़ा। शोक! कि यह धर्मवीर देशभक्त मनुष्य रत्न १६४२ ई० में चालग्रेव युद्ध में घायल हुआ, उसके कन्धे पर दो गोलियां लगीं जिसके कारण वह छै दिन तक रुग्न रह कर शान्ति पूर्वक देशप्रेमपरिपूर्ण हँसता हुआ स्वर्गधाम को सिधारा। राजा चार्ल्स ने भी इस अपने धर्मात्मा देशहितैषी प्रबल शत्रु के मारे जाने पर शोक किया और निज राजवैद्य को चिकित्सा के लिये भेजा।

हैम्पडन की जीवनी क्लेरेंडन नामी इतिहास लेखक ने लिखी है यह महाशय हैम्पडन के शत्रु थे और घटनाओं के बदलने और पक्षपात से काम लेने में उन विदेशी इतिहास लेखकों के गुरु थे जिन्होंने भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के इतिहास लिखे हैं। तब भी सत्य सत्य ही है कहां तक छिपाया जा सकता है। इसकी जीवनी हमको बताती है:—

१—युवकों को राजनीति से विमुख रखना मूर्खों का काम है। जिनको भविष्य का काम बाल्यावस्था ही में नहीं सिखाया जाता वे उस काम में शंठ रहजाते हैं और उनके माता पिता विश्वास घाती बन कर नर्क गामी होते हैं।

२—देशहित को साधन करते हुए प्राणत्याग करने वालों ही का नाम ऋषि, महात्मा, नबी, रसूल हो सकता है।

अनीस (कवि) ने कैसा अच्छा कहा है।

रहती है मरते मरते वीरों की आनबान।
प्राणों पै खेल जाते हैं लड़के हों या जवान॥

राधामोहन गोकुल जी अग्रवाल

पृथ्वी की अन्य जातियां हमें क्या समझती हैं

—:o:—

अमेरिका की एक सर्वप्रिय पत्रिका में एक विख्यात लेखक यों लिखते हैं:—

"पृथ्वी के किसी देश में भी जब कभी कोई बड़ी दैविक आपत्ति आती है तो जाति पांति के भेद कुछ समय के लिये बिलकुल मिट जाते हैं। जहाज़ों के तबाह हो जाने के समय, दुष्काल में, महामारी आदिक बीमारियों में, भूचाल में तथा आग लग जाने के समय यह बात स्पष्ट दीख पड़ती है। ऐसे समय में कोई इस बात की परवाह नहीं करता कि विपत्ति में पड़े हुये मनुष्य उस ही की जाति वा बिरादरी के हैं वा किसी दूसरी के। सबों के चित्त में दुःखितों की सहायता करने तथा उनके दुःखों को दूर करने की एक पवित्र आकांक्षा प्रज्वलित होती है। किन्तु भारत में जाति पांति के भेद इतने दृढ़ हो गये हैं कि उनके कारण मनुष्य मात्र पर दया प्रकट करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उनका उपकार करने के साधारण भाव वहां के लोगों के चित्तों में नहीं पाये जाते। भारत में अपनी जाति के बाहर कोई मनुष्य किसी दूसरे की ओर भ्रातृ भाव प्रकट करने के लिये बद्ध नहीं है। मनुष्य मात्र के दुःखों को दूर करने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य में स्वाभाविक है। पृथ्वी के सब देशों में मनुष्य और मनुष्य जाति की उन्नति में इस स्वाभाविक इच्छा ने बहुत कुछ भाग लिया है, किन्तु भारत में इस पवित्र स्वाभाविक वासना के स्थान पर एक दूसरे के प्रति घृणा ही दीख पड़ती है। प्रत्येक जाति के लोग अपने से छोटी जाति की ओर घृणा प्रकट करते हैं, उनसे ऊंची जाति वाले उनकी ओर घृणा दिखलाते हैं इस प्रकार सब अपने २ दायरे में बन्द रहते हैं और उस दायरे से बाहर उनको किसी मनुष्य की ओर भ्रातृ भाव नहीं होता। भारतवर्ष में जाति भेद, एक जाति का दूसरी जाति की ओर द्वेष, काहिलों का प्रभुत्व तथा उद्यम करने वालों का दासत्व हद्द को पहुंच गया है। और इसका फल भ्रातृ भाव तथा ऐक्य का अभाव है।"

ऊपर के वाक्यों पर टीका करते हुए दिसम्बर मास की माडर्न रिव्यू में सन्त निहाल सिंह लिखते हैं किः—

"भारतवासियों पर यह एक बड़ा भारी झूठा दोष लगाया गया है। किन्तु यदि इस बात में कुछ भी सच है तो उसको दूर करने की भारतवासियों को पूरी २ चेष्टा करनी चाहिये"।

हमें इस पर अधिक टीका करने की आवश्यकता नहीं दीख पड़ती। शोक से मानना पड़ता है कि अपने अवगुणों के कारण हमें अन्य जातियों के सामने लज्जा से सिर झुकाना ही पड़ता है। किन्तु सन्तोष इस बात का है कि पुराने लोगों के अड़ङ्गों की परवाह न कर हमारे युवक अब सब प्रकार की कुरीतियों को त्याग कर अपने में जातीयता और एकता उत्पन्न करने का दृढ़ प्रयत्न कर रहे हैं। युक्तप्रान्त के गत वर्ष के अकाल के समय में लाला लाजपतराय वालण्टियरों ने इस बात का काफ़ी परिचय दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्वीकार

हिन्दी केमिस्ट्री

बाबू महेशचरण सिंह सम्पादित

इस ग्रन्थ के निर्माण कर्ता महाशय ने जो परिश्रम किया है उसके लिये उन्हें जितना धन्यवाद दिया जाय सब उचित है। केमिस्ट्री अर्थात् रसायन शास्त्र का ऐसा ग्रन्थ हिन्दी में अब तक किसी ने न रचा था। स्कूल क्या बल्कि कालेज के छात्रों को भी जिन्होंने साइन्स लिया है इस पुस्तक से लाभ पहुंच सकता है। अंगरेज़ी के वैज्ञानिक शब्दों का एक तरह पर अपनी भाषा में अनुवाद भी कर दिया गया है जिससे पढ़ने वालों को समझने में बड़ी सुगमता कर दी गई है। ग्रन्थ यह अपने ढंग का बिल्कुल निराला है। मूल्य ३॥)

पता—बाबू महेशचरण सिंह बी० ए० एम० एस० सी०

नागरीप्रवर्धनी सभा—प्रयाग

गर्भ रक्षा

डाक्टर प्रसादीलाल झा रचित—गर्भवती के गर्भ की रक्षा के उपाय इसमें बहुत अच्छे दिये हैं। आयुर्वेद और डाक्टरी दोनों की रीति से गर्भ रक्षा के उपाय इसमें दिये गये हैं। पुस्तक यह बहुत उत्तम है मूल्य ।) पर हिन्दीप्रदीप के ग्राहकों को डा० व्य० सहित =)॥ में मिलैगी पता—हरदेवनारायण झा गोसांई टोला—इलाहाबाद

परिचर्या प्रणाली

डाक्टर महेन्दु लाल गर्ग लिखित। काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित। इसमें रोगी के पथ्य आदि का नियम तथा रोगी की यथोचित सेवा आदि के प्रकार उत्तम रीति पर दिये गये हैं हिन्दी इसकी सरल और शुद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-दर्पण

स्त्रियों और लड़कियों के पढ़ने योग्य हिन्दी भाषा में पहिला

मासिक पत्र ।

धर्म, साहित्य, सामाजिक सुधार, राजनीति आदि

विषयों पर अधिकतर

स्त्रियों ही के लेख

इस पत्र में लिखे रहते हैं ।

मूल्य डाक व्यय सहित साल भर के लिये २।) एक प्रति ।)

सम्पादिका—श्रीमती रामेश्वरी देवी

मैनेजर—श्रीमती कमला देवी

पता—१३ सिटी रोड—प्रयाग

"श्री वेङ्कटेश्वर समाचार" लिखता है:—"कन्याओं और महिलाओं के लिये यह पत्र अत्युत्तम है और उपयोगी है। हम बड़े आदर से इसका स्वागत करते हैं। समस्त शिक्षित घरानों में इसको जगह मिलनी चाहिये। हमारा ख़याल है कि यदि यह पत्र चलता रहा तो स्त्री शिक्षा की बहुत बड़ी उन्नति होगी।"

इसी प्रकार से और और अङ्गरेज़ी और हिन्दी पत्र लिखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मयोगी।

हिन्दी भाषा

में

भारत राष्ट्रीय धर्म का सब से उत्तम पत्र

(प्रत्येक अष्टमी को प्रयाग से निकलता है)

सम्पादक

श्रीयुत सुन्दरलाल जी बी० ए०

यह पत्र प्राचीन वैदिक धर्म की मर्यादा को सामने रखते हुए भारत राष्ट्रीय पक्ष के सिद्धान्तों पर निर्भयता के साथ विचार प्रकट करता है।

वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित केवल २)

मिलने का पता:—

मैनेजर "कर्मयोगी"

इलाहाबाद।

५६ [illegible] के चौक इलाहाबाद में सुन्दरलाल के प्रबन्ध से छप कर प्रकाशित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री

वन्देमातरम्

हिन्दी प्रदीप

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजनीति इत्यादि के विषय

में

हर महीने की अमावस्या को प्रयाग से निकलता है ।

शुभ सरस देश सनेह पुरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

सम्पादक—पं० बालकृष्ण भट्ट

जि० ३१ { पौष बदी अमावस्या मङ्गलवार सम्वत् १९६६ } सं० ३

विषय सूची ।

१—राजा और प्रजा में सम्बन्ध ... १
२—उन्नति के चार द्वार ... ४
३—गायत्री और ब्राह्मण ... ६
४—भारताष्टक (कविता) ... ७
५—पाली भाषा ... ८
६—हमारे पण्डितों की निराली सृष्टि ... १०
७—युधिष्ठिर को द्रौपदी का प्रोत्साहित करना (कविता) १२
८—पृथु चरित्र नाटक ... १४
९—रेशम का व्यापार ... १७
१०—श्रीयुत् गन्धी के कारावास की कहानी ... १८
११—रत्न हानि ... २७
१२—चित्त और चक्षु का घनिष्ट सम्बन्ध ... २९
१३—प्रजा ही राजा को बढ़ाती है ३२
१४—श्रीकृष्ण और राजनीति ३५
१५—मूर्खता का सौदा .. ३८
१६—प्राप्ति स्वीकार ... ४०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोटिस।

जिन सज्जनों के पास यह अङ्क बतौर नमूने के भेजा जा रहा है उन्होंने यदि अगले अङ्क के निकलने तक कोई उत्तर न दिया तो समझा जावेगा कि वे ग्राहक होना स्वीकार करते हैं और "हिन्दीप्रदीप" का अगला अङ्क उनकी सेवा में वी० पी० द्वारा भेजा जावेगा, हमको पूर्ण आशा है कि वे लोग वी० पी० को स्वीकार कर बाधित करेंगे।

मैनेजर—"हिन्दीप्रदीप"

हिन्दीप्रदीप का

मूल्य १ साल का डाक व्यय सहित साधारण लोगों से २॥)

परन्तु हिन्दीप्रदीप के ३० वें वर्ष के ग्राहकों से इस वर्ष के लिये केवल २) लिया जावेगा।

राजा महाराजा और तालुकेदारों से ५)

सरकार अङ्गरेज़ी, सरकारी अफ़सरों तथा दफ़्तरों से २५)

एक प्रति का मूल्य ।)

मिलने का पता

मैनेजर—"हिन्दीप्रदीप"

प्रयाग पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

जि० ३१ { पौष बदी अमावस्या मङ्गलवार सम्वत् १९६६ } सं० ३

राजा और प्रजा में सम्बन्ध ।

प्रजां संरक्षति नृपः सा वर्द्धयति पार्थिवम् ।
वर्द्धनात् रक्षणं श्रेयस्तदभावे सदप्यसत् ॥

राजा प्रजा की रक्षा करता है प्रजा राजा को बढ़ाती है । परन्तु बढ़ाने से रक्षा का काम अधिक कल्याणकर है इसलिये कि रक्षा न हो तो जो है वह भी न रहे ।

तो सिद्ध हुआ कि राजा का काम अधिक सराहने योग्य है । पेड़ में जड़ बनी है तो सींच कर हम उसे बढ़ा भी सक्ते हैं किन्तु जड़ में पानी दे कोई सींचने वाला अवश्य चाहिये तब प्रजा का काम भी राजा के काम से कम उपकारी नहीं है । सच तो यों है कि राजा और प्रजा दोनों में परस्पर अन्योन्याश्रय है । बल्कि प्रजा ही से राजा अन्वर्थक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। "राजृ दीप्तौ" से राजा बना है अर्थात् प्रकाश करने वाला। अन्धकार में दीपक के पहुंचते ही सब प्रकाश हो जाता है पर दीपक में तेल छोड़ उसके प्रकाश को बुत जाने से बचा रखने वाला भी तो कोई चाहिये।

अस्तु यह तो राजा के शब्दार्थ का विवरण हुआ अब प्रकृतमनुसरामः तात्पर्य यह कि जब राजा को प्रजा पर छोह होता है तब प्रजा भी राजा को प्राणपण से सेवती है और अपने को राजा के अधीन रख सब भांति उसके शासन के अन्तर्गत हो रहा चाहती है और यह भी तो संभव है जब शिशिर काल के दिनमणि सूर्य सदृश उसका मृदु शासन हो। मुलायमीयत का बर्ताव न रख जो राजा प्रजा को दबा के रखना चाहता है उसे प्रजा जी से न चाहेगी। इस समय शासन प्रणाली के मुखिया लोगों की राय कुछ ऐसी ही मालूम होती है कि वे इसी को राजत्व मान रहे हैं कि जहां तक हो कड़ाई रक्खो और ऐसा लोगों को दबा के रक्खो कि उभड़ने न पावें और इसीके अनुसार नये नये २ बहुत से नियम गढ़ दिये गये और गढ़ते चले जा रहे हैं। किन्तु इससे शासन में स्थिरता होने के बदले राजा प्रजा दोनों में प्रेमरज्जु का बन्धन ढीला पड़ रहा है और दोनों में एक तरह की गांठसी पड़ती जा रही है। शासन की श्रेष्ठता और उमदगी तो तब थी कि लोग भूल गये होते कि हम किसी विदेशी से शासित हैं। प्रारम्भ में जो अंगरेज़ी राज यहां जमा उसका यही कारण था कि लोगों को यह ज्ञान ही न था कि हमें विदेशी शासन कर रहे हैं और न इतनी कड़ाई तब थी। उस समय लोग मौखिक राजभक्ति Lip loyalty वाले न थे वरन सच्चे राजभक्त थे। लोग सब भांति सुखी थे। राजा और प्रजा में बराबर का बर्ताव था राजकीय दल वाले प्रजा के मुखियाओं से खुल के मिलते थे। दोनों में शासक और शासित का भाव तब इतना प्रबल न था। कहावत है "ज्यों २ भीजे कामरी त्यों २ भारी होय"। ज्यों ज्यों शासक मण्डली में जेतृत्वभाव जगह करने लगा त्यों २ इधर से भी खींच होने लगी। विशेष कर उस दशा में जब यह ध्यान आता है कि इंडिया ही के बदौलत इंगलैण्ड की इतनी श्री वृद्धि है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जो देश इङ्गलैंडेश्वर महाराज सप्तम एडवर्ड की मुकुट का देदीप्यमान मणि (Brightest jewel of the crown) समझा जाता है। दूसरे ऐसा दोष है कि वह परिणाम बुद्धि को नहीं पास आने देता। दोनों के कुभाव में तनज़ुली की कौन कहे तरक्की होती जाती है। अब इस समय राजा प्रजा दोनों में एक तरह का कंपिटीशन सा देखा जाताहै इसमें सन्देह नहीं कंपिटीशन का होना एक प्रकार सभ्य शासन का चिन्ह है। फिर भी प्रजा के पक्ष में इतनी दुर्बलता और कमज़ोरी है कि होड़ में प्रजा का कृतकार्य होना दुर्घट सा है और गवर्नमेंट की कृपादृष्टि तथा सहायता सापेक्ष्य है। गवर्नमेंट हमें सहायता देने में इतनी कृपणता (Stinginess) न प्रकाश करे और पूर्णतया उदार भाव दिखलावे तब हमें शिकायत का मौका ही क्या है यह कहना महा पाप है कि सर्कार हमें सहायता नहीं देती। अन्तर केवल इतना ही है कि उस में भी वह अपने लाभ से नहीं चूकती। इसलिये कि कोई ऐसा सर्कारी महक़मा नहीं देखा जाता जिसमें शुद्ध प्रजा का लाभ और हित हो। "मियैं की चूँदी मियैं का तेल" में भी वह अपना साझा बहुधा लगा ही तो लेती है और यही सब राजा और प्रजा में अनबन उपजाता है। राजकीय दल वालों में बहुत से ऐसे हैं जिन्हें इस अनबन का कुछ ख़याल नहीं है। प्रभुत्व के ज़ोर में भरे प्रजा के दल को दबाना ही अपना विजय और कृतकार्यता मानते हैं पर परिणाम इसका श्रेयस्कर नहीं प्रतीत होता। गीता के सिद्धान्त के अनुसार जिसका आदि, मध्य, अन्त तीनों बनते हों उसी को बनना कहेंगे। इसी से नीति कुशल लोगों का मत है कि ब्रिटिश साम्राज्य की स्थिरता यहां प्रजा के सन्तोष पर निर्भर है। इस समय का बर्ताव देख अनुमान होता है कि वह सन्तोष कोसों दूर है। इसी से हम कहते हैं कि प्रजा का काम राजा के काम से अधिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नति के चार द्वार।

:0:

उचित न्याय, वाणिज्य की वृद्धि, कला और विज्ञान की तरक्की, और पुरावृत्त का पूर्णज्ञान ये ४ उन्नति के द्वार हैं। "उचित न्याय" से मालूम होता है कि देश में स्वास्थ्य और अमन चैन है। "वाणिज्य या तिज़ारत" से मुल्क की दौलत का पता लगता है। "कला तथा विज्ञान" बतलाता है कि इस देश के मनुष्य कहां तक उद्यमी हैं और कितनी तरक्की की है "पुरावृत्त या इतिहास" प्रकाश करता है कि एक देश या जाति का दूसरे देश तथा जाति से क्या तारतम्य है और पहिले से अब में क्या फ़र्क़ आ लगा। इस समय सभ्य देश की सभ्यता और उन्नति के यही चार Standard (पयमाना) हैं। अब इन चारों को हम अपने देश हिन्दुस्तान में टटोलते हैं। हमारे यहां दाम में उचितानुचित आ टिका है जैसा दाम खर्चो वैसा न्याय लो। दाम पास हो नामी से नामी वकील बैरिस्टर करो, स्टैम्प का ख़र्चा उठाओ तुम्हारा भरपूर न्याय दूध का दूध पानी का पानी सा होने में कसर न रहेगी। अब तिजारत को लीजिये तो बाहर जाना धर्म में बट्टा लगाना है। कलकत्ते का माल बम्बई और बम्बई का कलकत्ते पहुंचाओ बस रोज़गार का छोर है। विदेशियों ने यहां जो काम शुरू किया उसमें वे भरपूर कृतकार्य हुये एक का चार करते हुये मालामाल हो गये। हम लोगों में रोज़गार सूदख़ोरी का लोगों को पसन्द है लाखों का गवर्नमेंट पेपर लिये रक्खे हैं चैन से ज़िन्दगी काटते हैं। रोज़गार में माल के ख़रीद फ़रोख़्त की सिरदर्द में कौन पड़ने जाय। जो कुछ थोड़ा बहुत रोज़गार यहां है भी वह निरी हम्माली या दलाली मात्र। बिलाइत के बड़े २ कारख़ानों में जो माल तैयार हो रहा है उसकी मेहनत का फाइदा वहां के कारीगर और कुली उठा रहे हैं। हमारे यहां व्याकरण और दर्शनों की अलबत्ता बड़ी उन्नति है। जिससे देश में धनवृद्धि के विचार से कोई सरोकार नहीं। शंकर का वेदान्त चाहो भले ही पढ़ा करो, संसार को मिथ्या स्वप्न सदृश नश्वर मान बैठ रहो तब उन्नति और देश में धनवृद्धि का ख़याल कैसा। "मूलं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नास्ति कुतः शाखा" संसार जब मिथ्या ही है तब इसकी उन्नति कैसी। कला और विज्ञान को लीजिये तो यूरोप और अमेरीका के आधुनिक विज्ञान जिसके ईजाद करने वाले इस समय खोदाई का दावा कर रहे हैं और अपनी अनेक वैज्ञानिक वैभव की शक्ति से बिजली और भाफ से काम लेते हुये लोगों को अचरज दिला रहे हैं। सो तो यहां कभी रहा नहीं। हां ६४ चौंसठ कला इत्यादि अलबत्ता ग्रन्थों में लिखी पाई जाती हैं। पिछले दिनों में हाथ की कारीगरी भी यहां बहुत चढ़ी बढ़ी थी सो सब भांत २ की कला की ईजाद से करीब २ मिट सी गई। स्वदेशी २ चिल्लाने वाले थोड़े दिनों से उभड़ चले हैं सही बहुत कुछ यत्न में हैं कि देश की कारीगरी को फिर उभाड़ें पर विदेशी माल सस्ता और सुथरा होने से कोई कला नहीं लहती देख पड़ती। न हमारे फेशनपसन्दों को हमारे यहां की कारीगरी भाती है। ठीक मितीवार पुराने इतिहास हमारे यहां सिवाय राजतरंगिणी के और कुछ हई नहीं। पुराणों में ब्राह्मणों ने अलबत्ता किस्से कहानियों के ढंग के ऐतिहासिक पुरावृत्त गढ़ रक्खे हैं। जो केवल पारमार्थिक साधन और धर्म संबन्धी हैं। उन्हीं से टटोल टटाल आज कल के इतिहास-वेत्ता अनेक बातों का पता लगाते हैं पर वह सब ऐसा दर्पण सा नहीं है जैसा इस समय के अनेक पुराविद् स्पष्ट रीति पर लिख रहे हैं। यही हाल हमारे यहां भूगोल का भी है। सात खण्ड और नौ द्वीप का ऐसा भारी चर्खा पुराण वालों ने चला रक्खा है कि सिवाय हिन्दुस्तान के और किसी भूभाग के भूगोल का कुछ पता ही नहीं लगता। तब हम कैसे पता लगा सक्ते हैं कि हिन्दुस्तान और २ देशों के मुकाबिले कब कितनी तरक्की कर चुका है। तो निश्चय हुआ उन्नति के पूर्वोक्त चारो द्वार यहां वैसे खुले नहीं है जैसा उन जातियों के हैं जिनके साथ बाज़ी लगाय हम तरक्की के मैदान में कूदने का मन कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायत्री और ब्राह्मण।

द्विज मात्र गायत्री के अधिकारी हैं किन्तु ब्राह्मणों में ब्राह्मणत्व बल्कि ब्राह्मणत्व का सारभूत वेद माता गायत्री ही है। मनु ने तो गायत्री इस तीन अक्षर पर इतना ज़ोर दिया है कि "गायतात् त्रायते यस्माद्गायत्री सा उदाहृता" केवल गान अर्थात् जप मात्र से त्राण अर्थात् रक्षा करती है इसी लिये गायत्री कहलाई। गायत्री को जप करते २ विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गये। ब्राह्मण इस समय बहुत गिर गये और अनेक अंशों में सच्ची ब्राह्मणता से च्युत हो गये फिर भी गायत्री के बदौलत उनमें कुछ न कुछ ब्राह्मणाभास बना ही तो है। "गायत्री मात्रसारोपि वरं विप्रः सुयंत्रितः" भोजन कुभोजन और कुदान से अपने को कसे हुये गायत्री जानता हो तो वह ब्राह्मण उससे श्रेष्ठ है जो चारो वेद पढ़ा है पर दान कुदान और भोजन कुभोजन में संयम नहीं रखता। तो सिद्ध हुआ गायत्री ही ब्राह्मण में तत्व है। "कुर्यादन्यं न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते" कृच्छ्रचान्द्रायण आदि कठिन से कठिन व्रत और अग्निष्टोम आदि यज्ञ न कर केवल गायत्री जप करने वाला ब्राह्मण मैत्र है अर्थात् न वह किसी का शत्रु है न उसका कोई शत्रु है। जैसा अग्नि से दाहक शक्ति और सूर्य से प्रकाश अलग नहीं हो सकता। उसी तरह ब्राह्मण का गायत्री से नित्य सम्बन्ध है। आर्यों में आर्यता ऋषि में ऋषित्व ब्राह्मणों में ब्राह्मणत्व भी गायत्री ही है। कड़े से कड़ा दान ले ब्राह्मण गायत्री जप कर पचा सकता है। किन्तु खेद होता है कि इन दिनों के दानपात्र ब्राह्मणों ने गायत्री के जप का विसर्जन कर दिया। इसी से चेष्टाहत और बुद्धि के भ्रष्ट हो गये। यह तो अनुभूत है कि गायत्री का आराधन करने वाले को कभी किसी बात का टूटा नहीं रहा और बड़े से बड़े सङ्कट में पड़ कर उद्धार पा गया है। सूर्योदय और सूर्यास्त में किसी एकान्त स्थान या नदी के तट पर बैठ गायत्री जप के साथ सूर्य को अर्घ देने वाला ब्राह्मण जैसा अपने ब्रह्मवर्चस को बढ़ा सकता है वैसा किसी दूसरे अनुष्ठान से नहीं। वैदिक तथा स्मार्तक्रम में गायत्री ही प्रधान है। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उपेक्षा कर तान्त्रिक क्रम का अनुसरण ब्राह्मण के लिये मानो एक दरजा अपने को नीचे गिराना है। तत्व तो यह है कि ब्राह्मणों को सर्वोपरि देख उनकी उन्नति न सह कर किसी ब्राह्मणेतर ने तंत्रों को रचा और उसके द्वारा बड़ी २ सिद्धियों का लालच दिखाय वैदिक मार्ग से उन्हें च्युत कर दिया। तन्त्रों में फसाय ब्राह्मणब्रुव कर डाला। अस्तु इस समय जब हिन्दू धर्म और हिन्दू धर्म के मुखिया ब्राह्मणों पर सब ओर से कुल्हाड़ा चल रहा है और दोनों का ह्रास हो रहा है एक गायत्री ही दोनों को उभाड़े है और प्राचीन आर्य ऋषियों के चलाये क्रम को सींच रही है।

भारताष्टक

जय जय भारत भूमि, भूमि उत्तम सब मांहीं।
तो सम दूजी भूमि और त्रिभुवन में नांहीं ॥ १ ॥
महावीर भे बड़े बड़े तेरी सन्ताना।
भे विद्वान्, भक्त, पुरुषोत्तम तोसे ही मा! नाना ॥ २ ॥
सती भईं अरु वीरा नारी तेरे ही मा! माँहीं।
जैसी और कहूँ नहिँ देखी सुनी पढ़ी हूँ नाहीं ॥ ३ ॥
श्री अर्ज्जुन, अभिमन्यु, भीम अरु भीष्म पितामहुँ।
शिवा, प्रताप, हमीर वीर जिमि भये नहीं कहुँ ॥ ४ ॥
कालिदास सम कविहू भे मा तेरे मांहीं।
जितनी कविता होत सभी उन की परछाहीं ॥ ५ ॥
सूरदास, पद्माकर, तुलसी, हरिश्चन्द्र, विहारी।
जिनकी कविता देख दंग सब हो नर नारी ॥ ६ ॥
श्रीभगवान् कृष्ण अरु राम गौर चन्द्र सुखदाई।
सब प्रगटे तव गर्भ मात! वैकुण्ठ त( ) आई ॥ ७ ॥
जासों बारम्बार तुम्हैं परनाम जु माता।
तव गुण बरणन करने में मा! नेक न आता ॥ ८ ॥
जनमूँ मैं तव मांहि मात हे बारम्बारा।
यही प्रार्थना मोर प्रणामरु है बहु बारा ॥ ९ ॥

श्री गौर चरण गोस्वामी वृन्दावन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाली भाषा

भारत की प्राचीन भाषाओं में एक पाली है और यह महात्मा बुद्धदेव के समय की भाषा है। दाक्षिणात्य बौद्धों के धर्म ग्रन्थ सब इसी भाषा मे हैं। यह संस्कृत से मिलती जुलती भाषा है। यद्यपि यह संस्कृत से निःसृत्य प्राकृती की पूर्वरूप है तौ भी पीछे बौद्धाचार्यों ने इसे बिल्कुल स्वतंत्र भाषा के सदृश बनाने को इसका व्याकरण और कोष आदि पृथक् इसी भाषा में रचा और पीछे इस भाषा में उनका इतना अनुराग बढ़ा कि यहां तक उन्होंने लिख मारा। "सामागधीं मूल भाषाया नरा आदि कल्प के। ब्राह्मणा चाश्रुतालापा संबुद्धा चापि भासिरे।" अर्थात् मागधी वह मूल भाषा है जिसे आदि कल्प के ब्राह्मण और अश्रुतालाप लड़के बिना सुने ही बोलने लगते थे। पर हमारे शास्त्रों में इस भाषा का कहीं उल्लेख नहीं है। नाटकों में जहां बहुत तरह की प्राकृत हैं पाली भाषा का कहीं पता नहीं है। अनुमान होता है महाराज अशोक के समय जो भाषा प्रचलित थी वह इसी पाली का अपभ्रंश थी और अक्षर पाली ही बने रहे इस लिये कि बौद्ध अशोक के समय के जो लेख पाये जाते हैं वह इसी लिपि में हैं। प्रयाग के क़िले में जो लाट खड़ा है तथा बनारस के सारनाथ में जो पुराने ढूहे खोदे गये हैं उसमें भी किसी २ पत्थरों में पाली भाषा के अक्षर हैं।

अनुमान होता है कि बौद्ध पाली जिसका दूसरा नाम मागधी भी है उसे जब बौद्ध लोग आदि कल्प की भाषा ठहराने लगे तब आर्य ऋषियों को भी उससे द्वेष उत्पन्न हुआ और यहां तक पक्षपात आ समाना कि नाट्याचार्य्य भरत मुनि ने भी अपने नाट्यशास्त्र में इसका उल्लेख न किया। किन्तु पाली की कुछ टटोल पतञ्जलि के महाभाष्य से लगती है। जैसा "पस्पशा भाष्य" में पतञ्जलि लिखते हैं "एकस्य शब्दस्य बहवो अपभ्रंशाः। यथा गो शब्दस्य गोणी गोती गो पुत्तलिकेत्यादि" इससे अनुमान होता है कदाचित् महाभाष्य के समय भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साधारण लोगों में यही भाषा बोली जाती रही हो। प्राकृत भाषा के सूत्रकार कात्यायन का ५२ सूत्र है "गोतस्त्रिवा" गो शब्द के स्थान में गोत आदेश हो नस विभक्ति के परे। तो यह भी अनुमान होता है कि कदाचित् महाभाष्य के समय से बुद्ध के समय तक यही भाषा रही हो। महाभाष्य में "गोती" शब्द है या तो लेखक के प्रमाद से गोता का गोती हो गया। उस समय गोती होता था पीछे गोता हो गया वा गोता से गोती हो गया।

पाली और संस्कृत में यद्यपि कारक और व्याकरण के बहुत स्थलों में विभिन्नता है तो भी दोनों में बहुत अधिक समानता है। थोड़ी सी उलट पलट से पाली से संस्कृत और संस्कृत से पाली बन जाती है। मुझे दोनों भाषाओं के अभ्यास से जो थोड़े से नियम ज्ञात हुये हैं उसे आप लोगों के समर्पण करता हूं।

पाली में ऐ और औ नहीं है। श और ष के स्थान में स होता है जैसा महैश्वर्य्यम्—महेसरियम्। महौषधम्—महोसधम्। पश्यति—पस्सति। हर्ष—हरष। भक्त—भत्त। उक्त—उत्त। पुत्र—उत्त। आश्चर्य्य—अच्चरिय। पाली में विसर्ग नहीं होता। अ के अतिरिक्त अन्य स्वर के साथ हो तो लोप हो जाता है पर अ के साथ विसर्ग हो तो ओ हो जाता है। जैसा अग्निः-अग्गिः। रामः—रामो और भी—

संस्कृत	पाली	उदाहरण
स्क	क्ख	भास्करः—भाक्खरो
ष्क	क्ख	शुष्कः—सुक्खो
ध्य	ज्झ	संध्या—संज्झा
ध्व	ज्झ	बुध्वा—बुज्झा
द्य	ज्ज	अद्य—अज्ज
त्य	च्च	सत्य—सच्च
ख्या	खा	संख्या—संखा
त्स	च्छ	मत्सर—मच्छर
स्त	त्थ	हस्त—हत्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत	पाली	उदाहरण
स्थ	ट्ठ	गृहस्थ—गहट्ठ
ष्ट	ट्ठ	पृष्टव्य—पुट्ठव्य
र्ज	ज्ज	आर्जव—अज्जव
स्न	न	स्नेह—नेह
ग्न	ग्ग	अग्नि—अग्गि
र्ग	ग्ग	वर्ग—वग्ग
ष्प	प्फ	पुष्प—पुप्फ
र्क	क्क	अर्क—अक्क
र्व	ब्ब	सर्व—सब्ब

जैसा यूरोप में अङ्गरेज़ी है वैसे ही पाली एशिया की General साधारण भाषा है। जब दो चार बौद्ध धर्म वाले इकट्ठे होते हैं तो इसी के द्वारा आपस में बात चीत करते हैं। मैंने लंका, अराकान, सयाम् और वर्म्मा के रहने वाले बौद्धों को इसी में बात चीत करते सुना है। तिब्बत की तो यह प्रधान भाषा है। वहां के लामा लोगों के धर्मग्रन्थ सब इसी भाषा में हैं। जो संस्कृत जानते हों उनको पाली बहुत सुगम है और हिन्दी के तत्वान्वेषकों के लिये तो यह बड़े ही काम की है। फ़ारस, अरब, तुर्किस्तान, टर्की और कुछ हिस्सा रूस का निकाल दो तो यह एशिया की एक तरह पर साधारण "आम" भाषा कही जा सकती है।

जगन्मोहन वर्मा

हमारे पण्डितों की निराली सृष्टि।

—:0:—

ऐसा मालूम होता है कि सृष्टिकर्ता ने अपनी विचित्र रचना की कारीगरी का नमूना "सेम्पुल" दिखलाने के ख़याल से इन पण्डितों को गढ़ा है। हमारे एक सहयोगी ने "नागरी प्रचारिणी पत्रिका" में इन का चित्र बहुत अच्छा उरेहा है। ये चाहें शहर के हों या गांव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हें "हम आवते हैं" "वह ऐसा किया" "अपाना घर" के शुद्ध करने की कुछ फिक्र नहीं होती। "हिमालय के पीछे क्या है" "महाराज चन्द्र गुप्त कब हुये" "रेल कैसे चलती है" "अङ्गरेज़ हिन्दुस्तान में एकाधिपत्य स्थापित कर यहाँ के सम्राट कैसे हो गये"। "इनके शासन प्रणाली की क्या नीति है" इत्यादि बातों को न ये जानते हैं न जानने का यत्न करते हैं। इनकी समझ में विभीषण अब तक लङ्का में राज करते हैं। कैलास चांदी का पर्वत है। सात खण्ड और नौ द्वीप के उपरान्त दूध और दही तथा शहद का समुद्र इसे चारो ओर से घेरे हैं। पाताल में राजा बलि अब तक राज कर रहे हैं बावन जी उनकी डेहुड़ी पर खड़े २ पहरा दे रहे हैं। हनुमान् जी की पूंछ सौ जोजन लम्बी थी इत्यादि इत्यादि। इनके मन में जो धसी है वह लाख २ उपाय करो कभी हटने वाली नहीं। हमारा उस राजा के यहां ऐसा मान किया गया। हमने उस सभा में इस तरह पर शास्त्रार्थ किया। इतनी दक्षिणा पाया। अमुक यजमान के अमुक यज्ञ में हमी अधिष्ठाता थे। आचार्य बनने का अग्रासन हमी को दिया गया था। यही सब डींग मारते सारा दिन बीत जाता है। सामयिक विषयों तक इनकी पहुंच नहीं। संसार में अपनी स्थिति तक को ये नहीं जानते। आधुनिक सभ्यता से इनका कुछ लगाव नहीं। तालीम से ये कोसों दूर हटे हैं। हिन्दी का नाम लेते ही नाक भौं सिकोड़ते हैं भाखा २ कह घिनाने लगते हैं। "टिड्ढाणञ्" की बुकनी फाकते २ जन्म बीत गया "अवच्छेद का वच्छिन्न" के सिवाय और कुछ जाना नहीं। देशभाषा के ज्ञान से सर्वथा शून्य हैं। एक पत्र लिखैंगे तो २० अशुद्धियां से कम न रहेगी प्रथम और मध्यम परीक्षा में लड़कों को फेल होते प्रायः हिन्दी अनुवाद ही में देखा है। प्राचीन भाषा संस्कृत में कोई विचार नहीं करता। विचार लोग उसी भाषा में करते हैं जो बोली जाती है जिसे वे बोलते और सुनते हैं। अतः जब तक इनकी बोलने की भाषा क्रमबद्ध और भावव्यंजक न होगी तब तक इनमें विवेचना शक्ति न आवेगी। पर हिन्दी को जब ये भाखा कह घिनाते हैं तब कैसे सम्भव है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इनमें विचारशक्ति की प्रौढ़ता आवे। बङ्गाल और महाराष्ट्र देश के पण्डित ऐसे नहीं हैं वहां के विद्वान् देश काल को समझते हैं और देशभाषा के ज्ञान में भी प्रौढ़ हैं। हमें विशेष खेद काशी के पण्डितों का है जो कोरी पण्डिताई के सिवाय देश काल से सब भाँत अनभिज्ञ हैं। थोड़े २ में लोभ के वश हो रही सही अपनी क़द्र और भी खो बैठें। इन्हें रुपये दो झूठी सच्ची जैसी चाहो व्यवस्था ले लो। न इनका पाण्डित्य सर्वव्यापी होता है। बहुधा तो व्याकरण ही रट २ जन्म गंवाय देते हैं। साहित्य, दर्शन आदि की ओर से कोरे रहते हैं। सभा में हम शास्त्रार्थ करने लायक हो जांय इस लिये शेखर की एक २ पंक्ति घोख घोख उमर की उमर बिता देते हैं और अब तो एक नया क्रम परिस्कार का चल पड़ा है। "अवच्छेद का वच्छिन्न"ही मात्र सीखते हैं। सभाओं में शास्त्रार्थ करना आवे इसी पर इनका लक्ष्य रहता है। बोध होने के लिये ये पढ़ते ही नहीं। इसीसे लोक चातुरी से शून्य रह देश काल बिलकुल नहीं समझते। तब इन पण्डितों को निराली सृष्टि का कहना अनुचित नहीं है।

युधिष्ठिर को द्रौपदी का प्रोत्साहित करना

(गताङ्क से आगे)

जो शय्या पग धरत स्वर्णमय जटित रतन से।
सुनते मंगल गान आप नित गायक जन से॥
हाय! आप सोइ महा कुशैली भुवि सोते हो।
और शृगालन अशुभ शब्द सुन नित जगते हो॥ १७॥
हे नृप! यह तव देह द्विजों की जूठन पाकर।
जो लगती थी पूर्व रम्य औ परम मनोहर॥
सोई खाते हुए जंगली कंद, मूल, फल।
होती जाती आज सहित यश के अति दुर्बल॥ १८॥
वे पग जो मणि पाद पीठ रक्खे जाते थे।
औ नृप मस्तक मौलि गंध से बस जाते थे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही मृगों से चरे हुए कुश के खूंटों पर।
पड़ते पड़ते छिन्न हो गये अहो शान्तिधर ॥ १९ ॥

केवल है यह दशा शत्रु कारण हि आप की।
इससे सीमा मन में मेरे नहीं ताप की ॥
"जिनकी सम्पति वीर्य शत्रु के हाथ लगी है।
तिन मानिन को अति बिपत्ति भी उत्सवही है" ॥२०॥

हे नृप! तिससे शान्ति भाव की मति निवारिये।
शत्रु बधन हित वही तेज अब फेरि धारिये ॥
"यह तो मुनिगन प्रथा शान्ति से काज बनाते।
किन्तु कभी भी इस प्रकार नृप जय नहिं पाते ॥ २१ ॥

तेजस्विन में श्रेष्ठ आप से वीर यशोधन।
दुसह पराभव पाय रहैं यदि तुष्ट सदा मन ॥
तब तो हे नृप! जगत स्वाभिमत्ता फिर मानों।
निराधार हो नष्ट हुई सी निश्चय जानों ॥ २२ ॥

यदि हतविक्रम बहुत दिनन से हुये जानते।
और शान्ति को ही सुख साधन अबहुं मानते ॥
तो फिर धनुही बाण राज का चिन्ह त्याग कर।
बन में करिये हवन न क्यों बन रूप जटाधर ॥ २३ ॥

तव अपकारी शत्रु चाहता जबहि अहित है।
अवधि प्रतीक्षा तब तो करना नहीं उचित है ॥
क्योंकि शत्रु पर विजय चाहते नरपति जो हैं।
सदा संधि दूषित करते कोई बिधि सोहैं ॥ २४ ॥

दैवयोग बश हतप्रताप से आज खिन्न मन।
औ अगाध दुखसागर के बिच मग्न अकिंचन ॥
ऐसे नृप तुम निकर शत्रु तम से प्रभात सम।
दिनकृत लक्ष्मी लहौ आप यश सहित शुभागम ॥ २५ ॥

माधव शुक्ल

इति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथु चरित्र नाटक

(गताङ्क से आगे)

दूसरा अङ्क

(स्थान भृगु मुनि का आश्रम)

(भृगु मुनि आसीन)

भृगु—क्या कारण कि हमारा आश्रम इन दिनों निरन्तर जन संचार विहीन सा रहता है! मनुष्य की ! कौन पशु पक्षी तक उदासीन से मालूम होते हैं। काल विपर्यय सा हो गया है। ठीक समय पर अच्छी वर्षा न होने से आश्रम पादप सब मुरझाने से हैं। जान पड़ता है यह सब राजा के उपद्रव का परिणाम है क्योंकि अनावृष्टि तथा प्रजा में आधि, व्याधि, रोग, शोक आदि कष्ट का फैलना बिना राजा के अत्याचार के नहीं होता। जब राजा ठीक २ अपने राजधर्म पर आरूढ़ रह प्रजा का शासन करता है तब सब लोग मुदित मन वर्ण और आश्रम के अनुसार चलते हुये अपने २ काम में लगे रहते हैं। निरन्तर अच्छी बरसात होने से अन्नकष्ट कहीं नाम को नहीं रहता। पुष्ट तृण वीरुध चर गौवें भरपूर दूध देती हुई क्षीरणी इस नाम को चरितार्थ करती हैं। ऋतु विपर्यय न होने से पादप, फूल, फल समृद्धि से सुसम्पन्न रहते हैं। राजा में लोभ के आते ही प्रजा के सुख समृद्धि का अन्तर्भाव हो जाता है तो निश्चय इस समय कुछ राजोपद्रव है जिससे सब लोग दुखी हो रहे हैं।

(कुछ नागरिकों का प्रवेश)

भृगु—आप लोगों का आगमन इस समय बहुत ही सामयिक हुआ। मैं यह सोचता ही था। आप लोगों के कुशल क्षेम में तो कोई अड़चन नहीं है। उदासीन, तन छीन, मन मलीन से क्यों हो। मुख की कान्ति मलीन हो रही है। तुम लोगों के चेहरों पर हम आज वह दमक नहीं पाते जैसा पहिले देखते थे। शोक और चिन्ताग्रस्त से सब लोग प्रकट होते हो क्या कारण है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान नागरिक—मुनिवर! आप तो त्रिकालदर्शी हैं। अपने योग-बल से मनुष्य के अन्तःकरण की बात जान सकते हैं तब हम लोगों को अपनी विपत्ति का निवेदन पिष्टपेषण है। ऋषि प्रवर! हम लोगों पर जब २ संकट आ पड़ा है तब २ आप ही सरीखे महात्माओं ने हम लोगों को संकट से उबारा है। ऋषिराज! इस समय राजा के अत्याचार से हम लोग अकुला रहे हैं। कहीं शरण न देख आप के शरण में आये हैं। हे अशरण शरण! अब आप के हाथ में हमारा निस्तार है।

भृगु—आप सब लोग अत्याचार से पीड़ित हैं। इसका भान हमें पहिले ही से हो चुका है। कुल परम्परागत राज का होना ही बुराई है। अच्छा होगा कि सब लोग अपने मन से चुन कर किसी को राजा करें। पहले एक बार इसे और चल कर समझावें कदाचित् अब भी अपना सब कुढंग छोड़ क्रम पर आ जाय। जल्दी में आय किसी काम को कर डालना बुद्धि का काम नहीं कहा जाता।

सहसा विदधीत नक्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृष्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः॥

जल्दी में आय किसी काम को न कर डाले। बिना विचारे किसी काम के करने में बहुत विपत्ति में पड़ने का भय है। सोच विचार काम करने वालों को गुण की लोभी सकल संपत्ति आप से आप आय बर लेती है। अच्छा होगा कि हमारे इस प्रयत्न की सफलता के लिये परमात्मा की प्रार्थना पहिले कर ली जाय। अच्छा होगा कि आश्रम के और ऋषियों को भी अपने साथ ले एक समाज बना लें जिस में हम सब लोगों की एक जथा बन जाय क्योंकि कहा है "पंचे लीजे कीजे काज। हारे जीते नाहीं लाज।" दूसरे समुदाय में शक्ति होती है किन्तु इसका यत्न पीछे करेंगे। इस कार्य में हमारा उद्यम सफल हो इस लिये आओ पहिले कुछ हरिकीर्तन करलें।

जब २ गाढ़ परचो निज जन पर तब तब भये सहाई।
नरहरि बन प्रह्लाद उबारे बामन ह्वै असुरारी॥
रामचन्द्र ह्वै रावण जीत्यो सागर पन्थ बनाई॥ जब २ गाढ़०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परशुराम अभिराम नाम धरि हैहय कुल संहारी।
एकिस बार निक्षत्र क्षेत्र करि धरा भार हलकाई ॥ जब २ गाढ़०॥
हलधर द्वापर में अवतरे धेनुक दैत्य विदारी।
द्विविद प्रलम्ब आदि खल खण्डे कृष्णाग्रज कहलाई ॥ जब २ ॥
कंस, केशि, चाणूर दुष्ट दल मर्दन काज विचारी।
पूरन ब्रह्म अखण्ड रूप ह्वै उपजे कुंवर कहाई ॥ जब २ गाढ़० ॥

(एक स्त्री और एक पुरुष का प्रवेश)

पुरुष—सूरत से तो मैं अधेड़ बूढ़ा मालूम होता हूं क्योंकि डाढ़ी और मूछ के बाल खिचड़ी हो गये पर ताक़त और हिम्मत में जवानों के भी कान काटता हूं। मेरा नाम दुर्दैव है और इस चिड्डो का अनीति—मैं तो बूढ़ा हो गया पर यह अभी श्यामा षोड़श वार्षिकी जवान पठिया ही बनी है। यह मेरी व्याही तो नहीं है पर समय २ जब तब काम निकाले को बहुत है। आओ! प्यारी! प्रिये! आज रूठी सी क्यों हो (स्त्री को अपनी ओर खींचता है)।

स्त्री—(हाथ से उसे हटाती हुई) दुरमुये! निगोड़ा! मेरे पीछे पड़ा है। जहां २ मैं जाती हूं तहां २ यह भी दाल भात में मूसलचन्द सा आ कूदता है। यौवन मदमाती रूपगर्विता कहां मैं कहां खबीस सा मुंह बनाये दीन हीन निरा गवांर यह। जहाँ २ जाती हूं तहां २ अपने साथ इसे पाती हूं। मारे लाज और शरम के गड़ी जाती हूं।

पुरुष—हां! हां! अलबत्ता पर मेरे बिना तुम कहीं भाती हो। सब के सामने तो मुझे सरकाती हो पर भीतर ही भीतर सैन और इशारे में मुझे बुलाती हो। क्यों बात कैसे पते की कहा कि आंचल से मुंह ढांप मुसकिराती हो। ज़रा इधर ताक (अपनी ओर उसे खींचता हुआ) मत अब और ओर झांक। हम तो तेरे हुस्न पर बदनाम हो चुके। "हम तालिबे शोहरत हैं हमें नाम से क्या काम। बदनाम अगर होंगे तो क्या नाम न होगा"।

स्त्री—(स्वगत) कहता तो यह सब ठीक है इसकी एक २ बात बावन तोला पाव रत्ती है। जब २ जिस २ ने अनीति किया अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पराये की विषम बुद्धि रक्खा। लोभ के प्रवश हो अत्याचार और अन्याय पर उतारू हुआ। परिणाम उसका दुर्दैव के अतिरिक्त और क्या हुआ। दुर्योधन ने राज के लोभ से पाण्डवों को पराया माना। कौरवों को अपना; अन्त में दुर्दैव वहां जा बगरा और परिणाम ऐसा भारी संक्षय महाभारत हो गया। लोकरावण रावण ने अत्याचार कर अपने विक्रम और दैव दुर्लभ वैभव के गर्व में सब को दबाय के रखना चाहा अन्त में परिणाम सर्वनाश का उसने भी पाया। और भी कंस आदि जितने अत्याचारी हुये दुर्दैव ने सबों को जा घर दबाया (प्रगट) अच्छा! तो अब तू चाहता क्या है?

पुरुष—हां अब आई राह पर। बहुत कुछ इधर उधर उछलती खच्चरी सा कावा मारा और हमारे चंगुल से अलग हो भागना चाहा पर तेरी एक भी न चली। चाहता यही हूं कि यह तो जानती ही है कि राजा बेणु जैसा अनीति पर कमर बांधे है तो वहीं अब हमारा डेरा होगा। चल जल्दी यहाँ ऋषियों के न्यायाचरण की अग्नि में अङ्ग झुलसा जा रहा है। यहां हम तुम दोनों को ठिकाना नहीं है (प्रस्थान)।

रेशम का व्यापार

रेशम की उत्पत्ति सबसे अधिक चीन में तब जापान मे फिर इटली और फ्रांस में होती है। सन् १९०९ में निम्नलिखित किन (Kin) रेशम इन देशों से बाहर गया १६८ किन का एक टन होता है।

देश	किन
चीन	११०२२४००
जापान	९३५४३६४
इटली	८०१३३००
फ्रांस	११००६००

यद्यपि रेशम की उपज चीन, इटली आदि प्रदेशों में होती है तौ भी जापान के सदृश इस व्यापार में किसी ने उन्नति नहीं की। तीस वर्ष पहिले जापान में रेशम की उपज १४५२३५ किन थी पर १९०७ में कुल उपज वहां १४५५८९०० किन हुआ जिस में से ९३५४३६४ किन बाहर को गये यहां उन्नति देख अन्य देश वासियों के मुंह से पानी छूटता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत् गंधी के कारावास की कहानी ।

प्रस्तावना

आज कई वर्षों से भारत माता के जो सहस्रों सपूत अपने देश तथा राष्ट्र के गौरव और मान की रक्षा करने के लिये ट्रांसवाल सरकार के अन्याय के विरुद्ध 'निष्क्रिय प्रतिरोध' नामक शस्त्र द्वारा घोर संग्राम कर रहे हैं। उन सब के नेता और शिरोमणि देशविख्यात श्रीयुत् गंधी हैं। निस्सन्देह अपनी देशभक्ति तथा तपस्या के कारण गंधी महाशय और उनके साथी हम सब के लिये पूजनीय हैं। ट्रांसवाल सरकार ने ट्रांसवाल में रहने वाले भारतवासियों के लिये जो अमानुषिक नियम बनाये हैं उन से आज प्रत्येक भारतवासी भली भांति परिचित हैं। ट्रांसवाल में रहने वाले भारतवासियों ने वीरता के साथ इन नियमों के पालन करने से इन्कार कर दिया और इन घृणित नियमों के पालन करने के बजाय कारावास दण्ड भोगना स्वीकार किया। आज २५०० के लग भग भारतवासी इसी कारण कारावास का कष्ट भोग चुके हैं और अब भी भोग रहे हैं। इसी का नाम 'निष्क्रिय प्रतिरोध' है। आज हम निष्क्रिय प्रतिरोध के अवतार "श्रीयुत् गंधी के कारावास की कहानी" 'मार्डर्न रिव्यू' से अनुवाद कर पाठकों की भेट करते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि हमारे देशवासी राष्ट्र के गौरव की रक्षा के निमित्त इस महान कष्ट सहन की कथा से बल और शिक्षा लाभ करैंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत् गंधी के कारावास की कहानी।

मेरा प्रथम बार का अनुभव

यद्यपि मैं और मेरे कई भारतवासी भाई केवलमात्र कुछ दिनों के लिये ही निष्क्रिय प्रतिरोध के कारण कारागार का भीतरी दृश्य देख पाये थे तथापि कई सज्जनों के अनुरोध से और इस विचार से भी कि ये बातें दूसरों को उपयोगी सिद्ध होंगी मैं अपने कारागार के अनुभव को लेखनीबद्ध करना प्रयोजनीय समझता हूं। यह सब लोगों का विश्वास है कि भारतवासी अपने अनेक स्वत्वों तथा अधिकारों को कारागार में जाकर ही प्राप्त कर सकेंगे इस लिये कारावास की बुराई और भलाई दोनों को समझ लेना उचित प्रतीत होता है। कई बार ऐसा देखा गया है कि जहां यथार्थ में कोई भी दुःख नहीं होता वहां हमारा मन दुःख उत्पन्न कर लेता है अतएव ऐसी अवस्था में वास्तविक स्थिति का निर्णय कर लेना अत्युत्तम है।

हम लोगों को कारागार में ठूंसने की ट्रांसवाल सरकार की दो चेष्टायें निष्फल जाने के पीछे अन्त में हम लोग दस जनवरी के तीसरे पहर जेल के भीतर ले जाये गये। मुझे और मेरे साथियों को दंड की आज्ञा मिलने के पूर्वही प्रिटोरिया (दक्षिण अफ्रीका का एक स्थान) से एक तार आया कि नये क़ानून का उल्लंघन करने वाले प्रिटोरिया प्रवासी भारतवासियों को कुछ जुर्माना तथा तीन २ मास के कठिन कारागार का दंड दिया गया था और यह भी आज्ञा थी कि जुर्माना न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने पर तीन मास कारागार में अधिक रहना पड़ेगा। इस समाचार-ने मुझे बड़ा व्यग्र कर दिया और मैंने अपने न्यायाधीश से प्रार्थना की कि मुझे अधिक से अधिक दंड दिया जावे किन्तु उसने मेरी प्रार्थना पर ध्यान न दिया और हम लोगों को केवल दो दो मास के सादे कारावास का दंड दिया गया। श्रीयुत् पी० के० नायडू, श्रीयुत् सी० एस० पिल्ले, श्रीयुत् कड्वा, मिस्टर एस्टन और मिस्टर फोरटून (पिछले दो सज्जन चीन निवासी थे) मेरे साथी थे। दण्डाज्ञा मिलने के पीछे लगभग चार मिनट तक मैं न्यायालय के पिछवाड़े ताले में बन्द रक्खा गया, तत्पश्चात् मुझे चुपचाप गाड़ी पर बैठा कर वहां से हटा दिया गया। उस समय चित्त में कितने ही विचार उत्पन्न हो रहे थे। मेरे मन में ये प्रश्न उठते थे कि "क्या मेरे साथ राजनैतिक क़ैदी के समान व्यवहार किया जायगा? क्या मैं दूसरे अभियुक्तों से पृथक रक्खा जाऊंगा? क्या मैं जोन्सवर्ग से हटाया जाकर कहीं किसी अन्य स्थान में रक्खा जाउंगा?" वह खुफ़िया पुलिस का कर्म-चारी जो मेरे साथ था मुझ से क्षमा प्रार्थी होने लगा परन्तु मैंने उससे कहा कि "तुम्हें क्षमा मांगने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि मुझे कारागार ले जाना तुम्हारा धर्म है।"

जेल के भीतर

मुझे शीघ्र ही पता लग गया कि मेरी सब कल्पनायें मिथ्या थीं क्यों कि मैं भी वहीं पहुंचाया गया जहां पर कि दूसरे सामान्य क़ैदी रक्खे जाते थे। थोड़ी देर पीछे मेरे साथी भी वहीं आ पहुंचे और हम सब मिल गये। पहिले हम सब तौले गये, तब हमारी अंगुलियों के छाप लिये गये उसके पीछे हम नितान्त नग्न कर दिये गये और हमें जेल की पोशाक पहना दी गई जेल के कपड़ों में एक काला पाजामा, एक क़मीज़, एक जम्पर (क़मीज़ के ऊपर का वस्त्र) एक टोपी और एक जोड़ी मोजे थे। अपने २ पुराने कपड़े रख देने के लिये हम में से प्रत्येक को एक २ बैग मिला तब हमको आठ २ औंस (पाव भर) की रोटी दी गई और हम सब काफ़िर (दक्षिण अफ्रीका की एक असभ्य जाति का नाम) जेल में अपनी २ कोठरियों में भेज दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफ़िर लोग और भारतवासी एक ही स्थान पर

तब अङ्गरेज़ी भाषा का अक्षर "N" (एन) हमारे वस्त्रों पर छांप दिया गया और इस प्रकार हम सरकारी तौर पर वहां के नेटिव लोगों की श्रेणी में डाल दिये गये। हम अनेक प्रकार के अपमान सहने को प्रस्तुत थे परन्तु हम ने यह कल्पना भी न की थी कि हमारे तिरस्कार की सीमा यहाँ ही तक रहेगी। यह तो हम जानते ही थे कि हमारे साथ 'गोरे' लोगों का सा व्यवहार कदापि नहीं किया जा सकता, किन्तु हम लोगों का हर प्रकार से काफ़िरों के समान समझा जाना हम को एक असहनीय अपमान प्रतीत होता था। इस बुरे व्यवहार ने हमें इस बात का विश्वास दिला दिया कि हमारा न्याय के लिये घोर संग्राम तथा हमारा निष्क्रिय-प्रतिरोध न अनुचित ही थे और न असमय ही थे। और भी प्रमाण मिल गया कि उक्त क़ानून भारतवासियों को नितान्त निरुपद्रवी (Harmless) बनाने की इच्छा से गढ़ा गया था। तौ भी हमारा काफ़िरों के बीच में रक्खा जाना एक प्रकार से सन्तोषदायक भी था क्योंकि इस प्रकार हमें उनकी दशा और उनके स्वभाव को समझने तथा उनके साथ किस प्रकार व्यवहार किया जाता है इस सब को जानने का एक सुअवसर मिल गया। मैं स्वयम् तो काफ़िरों के साथ एक स्थान पर रक्खे जाने को किसी प्रकार की मानहानि नहीं समझता परन्तु फिर भी लौकिक रीति से विचार करने पर मुझे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं रहता कि भारतवासियों को वास्तव में एक पृथक स्थान पर रखना उचित था। काफ़िरों की कोठरियां हमारी कोठरियों से मिली हुई थीं और इसी लिये हमारे बाहर की कोठरियां और सारा सहन उन के कोलाहल तथा चिल्लाहट से भरा रहता था सादी क़ैद का दण्ड मिलने के कारण हमको पृथक कोठरियां मिली थीं। अन्यथा हम भी उनके साथ ही बन्द कर दिये जाते क्योंकि कठिन कारावास से दण्डित भारतवासियों को उन्हीं के साथ रहना पड़ता है। यदि इस प्रकार के व्यवहार में मान अपमान का विचार छोड़ भी दिया जावे तौ भी यह समझ लेना चाहिये कि वहां रहना बड़ा ही भयंकर है काफ़िर लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकतर असभ्य ही होते हैं और वे काफ़िर जो कारागार में भेजे जाते हैं दूसरों से कहीं अधिक भयानक होते हैं। ये लोग जंगली, मलिन और पशु तुल्य होते हैं। एक कोठरी में ५० से ६० क़ैदी तक रक्खे जाते हैं। कभी २ वे कोठरी में बड़ा दंगा और गोलमाल करते और आपुस में लड़ते भिड़ते हैं। पाठक स्वयं उस दुर्दशा का अनुमान कर सकते हैं जो इन लोगों के बीच में पड़ जाने वाले भारतवासी की होती होगी।

अन्य भारतवासी कैदी

हमारे सिवाय तीन चार हिन्दुस्तानी क़ैदी और भी थे। एक प्रकार से उनकी दशा हम से अधिक शोचनीय थी क्योंकि वे काफ़िरों के साथ रक्खे गये थे। तथापि मैंने देखा कि वे मज़े में रहते थे। और उनका स्वास्थ्य कुछ अच्छा हो गया था। जेल के कर्मचारी गण उन से प्रसन्न थे और अन्य क़ैदियों से जेल के कामों में विशेष दक्ष और अनुभवी होने के कारण उनको जेल के हाते के भीतर ही अच्छा काम मिल जाता था। वे या तो स्टोर में मशीनों के कार्य को देखते थे अथवा उनको कोई ऐसा ही काम मिल जाता था जो कि न विशेष कठिन और न गंदा होता। वे लोग हमारे लिये भी बड़े ही उपयोगी सिद्ध हुये।

हम लोगों का निवासस्थान

हमें एक कोठरी दी गई जिसमें १३ मनुष्य रह सकते थे। "For Black Debtor" (काले ऋणियों के लिये) ये शब्द उस पर अङ्कित थे। जिससे यह मतलब था कि वह कोठरी प्रायः काले दीवानी के मुक़दमों के क़ैदियों के लिये थी। उस कोठरी में दो मज़बूत सींख़चों वाली छोटी २ खिड़कियां भी थीं जिनके द्वारा वायु और प्रकाश का प्रवेश कोठरी में होता था परन्तु मेरी समझ में इस कार्य के लिये भी ये दो कोठरियां काफ़ी न थीं। कोठरी की दीवारें लोहे की चद्दर की बनी हुई थीं। उन दीवारों में तीन जगह आध २ इञ्च के छेद थे जिनमें शीशा जड़ा हुआ था। इन छिद्रों द्वारा जेल के कर्मचारी गुप्त रीति से यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भली भांति देख सकते थे कि क़ैदी भीतर क्या कर रहे हैं। हमारे पास की कोठरी में काफ़िर लोग रहते थे। और उनकी कोठरी से लगी हुई एक कोठरी थी जिसमें काफ़िर, चीनी और केपबोय (Cape Boys) गवाह इस लिये क़ैदियों के समान रक्खे जाते थे कि वे कहीं भाग न जाँय।

दिन में कसरत करने के लिये हमें एक छोटा सा चारदीवारी वाला सहन मिल जाया करता था। यह सहन (आंगन) इतना छोटा था कि हम उस में कठिनता से चल फिर सकते थे। इस के अतिरिक्त यह नियम था कि क़ैदी उस स्थान को बिना आज्ञा के न छोड़ सकें। इसी संकीर्ण स्थान में हमारे नहाने और मल मूत्र त्यागने का भी प्रबन्ध किया गया था। हमारे नहाने के लिये दो पत्थर के हौज़ और दो फ़व्वारे के नल थे। मल त्यागने के लिये एक पात्र और मूत्र त्यागने के लिये दो पात्र रख दिये गये थे। इस बात का कुछ भी प्रबन्ध न था कि बिना निर्लज्ज बने हम किसी प्रकार भी मल मूत्र त्याग सकें अथवा स्नान कर सकें। जेल का यह नियम था कि पाख़ाने इत्यादि का अलग प्रबन्ध न किया जावे जिस से क़ैदी को कुछ देर के लिये भी बिलकुल ही अलग न करना पड़े इस कारण प्रायः दो २ तीन २ मनुष्यों को एक बार पंक्ति में बैठ कर शौच आदि से निवृत्ति होना पड़ता था। यही असुविधा हम सब को नहाने में भी झेलनी पड़ती थी पेशाब करने का पात्र भी खुले हुये स्थान पर था। पहिले पहल ये सब बातें बड़ी ही बुरी प्रतीत होती थीं और किसी २ को बड़ी ही दुखदायी भी प्रतीत होती होंगी परन्तु थोड़ी सी गंभीरता-पूर्वक इस विषय पर विचार करने से विदित हो जायगा कि जेल में इस प्रकार की लज्जा का निर्वाह होना असम्भव है और साथही इन बातों का खुल्लम खुल्ला करना भी कोई लज्जा की बात नहीं हैं। मेरी समझ में हम सब को धैर्य के साथ अपने २ मन को इस प्रकार का बना लेना चाहिये कि इन बातों के खुल्लम खुल्ला करने में हमें किसी प्रकार का दुःख अथवा खेद न हो।

हमें कोठरी में सोने के लिये हम में से हरेक को तीन २ इंच ऊंचे पाये का एक लकड़ी का तख़्त, दो कम्बल, एक छोटा सा तकिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एक २ चटाई मिली थी। कभी २ तीन २ कम्बल तक मिल सकते थे परन्तु यह बात जेल के कर्मचारियों की विशेष अनुग्रह पर निर्भर थी। मेरे कुछ साथी ऐसा कड़ा बिछोना पा बड़े दुःखी हुये। नरम बिछौनों पर सोने वालों के लिये ऐसे बिछोनों पर दुःखित होना स्वाभाविक है। परन्तु वैद्यक के अनुसार कड़ा बिछोना विशेष उपयोगी है और यदि अपने २ घरों में लोग कड़े बिछोनों ही पर सोने का अभ्यास करलें तो फिर जेल के ऐसे बिछोने हमें किसी प्रकार भी दुःखित न कर सकें। रात को हमारी कोठरी में एक पात्र जल से भरा हुआ और एक दूसरा पात्र एक बड़ी तिपाई के ऊपर मूत्र त्यागने को रख दिया जाता था क्योंकि रात के समय किसी क़ैदी को बाहर निकलने की आज्ञा न थी। जो चाहते थे उन्हें कुछ साबुन एक मोटा तौलिया और एक लकड़ी का चम्मच भी मिल जाता था।

स्वच्छता

जेल को बड़ा स्वच्छ रक्खा जाता था। प्रति दिन कोठरी की भूमि विषघ्नों (Disinfectants) से धोई जाती थी और दीवारें चूने से पोती जाती थीं जिससे वे सदा नई ही प्रतीत होती थीं। नहाने के हौज़ और पाख़ाने के पात्र आदि भी साबुन तथा विषघ्नों औषधियों द्वारा साफ़ कर दिये जाते थे। मैं समझता हूं कि मुझे स्वच्छता से प्रेम है इसी लिये कुछ दिनों पीछे जब हमारे और अनेक हिन्दुस्तानी भाई हमारे साथ आ मिले तो मैंने प्रतिदिन पाख़ाने के पात्रों को कीड़े मारने वाली औषधियों से साफ़ करने का भार अपने ही ऊपर ले लिया। ठीक नौ बजे कुछ चीनी क़ैदी पाख़ाने के पात्र को उठाने आया करते थे और यदि इस समय के पीछे हम स्थान को स्वच्छ रक्खा चाहते तो हमें स्वयम् ही यह कार्य्य करना पड़ता था। सोने के तख़्ते सदा बालू और जल से साफ़ किये जाते थे। आपत्ति केवल एक इस बात की थी कि तकिये और कम्बल की सदा दूसरे क़ैदियों के तकियों और कम्बलों से बदल जाने की सम्भावना रहती थी। 'कम्बलों को सदा हवा देना और धूप दिखाना चाहिये' इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियम के पालने में कभी त्रुटि नहीं की जाती थी। आंगन में भी दिन में दो बार झाड़ू दी जाती थी।

कुछ नियम

जेल के कुछ नियम ऐसे हैं जो कि सब को जानना उचित है। संध्या को साढ़े पांच बजे क़ैदियों को अपनी २ कोठरियोंमें चला जाना पड़ता था। उसके पीछे आठ बजे रात तक बोलने बतलाने अथवा पढ़ने का सब को अधिकार था। आठ बजे सब को सो जाना पड़ता था। यदि किसी को नींद न भी आवे तो भी उसे चुपचाप पड़ा रहना पड़ता था क्योंकि आठ बजे के पीछे बात चीत करना नियम विरुद्ध समझा जाता था। काफ़िर क़ैदी इस नियम की अधिक परवाह नहीं करते इसी लिये पहरे वालों को सदा अपने डंडे से उनकी दीवारें ठोंकना पड़ता है और उनके चुप करने के लिये "थूला २" चिल्लाना पड़ता है। तमाखू पीने की बड़ी मनाई थी और इस नियम का पालन भी पूरी तरह से किया जाता था। परन्तु इस पर भी मैंने उन क़ैदियों को जो तमाखू पीने के बड़े व्यसनी थे इस नियम को गुप्त रीति से उल्लङ्घन करते हुए देखा है। प्रातःकाल साढ़े पांच बजे क़ैदियों को जगाने के लिये एक घण्टी बजाई जाती है। उस समय क़ैदी उठते हैं, मुंह हाथ धोते हैं और अपने २ बिछौने लपेट कर रख देते हैं। छै बजे कोठरियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और प्रत्येक क़ैदी को अपने लपेटे हुये बिछौने के पास सभ्यता-पूर्वक खड़ा होना पड़ता है। पहरेदार उन सब को गिनता है। क़ैदियों के बन्द करने के समय भी ऐसा ही किया जाता है। बिना जेल के अध्यक्ष की आज्ञा के जेल की वस्तुओं के अतिरिक्त क़ैदी के पास और कोई बाहरी चीज़ न होनी चाहिये। क़ैदी के "जम्पर" के एक बटन में एक थैली लटकी रहती है जिसमें एक टिकट रहता है उस टिकट पर क़ैदी का नाम, नम्बर, क़ैद की अवधि इत्यादि लिखा रहता है। साधारण तौर पर दिन में कोई भी कोठरी में नहीं रहने पाता। वे क़ैदी जिनको कठिन कारावास का दंड होता है बाहर काम पर भेज दिये जाते हैं। अन्य क़ैदी जिनको सपरिश्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारावास दंड नहीं होता उनको भी दिन में कोठरियों में रहने की आज्ञा नहीं है। उन सब को दिन भर खुले मैदान में रहना पड़ता है। जेल के अध्यक्ष ने कृपा कर हमारी सुबिधा के लिये हमारे कमरे में दो बेंच और एक मेज़ रखवा दी थी और यह दोनों बेञ्च और एक मेज़ हमारे बड़े ही काम आईं।

जिस किसी को दो मास के कारावास का दण्ड दिया जाता है उसको जेल में शिर मुड़ाना और मूछे कटाना पड़ता है परन्तु भारतवासियों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता। यदि कोई ऐसा कराने में अनिच्छा प्रगट करता है तो उसकी मूछें छोड़ दी जाती हैं। इस विषय में मेरे साथ एक बड़ी दिल्लगी हुई। मैं जानता था कि क़ैदियों के बाल काट दिये जाते हैं और यह भी जानता था कि बाल और मूछें क़ैदियों ही के लाभ के लिये काटी जाती हैं न कि उनको दुःख देने के लिये। मैं समझता हूं कि यह बड़ा ही उत्तम नियम है क्योंकि जेल में बाल झाड़ने के लिये कङ्घी इत्यादि कुछ नहीं मिलतीं और यदि बाल साफ़ न रखे जांय तो फोड़ा फुन्सी होने का भय रहता है। और फिर गरमी के दिनों में बड़े २ बालों से दुःख होता है। क़ैदियों को दर्पण नहीं मिलते और मूछों के मैले रहने की बहुत कुछ सम्भावना है क्योंकि भोजन करने के पश्चात मुंह पोंछने के लिये तौलिया आदिक नहीं मिलता। काठ के चम्मच से खाने में सुविधा की जगह बड़ी असुविधा होती है और यदि कहीं मूछें बड़ी हुईं तो भोजन उनमें लिपट जाता है। कारावास-जीवन के प्रत्येक स्वरूप को अनुभव करने की इच्छा से मैंने पहरेदारों के जमादार से अपने बाल और मूंछ काटने की आज्ञा मांगी। उसने कहा कि "जेल के अध्यक्ष ने मना किया है"। मैं ने उससे कहा कि "मैं जानता हूं कि वे मुझे ऐसा करने के लिये मजबूर नहीं किया चाहते परन्तु मैं स्वयम् अपनी इच्छानुसार ऐसा करना चाहता हूं"। उसने मुझे जेल के अध्यक्ष से आज्ञा मांगने को कहा। दूसरे दिन मैं ने जेलाधीश से आज्ञा मांगी और उन्होंने दे भी दी परन्तु उन्होंने कहा कि "आपके दण्ड की दो मास की अवधि में से दो दिन व्यतीत हो चुके हैं अतः मुझे आप के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल काटने का कोई अधिकार नहीं है"। मैंने उत्तर में कहा कि मैं" यह सब जानता हूं परन्तु मैं ऐसा अपनी ही इच्छानुसार तथा अपने भले के लिये किया चाहता हूं"। परन्तु अध्यक्ष हंसा और आज्ञा देने में आगा पीछा करने लगा। मुझे पीछे से मालूम हुआ कि मेरी प्रार्थना से उसके हृदय में कुछ संदेह उत्पन्न हो गया था। उसने समझा थो कि मैं कदाचित् छूट जाने पर इस बात का उस पर दोष लगाता कि उसने बलात् मेरे बाल कटवा दिये मैं ने उससे फिर प्रार्थना की कि "यदि आप कहें तो मैं यह लिख दूं कि मैंने बाल अपनी ही इच्छा से कटाये"। अन्त में उस का सन्देह मिट गया और उसने मुझे घोड़े के बाल काटने की एक कैंची दिये जाने की आज्ञा दी। मेरे साथी श्रीयुत् पी० के० नायडू नाई का काम बड़ी अच्छी तरह जानते थे और मैं भी थोड़ा बहुत जानता था। मेरे इस काम का कारण सुन कर कुछ और व्यक्तियों ने भी मेरा अनुसरण किया। और किसी २ ने केवल बाल ही काटे। मैं और श्रीयुत् नायडू प्रतिदिन अपने हिन्दुस्तानी भाइयों के बाल काटने में दो घण्टों व्यतीत किया करते थे। मैं समझता हूं कि इस कार्य से क़ैदियों के स्वास्थ्य और उनके सुख की वृद्धि हुई। क़ैदी अधिक स्वच्छ दिखाई देते थे। उस्तूरा रखने की बड़ी मनाही थी इसी लिये क़ैदियों से ही काम लिया जाता था।

क्रमशः।

रत्न हानि

बरोदा राज्य के प्रधान अमात्य बंग साहित्य के एकमात्र पोषक बाबू रमेश चन्द्र दत्त अगहन बदी २ को रात के दो बजे इस असार संसार से विदा हो गये। उक्त बाबू बंग भाषा तथा अङ्गरेज़ी के बड़े पण्डित थे। लखनऊ की कांग्रेस के एक बार यह सभापति भी हो चुके हैं। इससे प्रगट है कि इन्हें देशहित का भी बहुत ख़याल था। सर्कारी नौकरी में कमिश्नर तक हो चुके थे। बंगाल छोटे लाट के पद पर इनका नियत होना जब आशातीत समझा गया तब केम्ब्रिज विश्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालय में इतिहास के प्रोफेसरी (प्रधानाध्यापक) के पद को स्वीकार कर विलायत चले गये। बहुत वर्षों तक वहां रह पेन्शन स्वीकार कर बरोदा के प्रधानामात्य हो गये। इतिहास के ये बड़े भारी पण्डित माने जाते थे, इकानोमिक हिस्टरी आफ़ इण्डिया नाम की एक पुस्तक आपने रचा है जिस में राजेन्द्र लाल मित्र के समान आप भी हमारी पुरानी आर्य्यता में डंक मारने से नहीं चूके। रामायण महाभारत के पीछे लिखी गई ऐसी उलटी पुलटी बातें लिख डिलाफ़ोस ऐसों को आंय, बांय, शांय लिखने के लिये प्रमाण हो गये। डिलाफोस की हिसटरी जो यू० पी० के स्कूलों में प्रचलित है हमारे सुकुमार मति वाले छात्रों के लिये विष के समान है जिसमें हिन्दू जाति की बहुत सी बातों को दूषित करते हुये ऐसा डंक मारा है कि जिसका बालकों पर आगे चल बहुत बुरा असर होगा। शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर हैं उनकी बनाई किताब भला क्यों बालकों को न पढ़ाई जाय। अस्तु रमेश बाबू अङ्गरेज़ी के यहां तक पारंगत थे कि इन की बनाई पुस्तक अङ्गरेज़ी की एक पाठय पुस्तकों में समझी जाती है। इतिहास के ऐसे परमाचार्य हुये कि इङ्गलैण्ड में अङ्गरेज़ी भाषा में इतने आदरणीय हुये कि वहां की युनिवरसिटी में ऐसे बड़े उच्च पदाधिकारी बने। बङ्ग भाषा में तो बंगीय साहित्य परिषद के जन्मदाता हुये। पालिटिक्स (सामयिक राजनीति) के मर्म समझने में बड़े ही कुशल थे बरोदा नरेश इन की बड़ी प्रतिष्ठा करते थे। और इनके गुण पर लट्टू थे। वहाँ के विद्या विभाग का इन्होंने बहुत कुछ संशोधन भी किया। जो हो काल कवलित करने से किसी को नहीं छोड़ता। ६१ वर्ष की उमर में विषमज्वर पीड़ित हो नमोनिया फेफड़े के फूल आने से मृत्युपथ के पथिक हो भारत के एक रत्नहानि सदृश हुये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्त और चक्षु का घनिष्ट सम्बंध

———:o:———

चित्त जिसके द्वारा चैतन्यमात्र को वाह्य वस्तु का ज्ञान होता है उसका चक्षु के साथ जैसा घनिष्ट सम्बन्ध है वैसा दूसरी ज्ञानेन्द्रियों के साथ नहीं। दार्शिनक, जो 'दृश्' धातु से बना है, दृष्टि और मन दोनों के सम्बन्ध का मानों निचोड़ है; अर्थात् वह मनुष्य जो किसी वस्तु को देख उस पर अपनी मानसिक शक्ति का ज़ोर दे। इसी से किसी बहुदर्शी विद्वान का सिद्धान्त है कि बुद्धिमान् का चित्त चक्षु है। हम लोग प्रतिक्षण संसार के सब पदार्थों को देखा करते हैं, पर उन देखी हुई वस्तुओं पर मन को जैसा चाहिए वैसा नहीं लगाते। एक तत्व-दर्शी विद्वान् का देखना यही है कि उसके नेत्र उस देखे हुए पदार्थ की नस २ में पैठ मन को काम में लाकर सोचते २ उसके तत्व तक पहुंच जाते हैं। लटकती हुई चीजों को इधर उधर झूलते सब लोग देखते हैं, पर लटकते लम्प को हवा में झोंका खाते देख गेलीलियो के मन में एक अनोखी बात आयी। उन्होंने देर तक सोचने के उपरान्त निश्चय किया कि इस तरकीब से हम समय को अच्छी तरह नाप सकते हैं और वही घड़ी के पेंडुलम की ईजाद का मूल कारण हुआ। क्षुद्र पदार्थों को देख मन का उन पर एकाग्र होना बड़े से बड़े विज्ञान और अनेक कलाओं के प्रचार का हेतु हुआ। न्यूटन ने भी तो सेव के फल को नीचे गिरते देखा ही था, कि जिस पर चित्त को एकाग्र कर सोचते २ आकर्षण -शक्ति का सिद्धान्त दृढ़ किया, जिस शक्ति के बल से ब्रह्माण्ड, सूर्य्य, चन्द्रमा, पृथिवी, तारागण, ग्रह, नक्षत्र सब अपनी २ कक्षा में नियत समय में घूमा करते हैं। नितान्त अज्ञ दुधमुंहे बालक को जिसकी मानसिक शक्ति अत्यन्त अल्प रहती है उस समय नेत्र ही ज्ञान का द्वार रहता है। यही कारण है कि बालक साधारण से साधरण वस्तु को बड़े चाव से देखता है। तात्पर्य यह है कि बालक की मानसिक शक्तियों का विकाश (Mental development) जैसा नेत्र के द्वारा होता है वैसा कान आदि के द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। किसी चटकीली चमत्कृत बात को सुन कर जो मन में उत्सुकता पैदा होती है वह नेत्र ही के द्वारा शान्त होती है। सुनने और देखने के भाव को किसी ने नीचे के इस श्लोक में बड़ी चातुरी के साथ प्रगट किया है,—

श्रुत्वापि दूरे भवदीय वार्तां नेत्रौ च तृप्तौ नहि चक्षुषीमे।
तयोर्विवादं परिहर्तुकामः समागतोहं तव दर्शनाय॥

अर्थात् आपके उत्तम गुणों की चर्चा सुन कर कान तो तृप्त हो गये पर आंखें नहीं। जब आपकी बात चल पड़े तब कान जिन्होंने सुन रक्खा था, प्रशंसा करने लगें और अखें जिन्होंने रक्खा नहीं था लड़ा करें। उन दोनों का झगड़ा मिटाने को हम आपके दर्शन को आये हैं। नल के गुण-स्तुति का नैषध काव्य में भी ऐसा ही एक श्लोक है—

अदस्तदाकर्ण्य फलाढ्यजीवितं दृशोर्द्वयोर्नस्तदवीक्ष्य चाफलम्। इतिस्मचक्षुश्रवसां प्रिया नले स्तुवन्ति निन्दन्ति हृदा तदात्मनः॥

सर्प चक्षुश्रवा होते हैं, अर्थात् आंख ही से देखते और सुनते भी हैं। नाग-पत्नियों नल का यश सुन कर प्रसन्न होती हैं और अपना जन्म सफल मानती हैं; पर देखा नहीं इससे अपने को विफल-जन्मा मान अपनी निन्दा भी करती हैं।

आग में घी छोड़ने की भांति कभी २ देखने से मन और अधिक उत्सुक होता जाता है। जैसे प्रेमी को अपने प्रेम-पात्र के देखने में, सच्चे भक्त को अपने इष्ट देव के दर्शन में, एक बार, दो बार, दस बार सौ बार, सहस्र बार जितना ही देखता जावे उतनी ही चाह बढ़ती जायगी। फिर मन का तो आंख से ऐसा घना सम्बन्ध है कि मन को लोग हिए की आंख कहते हैं। सूरदास ने एक विनय में कहा भी है—

"सूर कहा कहै दुविध आंधरो बिना मोल को चेरो।
भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो"॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् न करे किसी की हिए की फूटे, जिसके फूटने से फिर किसी तरह निस्तार नहीं है। बाल्य-विवाह के शौकीनों की हिए की फूटी हैं, दुधमुहों को ब्याहने से सरासर नुक़सान है, देश का देश धूर में मिल गया, फिर भी ज्ञान नहीं होता। हमारा मन यदि किसी एक बात पर एकाग्र रहे तो हज़ारों चीज़ें देखकर भी उनका कुछ स्मरण नहीं रखते; अतः निश्चय हुआ कि हृदय की आंख इस चर्म चक्षु से कितनी अधिक प्रबल है। इससे हिए की आंख से देखना ही देखना है। और इस तरह का देखना जो जानते हैं उन्हीं का ठीक २ देखना है। चतुर सयाने, जिन्हें यह हुनर याद है, बाहरी आकार, चेष्टा और बोल चाल से तुम्हारे मन में क्या है, उसे चट जान लेते हैं।

"अकारैरिंगितैर्गत्या चेष्टया भाषणेनच।
नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः" ॥

ऐसों को हम मन-माणिक की क़दर करने वाले और पहिचान रखने वाले जौहरी कहेंगे। मन को पवित्र या अपवित्र करने का द्वार नेत्र हैं। किसी पुण्याश्रम, तपोभूमि, गिरि, नन्दी, निर्झर आदि तीर्थ विशेष में जाकर वहाँ के प्राकृतिक पवित्र दृश्यों को देखते ही या किसी जीवनमुक्त महापुरुष के दर्शन से मन यकबारगी बदल जाता है। पापी से पापी ठगों और डकैतों का हाल देखा और सुना गया है कि ऐसे लोग महात्माओं के पवित्र स्थानों में जाते ही या किसी महात्मा का दर्शन कर अपने पाप-कर्म से छुट ऋषि-तुल्य शान्त स्वभाव के हो गये हैं। लोग मन को व्यर्थ ही चञ्चल प्रसिद्ध किये हैं। चञ्चलता नेत्र करते हैं, फँसता है बेचारा निरपराधी चित्तः—

क्यों बसिए निरवारिए नीति नेह पुर नाहिं।
लगा लगी लोचन करैं नाहक चित बँधि जाहिं ॥

नैना नेक न मानहीं कितेउ कह्यो समुझाय।
तन मन हारे हू हसैं तिनसों कहा बसाय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृग उरझत टूटत कुटुम जुरत चतुर सों प्रीति।
परत गाँठ दुरजन हिये दई नई यह रीति॥

किसी शायर का क़ौल है:—

दीदार दिलरुबा का दीवार क़हक़हा है।
जो उस तरफ़ को झाँका वह इस तरफ़ कहाँ है॥

प्रेमी के वियोग में जब ये नेत्र निरास हो बैठते हैं तब अपने सहयोगी मन को उस ओर भेजते हैं, जो दिन रात उसकी खोज में प्रवृत हो जाता है। दैवयोग से प्रेमी मिल गया तो नेत्रों को ठंढक पहुंचती है; नहीं तो सन्ताप में झुलसा करते हैं।

प्रेम बनिज कीन्हो हुतो नेह नफा जिय जानि।
अब प्यारे जिय की परी प्राण पुंजी मैं हानि॥

अन्त में अपनी दशा का देखना यावत् सुधार और मन के शान्ति का हेतु है। जो अपनी दशा देख कर काम करते हैं वे सदा सुखी रहते और सङ्कट में नहीं पड़ते हैं।

प्रजा ही राजा को बढ़ाती है

—:o:—

प्रजा का सन्तुष्ट रहना राज्य की स्थिरता का मूल सूत्र है। जो राजा या राज कर्मचारी गण प्रभुता के घमण्ड में प्रजा के सन्तोष का ध्यान न रख लोगों को दबाकर अपने बस में रखने वाली नीति का अनुसरण करते हैं उनके शासन में स्थिरता कभी आही नहीं सकती मृदुता सबको पसन्द आती है कौन ऐसा होगा जो कड़ाई से न ऊब उठेगा। हेमन्त और शिशर के सूर्य की मृदु किरण सबों को भाती है ग्रीष्म के निम्मांश की तीखी किरणों से कौन नहीं घबड़ा उठता। दबा के रखने की नीति वैसी ही है जैसा तिनका मुख में दाबे गौ पर बाघ आ टूटे। जो माली पेड़ों की जड़ों में खाद छोड़ता हुआ अमृत सदृश जल से उन्हें सींचता है उसे पेड़ भी हर समय अपने कोमल २ पल्लव और ऋतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने पर फूल फल देने से वहिर्मुख नहीं होते । इतिहासों की अनेक जुड़ी २ घटनाएं हमे बतला रही हैं कि जो राजा अत्यन्त अर्थगृध्नु न हो पक्षपात रहित शासन करता रहा उसे चिरकाल तक समन्तात् सस्य संपन्न धरित्री का भोग बहुत ही सुलभ रहा और उसके वशवर्ती लोग स्वर्ग सुख अनुभव करते हुये सदा अपने को कृतकृत्य और भाग्यवान् समझा किये । हिन्दुस्तानी रियासतों में अब भी भरपूर लोगों को खुशहाल खुशखुर्रम देख हम उनके भाग्य की सराहना करते हैं । अकबर ने जो जित और जेता का भाव ताक पर रख मुलायमियत से शासन किया उसका परिणाम यह हुआ कि मुग़लानी सलतनत तीन पुश्त तक अमन चैन के साथ स्थिर रही । औरंगज़ेब भी उसी नीति का पालन करता जाता तो कभी तैमूरिया ख़ानदान का ख़ातिमा न होता । लार्ड रिपन महोदय जिस आत्मशासन वाली प्रणाली का बीज बो गये उनके उपरान्त बिना सिंचाव के बेल उसकी मुरझानी सी पड़ी थी और महात्मा रिपन सदृश किसी उदारचेता की प्रतीक्षा कर रही थी कि औरङ्गज़ेब का अनुकरण करते हुये लार्ड करज़न ने आकर उस पर ऐसा कुठाराघात करना आरम्भ कर दिया कि सब छिन्न भिन्न हो गया और लोगों में जो असन्तोष फैल गया वह आज तक बढ़ता ही जा रहा है । लार्ड मिंटो और लार्ड मार्ले अब कर्ज़न साहब की भूल का मार्जन न कर (Repression) दबाने वाली नीति के द्वारा असन्तोष रोका चाहते हैं "केहि पापी जिन राम न भावा" असन्तुष्ट रहना किसे पसन्द है सब लोग यही चाहते हैं कि हम सदा प्रसन्न और खुशहाल रहैं। विशेष कर यहां की (Jentries) अमीर पद वाच्य जो स्वभाव ही से अत्यन्त शान्ति प्रिय होते हैं और यही चाहते हैं कि हाथ पांव न हिलाना पड़े भोग विलास में निरत रह हम पागुर करते हाथ पर हाथ धरे बैठे रहैं उन्ही के इस पागुर करने का फायदा अब तक कर्मचारीगण उठाते आये हैं ।

दूसरे यहां के लोगों में अधिकतर हिन्दू जाति में कृतज्ञता बहुत अधिक है थोड़ा भी उपकार करदेने से मिहरबान हो गुण मानने लगते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेद है कि हिन्दुस्तान और इङ्गलिस्तान में कुछ ऐसी लागी लागा आ लगी है कि जिसमें हिन्दुस्तान का फ़ायदा उसमें इङ्गलैण्ड वालों का नुक़सान। इसी स्वार्थ ने ऐसा पर्दा छोड़ रक्खा है कि कर्मचारीगण निज देश और जाति का लाभ पहिले देख लेते हैं। इसी स्वार्थ भ्रंश भीरू हो हमारा उपकार करने में उतने ही वाध्य हैं जितने में उनकी कुछ हानि न हो। इसी स्वार्थ साधन के सबब शासन में मृदुता नहीं आने पाती। उसी मृदुता के अभाव से असन्तोष दिन २ बढ़ रहा है। तब शासित का असन्तोष शासन में स्थिरता कैसे ला सक्ता है। इस तरह पर कारणमाला अलंकार की कड़ी एक दूसरी पर सहारा किये हुये है। तो सिद्ध हुआ कि प्रजा ही राजा को बढ़ाती है। प्रजा वर्ग जितना हीं अधिक सन्तुष्ट रहेगी उतनाही उसके राज में स्थिरता और पायदारी बढ़ती जायगी। दबा कर रखने वाली पालिसी को बहुत कम क़याम है। देखते हैं तो शासक और शासित में वैमनस्य बढ़ता ही जाता है परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे शासकों को सुबुद्धि दे जिससे दोनों में प्रेम का भाव बढ़ता रहे।

श्रीकृष्ण और राजनीति।

——:o:——

संसार में असाधारण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति बहुत कम ही पैदा होते हैं और इनमें भी बहुत कम ही लोग अपनी उस अलौकिक प्रतिभा को ठीक रास्ते पर ले जाते हैं। किन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि जिन प्रतिभाशाली व्यक्तियों के द्वारा जातीय उन्नति साधित होती है उनके हृदय स्वाधीन प्रवृत्ति और निष्कपट देशहितैषिता के लीलास्थल थे। उनकी जीवनियों के पढ़ने से यह बात प्रत्यक्ष विदित होती रही है कि वेअपने स्वार्थ को देश के स्वार्थ के आगे कुछ चीज़ नहीं समझते थे। उनके स्वार्थ और देश के स्वार्थ में मानों कुछ भी विभिन्नता नहीं थी। असाधारण प्रतिभावान् एवम् अलौकिक क्षमताशाली होकर भी ये लोग अपनी उदारता के कारण साधारण मनुष्यों को घृणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की दृष्टि से नहीं देखते थे वरन् उनके लिये आकाश पाताल एक करने के लिये सदा सर्वदा सर्वथा प्रस्तुत रहते थे। जन साधारण के उपकार के लिये अपने प्राण तक को उत्सर्ग करने को तैयार रहते थे। पृथ्वी में सब जगह समय२ पर ऐसे एक आध प्रातःस्मरणीय व्यक्ति पैदा हुए हैं।

आज से कई हज़ार वर्ष पूर्व जिस समय भारत गगन में घोर घनघटा छाई हुई थी। जिस समय आर्यों की निवासभूमि भीषण अत्याचार से प्रपीड़ित हो उठी थी उस समय एक महापुरुष अवतीर्ण हुए थे। वे ही यदुवंशावतंस, ईश्वरावतार, भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं। प्रतिभा में अद्वितीय, ज्ञान गौरव में अतुलनीय, शक्ति में महान् श्रीकृष्णचन्द्र अहीरों की बस्ती में गोप गोपिकाओं के बीच लड़कपन में लालित पालित हुए, कुछ सयाने होने पर गोपलों के सङ्गी हुए किन्तु शीघ्र ही उनकी महती शक्ति ने विकाश पाया। जगत् ने स्तम्भित आँखों से देखा कि एक आदर्श महापुरुष अवतीर्ण हुए हैं।

श्रीकृष्णचन्द्र की जीवनी के चार अंश हैं। पहला अंश है--उनकी बाल्यलीला। उनकी बाल्यलीला केवल अलौकिक वीरता की ही व्यञ्जक नहीं है प्रत्युत्त परोपकार तथा मानव हितैषिता का प्रकृष्ट उदाहरण है। अमङ्गकारी गोहन्ता वृषरूपी अरिष्ट नरमांस लोलुप केशी उस वीर बालक के आगे रूई की तरह उड़ गया; भीषणाकार भयङ्कर कालीय कालिन्दी की सुखमय जलराशि से हटाया गया, मूर्त्तिमान अत्याचार कंस की इह-लीला जल्द ही समाप्त हुई। दूसरा अंश है—महापराक्रमी जरासन्ध के साथ उनका युद्ध। दामाद की मृत्यु से उत्तेजित होकर जरासन्ध ने मथुरा पर धावा किया। सत्रह बार वह कृष्ण भगवान् से लड़ कर हारा। इस समय भारतवर्ष के एक छोर से दूसरे छोर तक अत्याचार की संसार के जलाने वाली अग्नि धक् धक् जल रही थी। श्रीकृष्णचन्द्र उस सर्वव्यापी अत्याचार को शमन करने के लिये अत्याचारी राजाओं को एक २ कर उन्मूलित करने लगे। शीघ्र ही जरासन्ध और उसके बाद महाभिमानी शिशुपाल और शल्व का नाश हुआ। उनकी जीवनी का तीसरा अथच प्रसिद्ध अंश है—कुरुक्षेत्र का महासमर। दुर्वृत्त दाम्भिक प्रवर दुर्योधन, निर्लज्ज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महापातकी दुःशासन, पाप पथप्रदर्शक नराधम शकुनि—सभी कृष्ण चन्द्र की कोपाग्नि में भस्म हुए। चौथा अंश है—यदु वंश का विध्वंस यहीं श्रीकृष्णचन्द्र ने अपने व्रत का उद्यापन किया।

रणपण्डित श्रीकृष्ण अपने उद्देश्य साधन के लिये छल, बल, कौशल सब का प्रयोग करते थे। जरासन्ध ने जब अन्तिम बार आक्रमण किया था उस समय श्रीकृष्ण बलराम को ले राजधानी छोड़ दक्षिण के सह्याद्रि पर्वत की ओर भाग गये थे। जरासन्ध ने भी इन का पीछा किया। उसके बाद श्रीकृष्ण पादप समाकीर्ण, बनराजि वेष्ठित दुर्गम गोमन्त पर्वत पर चढ़ गये और वहीं जाकर उन्होंने जरासन्ध को पराजित किया। दुर्द्धर्ष कालयवन को भी इसी प्रकार कौशल से उन्होंने हराया था। श्रीकृष्ण की रणनीति का मूलमन्त्र कौशल था। उदारता सब जगह नहीं चलती। बल में बराबर नहीं होने पर कौशल द्वारा शत्रु के हराने में अधर्म नहीं है। यही श्रीकृष्ण की मङ्गलमयी रणनीति है! इसी को अवलम्बन कर सत्रहवीं शताब्दि में महाराष्ट्र वीर शिवाजी ने अपनी मुट्ठी भर सेना से विशाल मुग़ली सेना को हराया था। और इसी नीति की उपेक्षा करने के कारण अतुल विक्रम वाले उदार राजाओं को राज्य और प्रभाव से हाथ धो बैठना पड़ा है।

श्रीकृष्ण की रणनीति चाहे जैसी चतुराई भरी क्यों न हो पर उनकी राजनीति बड़ी ही उदारतापूर्ण है। उनके शासन में यथेच्छाचार का नामोनिशान भी नहीं था। राजराजेश्वर होकर भी उन्होंने कभी अपने अनुचरों पर प्रभुता नहीं दिखाई वरन् मीठी २ बातों से अपने हृदय की बात उनसे कह कर उनके प्राणों के पर्दे पर्दे में उत्साह भरा करते थे। श्रीकृष्ण यथार्थ में प्रजा रञ्जक थे। प्रजा ही के मङ्गल के लिये उन्होंने कंस को मारा—इसीलिये उन्होंने जरासन्ध, शिशुपाल, दन्तवक्र, शल्व आदि को मार डाला किन्तु कृष्णचन्द्र प्रजा हित का बहाना कर किसी का राज्य हड़प नहीं कर जाते थे। कंस को मार उन्होंने उग्रसेन को राज्य पर बैठाया! जरासन्ध, शिशुपाल, शाल्व प्रभृति के राज्य का भी वैसा ही प्रबन्ध किया था। इससे साफ़ मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है कि श्रीकृष्ण को स्वार्थपरता छू नहीं गयी थी। राजनैतिक क्षेत्र में व्यक्तिगत स्वार्थपरता बड़ी भयानक होती है। स्वार्थपरता रूपी हालाहल को यदि कृष्ण भगवान अपने हृदय में स्थान देते तो कभी भी आर्य्यभूमि की कोटि २ नर नारियों की नस २ में उनके प्रति ऐसी श्रद्धा ऐसी भक्ति न जमती। दुष्ट दमन और धर्म पालन के ही द्वारा उन्होंने भारत की भक्ति अर्चा पायी है। प्रजा के हितसाधन के लिये श्रीकृष्ण सब कुछ विसर्ज्जन करने को प्रस्तुत रहते थे। जिस समय उनके आत्मीय स्वजन धर्म और शान्ति के बाधक हो उठे उसी समय श्रीकृष्णचन्द्र ने कौशल से यदुवंश को ध्वंस किया। धर्म के लिये—स्वदेश के अर्थ ऐसा स्वार्थत्याग अतुलनीय है!

कभी किसी देश में ऐसे महान् आत्मोत्सर्ग का उदाहरण नहीं देखा गया। आज भारत का राजनैतिक आकाश बादलों से घिरा हुआ है किन्तु यदि इस दुर्दिन में भी महात्मा कृष्णचन्द्र का आदर्श सामने रख कर हम लोग कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हों तो बिन खेवैया की नाव की तरह हम लोगों की गति नहीं होगी। हे भारतवासी गण! डरो मत! हताश मत हो! उठो! उठो! यह सुनो श्रीकृष्ण की वह स्वर्गोज्ज्वल नव नीरद वर्ण मूर्त्ति जगत् कम्पित करती हुई कह रही है—

"क्लैव्यं मास्म गमः।"

अब सुनो! घर, बाहर, आकाश, पाताल, सागर, शैल सब को प्रतिध्वनित करती हुई वही प्राणोन्मादिनी वाणी कहती है—

"क्षुद्रं हृदय-दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप!"

हे भारतवासी गण! हे आर्य्य सन्तान! हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर उठो! कर्म ही मूल मन्त्र है। अपने कर्त्तव्य से मत हटो। प्राण का मोह मत करो। आत्मोत्सर्ग ही कर्मवीर का पथ है। बहुत दिनों से सोते आये हो अब तो आँखें खोलो, चक्षु फाड़ कर देखो! आदर्श कर्मवीर श्रीकृष्ण भगवान ने स्वदेश के मङ्गल के लिये आत्मीय स्वजन आदि सब का उत्सर्ग किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम लोग जन्म से ही श्रीकृष्ण के प्रेमी हैं उनकी मनोहर सौम्य-मूर्त्ति का सदा से ध्यान करते आते हैं किन्तु काल के परिवर्त्तन से इस समय वह यमुना तीरस्थ कदम्बमूलवर्त्ती श्याम की नटवर मूर्त्ति राष्ट्र संरक्षक वीरमूर्त्ति में परिणत हो गयी है। भारतवासी! सुनो! सुनो! गोपिनी मोहन ललित राग रागिनी के बदले शंख का गम्भीर निर्घोष कर रहे हैं। इतने दिन बाद मोह निद्रा टूटी है। ज़माने के बाद हृदय की आंखें खुली हैं—देखो! सामने पुण्यक्षेत्र कुरुक्षेत्रसा कर्मक्षेत्र मौजूद है! अब कर्त्तव्य परायण हो अपने कर्त्तव्य कर्म में लग देश के उपकार में कृष्ण के समान अग्रसर बनो।

ईश्वरीप्रसाद शर्मा।

मूर्खता का सौदा

आज तक भारतवासियों को समस्त भारतवर्ष के दास्यता का जामा पहिन लेने पर भी नैपाल के स्वतंत्र रहने का घमण्ड था; परन्तु नैपाल के प्रधान मंत्री महाराज शमशेर जङ्ग ने अपनी एक आधुनिक कारवाई से यह साबित कर दिया कि नैपाल सब से अधिक अङ्गरेज़ों का दास बनने का दावा कर रहा है। हाल में बुद्धिमान महाराज ने अपने यहाँ के क़रीब ६३३० संस्कृत "मैनुस्कृप्ट" (हस्तलिपि) विलायत की आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी को केवल एक चमकीले पार्चमेण्ट काग़ज़ पर छपे हुये थैंक्स के बदले में दे दिये। महाराज ने अपने पुरुषों के नाम और गौरव पर छुरी फेर दी और संसार के सामने हिन्दू लोग मुंह दिखाने लायक न रह गये। यदि किसी भी स्वतंत्र देश से कहा जाय कि वह अपने पुरुषों के पुराने चिन्ह को देश से निकल जाने दे तो कदाचित् नैपाल के सिवाय कोई इतना जातीयता के भावों से पतित देश न मिलेगा जो प्राण रहते अपने पुरुषों की आत्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को इस तरह दुःखित करेगा । हाल में महाराज बुद्धदेव की अस्थि के वास्ते परतन्त्र हिन्दुस्तान कितना लड़ा था। यह बात महाराज नैपाल को मालूम ही होगी । पर जब दास्यभाव नस नस में व्याप्त हो रहा है तो कोई भी उदाहरण काम नहीं आ सकता। जब यह बात जगत की और जातियों को प्रगट होगी तो उनका भाव हिन्दुओं की तरफ़ क्या होगा ? पाठक स्वयं सोच सकते हैं । एक तरफ़ तो हिन्दू जाति अपने पुराने गौरव प्राप्त करने के लिये जान पर खेल रही है दूसरी ओर उन्हीं का एक स्वतंत्र देश अपने घृणित कर्मों से अपने पूर्वजों के नाम पर अप्रतिष्ठा करे और अपने ही हाथों अपने देशवासियों को संसार के आगे नीचा दिखलावे ! यदि नैपाल दास्यभाव की अवस्था में यह काम करता तो किसी तरह हिन्दू जाति इसको सह लेती पर जब स्वतंत्र होकर उन्होंने ऐसा किया तो उनकी ऐसी स्वतंत्रता किस काम की। जब हमारे भीतरी भावों में गुलामी छा रही है तो ऊपरी राजनैतिक रीति पर स्वतंत्र होने से क्या लाभ ! यदि आज नैपाल भारतवर्ष के सदृश अङ्गरेज़ों के अधीन होता तो शायद हमें इतना दुःख न होता जितना हिन्दुओं की आत्मा को अपने पुरुषों के पुराने चिन्ह निकल जाने से आज क्लेश मिला है । पुरुषों ही के नाम और उन्हीं के प्रत्यक्ष काम और चिन्ह गिरी जातियों को ऊपर उठाते और फिर से उसको अपने पुराने गौरव पर पहुंचाते हैं । इसी कारण इन चिन्हों का लोप हो जाने देना मानों हमेशा के लिये गुलामी मोल लेना है। संसार में पुरुषों के नाम पर मर मिटने से अधिक और क्या भला काम हो सकता है ! "How can man die better than facing fearful odds; for the ashes of his fathers and the temples of his Gods" और भी खेद होता है जब यह देखते हैं कि महाराज नैपाल वही शिशोदिया क्षत्री हैं जिनमें राणा प्रताप से वीर हो गये हैं । आज शिशोदिया क्षत्रियों की पुरानी वीरता और देशभक्ति पर महाराज ने हमेशा के लिये एक दाग़ लगा दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्वीकार

वीर धर्म दर्पण नाटक

बनारस हिन्दू कालेज-में संस्कृत के प्रोफेसर परशु राम नारायण पाटणकर रचित। यह नाटक संस्कृत में है और पुराने कवियों की शैली पर लिखा गया है। इसमें प्रसाद गुण और ठौर २ नई २ उक्ति युक्ति सब अति प्रशंसनीय है। कवि पुराने कवियों की छटा इस नाटक में लाने से कहीं नहीं चूके। हम को कहीं पर इसमें कोई त्रुटि नहीं मिली जिसे साहित्य-दर्पणोक्त लक्षणों से इसे दूषित ठहराते। हमे बड़ा हर्ष इस बात का है कि संस्कृत उज्जीवित है और अभी ऐसे उत्कृष्ट कवि विद्यमान हैं।

मूल्य १) काशी के हित चिन्तक मुद्रालय में यह नाटक मुद्रित हुआ है इसके कवि को अनेक धन्यबाद है और जितनी उनकी प्रशंसा की जाय सब उचित होगा।

महर्षि नारद जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र

महर्षि नारद जी की अनन्य ईश्वर भक्ति को कौन न जानता होगा। एक अधमजात अध्यात्मसाधन तथा अपने और २ गुणों द्वारा किस प्रकार एक महान पुरुष बन जाता है वही इस छोटी सी पुस्तक में उनके चुनिन्दः सूक्ति सहित दर्शाया गया है भाषा इसकी बेमुहाविरे तथा अशुद्ध अवश्य है।

मूल्य -) पता—ब्राह्मधर्म प्रचारक आफ़िस अनारकली—लाहौर।

भरत मिलाप

रामयण में भरत जी का चरित्र मनुष्यमात्र के अनुकरणीय है। भरत जी का स्वार्थत्याग, भ्रातृप्रेम, सच्चरित्रता राजनीतिज्ञता आदि को प्रत्येक मनुष्य को अपना आदर्श बनाना चाहिये। राम के वन-बास के अनन्तर भरत जी ने अपने जीवन को किस प्रकार लोक में अनुकरणीय बनाया यही इस पुस्तक में सरल सुललित भाषा में लिखा गया है इस पुस्तक को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले समस्त बालकों को सदुपदेश लाभ करने के लिये अवश्य पढ़ना चाहिये।
मूल्य ।) पता वही—ब्राह्म धर्म प्रचारक आफिस अनारकली लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-दर्पण

स्त्रियों और लड़कियों के पढ़ने योग्य हिन्दी भाषा में पहिला

मासिक पत्र।

धर्म, साहित्य, सामाजिक सुधार, राजनीति आदि
विषयों पर अधिकतर

स्त्रियों ही के लेख

इस पत्र में लिखे रहते हैं।

मूल्य डाक व्यय सहित साल भर के लिये २) एक प्रति।)

सम्पादिका—श्रीमती रामेश्वरी देवी

मैनेजर—श्रीमती कमला देवी

पता—१३ सिटी रोड—प्रयाग

"श्री वेङ्कटेश्वर समाचार" लिखता है:—"कन्याओं और महिलाओं के लिये यह पत्र अत्युत्तम है और उपयोगी है। हम बड़े आदर से इसका स्वागत करते हैं। समस्त शिक्षित घरानों में इसको जगह मिलनी चाहिये। हमारा ख़याल है कि यदि यह पत्र चलता रहा तो स्त्री शिक्षा की बहुत बड़ी उन्नति होगी।"

इसी प्रकार से और और अङ्गरेज़ी और हिन्दी पत्र लिखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मयोगी।

हिन्दी भाषा

में

भारत राष्ट्रीय धर्म का सब से उत्तम पत्र

(प्रत्येक अष्टमी को प्रयाग से निकलता है)

सम्पादक

श्रीयुत् सुन्दरलाल जी बी० ए०

यह पत्र प्राचीन वैदिक धर्म की मर्यादा को सामने रखते हुए भारत राष्ट्रीय पक्ष के सिद्धान्तों पर निर्भयता के साथ विचार प्रकट करता है।

यह पत्र आगामी बसन्त पञ्चमी से साप्ताहिक हो जावेगा। साप्ताहिक का वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित केवल २॥) इस समय से ग्राहक बनने वालों को अनेक सुविधाएं हैं।

मिलने का पताः—

मैनेजर "कर्मयोगी"

इलाहाबाद।

५६ गङ्गादास के चौक इलाहाबाद में सुन्दरलाल के प्रबन्ध से छप कर प्रकाशित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री

वन्देमातरम्

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

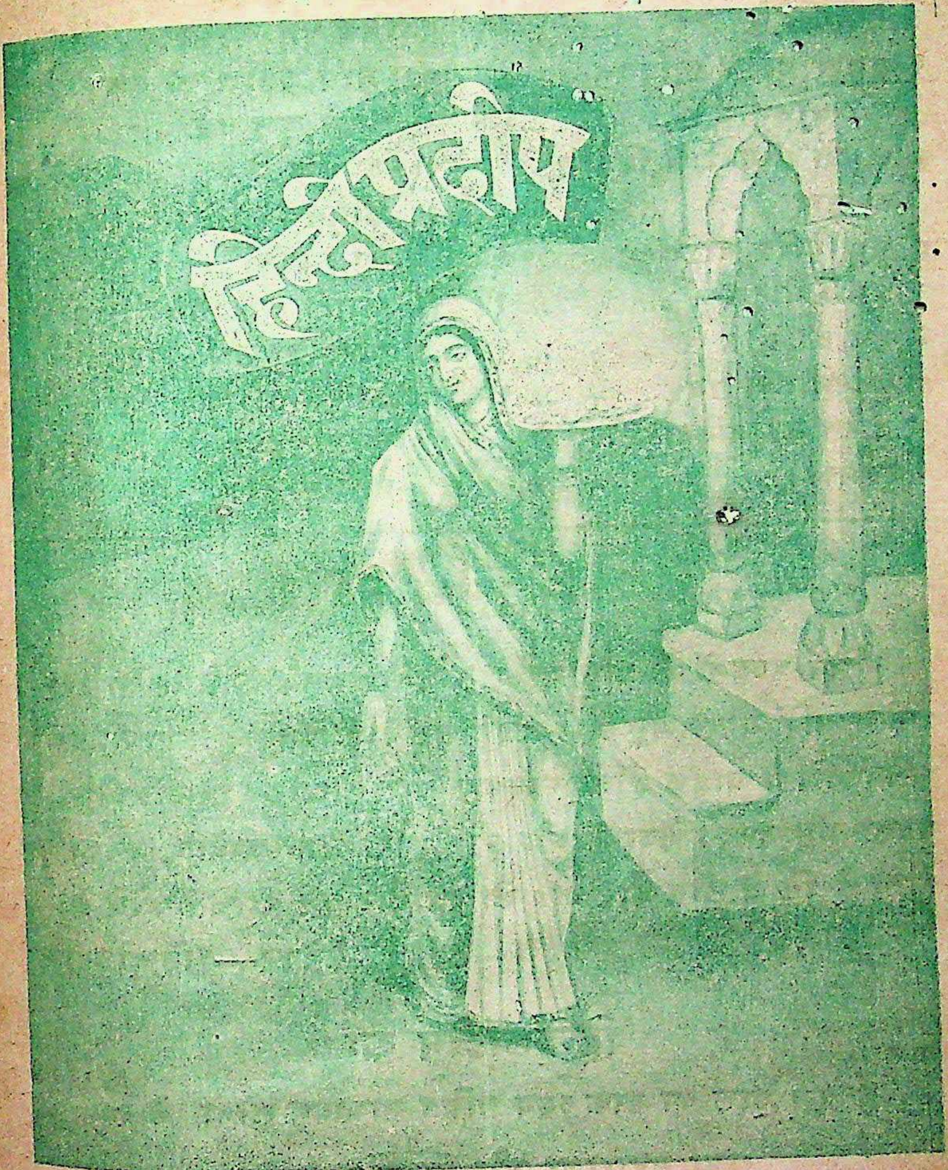

(हर महीने की अमावस्या को प्रयाग से निकलता है)

सम्पादक—पं० बालकृष्ण भट्ट

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
"हिन्दी प्रदीप" प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची।

१-वेद क्या है? ... १
२-हमारे पुराने ऋषिजन क्यों माननीय थे ७
३-कीर्त्ति कौमुदी के विकास का द्वार ९
४-पृथु चरित्र नाटक ... १०
५-हेनरी पैट्रिक १५
६-मन की मौज १७
७-बूढ़े और जवान १८
८-भारत का भविष्य और वसन्त २०
९-चित्र दर्शन २१
१०-आर्य समाज की सब क़लई खुल गई २५
११-उपयुक्त क्रिया २६
१२-श्रीयुत् गन्धी के कारावास की कहानी २७
१३-हमारी भाषा हमारी पूंजी है ३६
१४-अमेरिका तथा भारतवर्ष की रेलगाड़ियां ३७
१५-बसन्ती देवी की रसिकता ३९
१५-मासिक दृश्य ४०

नोटिस।

जिन सज्जनों के पास यह अङ्क बतौर नमूने के भेजा जा रहा है उन्होंने यदि अगले अङ्क के निकलने तक कोई उत्तर न दिया तो समझा जावेगा कि वे ग्राहक होना स्वीकार करते हैं और "हिन्दीप्रदीप" का अगला अङ्क उनकी सेवा में वी० पी० द्वारा भेजा जावेगा, हमको पूर्ण आशा है कि वे लोग वी० पी० को स्वीकार कर बाधित करेंगे।

मैनेजर—"हिन्दीप्रदीप"

हिन्दीप्रदीप का

मूल्य १ साल का डाक व्यय सहित साधारण लोगों से २॥)

राजा महाराजा और तालुक़ेदारों से ५)

सरकार अङ्गरेज़ी, सरकारी अफ़सरों तथा दफ़्तरों से २५)

एक प्रति का मूल्य ।)

मिलने का पता

मैनेजर—"हिन्दीप्रदीप"

प्रयाग पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड्

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

जि० ३१ { माघ वदी अमावस्या बुधवार सम्वत १९६६ } सं० ४

वेद क्या है

आर्य सन्तान हिन्दूमात्र में कौन ऐसा होगा जो वेद का आदर न करे और इस बात का अभिमान न करता हो कि हमारे धर्म का मूल वेद है। पुराण और तंत्रों ने वैष्णव, शैव, शाक्त आदि भिन्न २ संप्रदाय चला कर देश में यद्यपि बहुत अधिक भेद और अनैक्य फैला दिया पर वेद के मानने में सब एक हो जाते हैं। और सब लोग अपने २ सम्प्रदाय का मूल वेद ही को मानते और कहते हैं राष्ट्रीयता (Nationalism) का तो वेद आधार है। जब तक हम वैदिक पथ का अनुसरण करते रहे हिन्दू जाति बराबर प्रबल रही। उधर बौद्ध और जैनियों का उभड़ना इधर पुराण और तंत्रों के प्रचार ने देश में ऐसी भेद बुद्धि पैदा कर दी कि हम बराबर क्षीणसत्व और क्षीणबल होते गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद के सम्बन्ध में अब यहां तीन प्रश्न एक साथ उठते हैं। वेद शब्द की व्युत्पत्ति क्या है? वेद का लक्षण क्या है? और स्वरूप उसका क्या है? "विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते वा एभिर्धर्मादि पुरुषार्थाः असौ वेदः" अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारो पदार्थ जिससे जाने जांय या जिस में पाये जांय वह वेद है। प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और आगम इन चार प्रमाणों में आगम वेद ही है। ऋग् वेद भाष्य की भूमिका में, सायनाचार्य ने वेद को अपौरुषेय अर्थात् किसी का बनाया नहीं सिद्ध किया है। अनिष्टनिवारण पूर्वक इष्ट प्राप्ति के अलौकिक उपाय को जो जानै वह वेद है। प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों जहां गिर जाते हैं और उनसे काम नहीं चलता वहां उस वस्तु को हम वेद ही से जान सकते हैं। इसी से वेद की वेदता है और उस वस्तु के जानने की इच्छा रखने वाला वेद का अधिकारी है।

अब वेद का स्वरूप क्या है। इसे बौधायन आदि ऋषियोंने यों लिखा है "मंत्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्" मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक महामुनि जैमिनि ने भी ऐसा ही लिखा है "मंत्रब्राह्मणात्मकः शब्दराशिर्वेदः" मंत्र और ब्राह्मण के शब्दों का समूह वेद है। जिसका विनियोग किया जाय अर्थात् यज्ञ आदि कर्मों में जो लगाया जाय या जिससे काम लिया जाय वह मंत्र है और जो काम उन मंत्रों से लिया गया उसके विधि की प्रशंसा जिसमें हो वह ब्राह्मण है। उन मंत्रों के इस भांति विभाग किये गये हैं ऋक्, साम और यजु जो मंत्र-पाद अर्थात् श्लोक की तरह है वह ऋक् है, जो गान के रूप में है वह साम है और जो गद्य रूप में है वह यजु है।

अब दूसरा प्रश्न यहां यह उठता है। वेद के उत्पत्ति का समय हम लोग निश्चय कर सकते हैं या नहीं। निश्चय नहीं कर सकते तो क्यों या निश्चय कर सकते हैं तो किस भांत। कालिदास आदि ग्रन्थकारों का समय लोगों ने निर्णय कर लिया है और उससे भी प्राचीन लोगों का समय ताम्रपत्र तथा भूगर्भ विद्या के द्वारा बुद्धिमानों ने निश्चय कर लिया है तो सिद्ध हुआ कि बुद्धि संपन्न मनुष्यों ने वेद के समय के निरूपण में भी यत्न अवश्य किया होगा। किन्तु जब हमे यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण होता है कि मीमांसकों ने वेद को अपौरुषेय माना है और यह वाक्य स्मृति का याद आता है "अग्निवायुरविभ्य स्तुत्रयं ब्रह्म सनातनम्। दुदोह यज्ञसिध्यर्थं ऋग्यजुः सामलक्षणम्" यज्ञ की सिद्धि के लिये ऋग्, यजु और साम को अग्नि, वायु और सूर्य से दुहा। वेद में जो शब्द मिले उन्हीं से हरएक गिनती अलग२ आदि में बनाई गई। "वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संख्याश्च निर्ममे" अर्थात् जैसा अग्नि, वायु सूर्य्य प्राकृतिक हैं, तद्वत् वेद भी प्राकृतिक हैं किसी के बनाये नहीं हैं। मान लो मनुष्यकृत भी हैं तो किस युग में बने इसका बतलाना अति कठिन है इससे यही कहना युक्तिसंगत है कि कब वेदों की उत्पत्ति की गई यह नहीं जान सके।

यह आर्यों का धर्मग्रन्थ है और धर्मग्रन्थ जितने हैं उन्हें अवश्यमेव किसी ने बनाया है। तब वेदों को भी किसी ने बनाया ही होगा। हां यह ठीक है किन्तु वेद हिन्दुओं हीं का धर्म ग्रन्थ नहीं है किन्तु यह तो तब का है जब आर्य, अनार्य, हिन्दू तथा म्लेच्छ आदि संज्ञा रही ही नहीं और यह सार्वभौमिक अर्थात् संसार भर के लिये है। केवल धर्म ही का विषय इस में प्रतिपादित हो सो भी नहीं। अपिच कौन सी ऐसी बात है जिस की संज्ञा का ज्ञान या पहिले पहिल जिसका नाम हमें वेद से नहीं मालूम हुआ। वादी यहां पर अब यह कहेगा कि वेद में यज्ञादि के विधान हैं तब यह केवल धर्म ग्रन्थ नहीं तो और क्या है। उत्तर में कहा जाता है कि वादी को पहिले तो यही भ्रम है जो वह यज्ञ के अर्थ अग्नि में होम या पूजा पाठ समझ रहा है किन्तु यज्ञ के वास्तव में तात्पर्य किसी बड़े काम Enterprise के हैं। बहुत से मनुष्य एक मन हो किसी बड़े काम को कर गुज़रें, वह यज्ञ है जैसा इस समय कांग्रेस इत्यादि किये जाते हैं। "यज" के जिस से यज्ञ शब्द बना है, देवपूजा, संगतिकरण, दान आदि बहुत से अर्थ लिखे हैं। इसी से वेद मनुष्यमात्र के लिये कहा जा सकता है न केवल आर्य वा हिन्दू ही मात्र के लिये। आर्य संज्ञा तो तब से हुई जब संसार में बहुत से मनुष्य सब ओर फैल गये तब जिन का उत्तम आचरण रहा वे आर्य हुये और जो निकृष्ट काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लगे वे म्लेच्छ, असुर, दस्यु आदि नाम से कहलाये। Philologist बहु भाषा भिज्ञ जब शब्दों के Root जड़ का पता लगाने लगते हैं और उस में हिन्दी की चिन्दी निकालते हैं, जब लाटिन ग्रीक आदि में Root का पता नहीं लगता तब लाचार हो संस्कृत में उसे ढूंढ़ते हैं। जैसा Ivory हाथी दांत जिसके माने हैं। जब कहीं पता न लगा तब संस्कृत "इभ" की ओर झुके। जितने प्राकृतिक शब्द हैं जिन से प्राकृतिक पदार्थों का ज्ञान होता है सब वेद की भाषा में पाये जाते हैं। शब्द ज्ञान का विषय इतना गहन और दुर्गम है कि यास्क आदि निरुक्तिकारों ने बहुत कुछ छान बीन किया उपरान्त पाणिनि, पतंजलि और कात्यायन आदि कितने वैयाकरण व्याडि, शाकटायन, शाकल्य आदि न जानिये कितनों ने शब्द वारिधि में ग़ोते मार २ शब्द मौक्तिकों को निकाला जिन से इस समय की यावत् सभ्य जाति भाषा के ज्ञान में लाभ उठा रही हैं।

ईसाई जो बाइबिल को धर्मपुस्तक कहते हैं और दावा करते हैं कि समग्र संसार के लिये ईसाई धर्म है और बाइबिल ही सच्ची पुस्तक है उस में भी वेद की चोरी का पता लगता है। यहुन्ना की इंजील के प्रारम्भ में आयत है। Words were in the beginning and word was God. प्रारम्भ में शब्दसमूह ही थे और शब्द ही ईश्वर था। पहिले हम लिख आये हैं कि "मंत्र और ब्राह्मण के शब्दसमूह का नाम वेद है।" अब यहां पर यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि पुराणों से वेद को क्या धक्का पहुंचा। इसमें सन्देह नहीं पुराणों में वे प्रतिपादित अर्थ बहुत ही बहुत बढ़ाये गये बल्कि भक्ति मार्ग जिसकी वेदों में कहीं २ केवल झलक मात्र पाई जाती है उसका विस्तार पुराणों में इतना अधिक किया गया कि एक शास्त्र बन गया। सैकड़ों ग्रन्थ भक्तिमार्ग के पोषण में बन गये। इसका एक विशेष कारण यह भी ध्यान में आता है कि ईश्वर में भक्ति खुदापरस्ती तथा परकाल के बनाने की चिन्ता भी क़ौम की कमज़ोरी की निशानी है। जब तक क़ौम उरूज़ पर और देश उन्नत दशा में रहता है तब तक ईश्वरनिष्ठा और भक्ति भाव नहीं सूझता। यह तो प्रत्यक्ष है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि भक्तिमार्ग के अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ तथा भक्तिमार्ग प्रवर्तक आचार्य महा प्रभु कृष्ण चैतन्य, महाप्रभु वल्लभाचार्य, मध्व और रामानुज स्वामी निम्बार्क आदि मुसल्मानी राज्य में हुये। जब देश स्वाधीन और लोग स्वतंत्र न थे भगवद्गीता के अतिरिक्त कोई ग्रन्थ निरी भक्ति के न थे। दूसरे एक यह भी मालूम होता है कि संसार के लोगों की झुकावट दो ओर मालूम होती है। Material and immaterial पंचभौतिक और अपंचभौतिक। यूरोप के देशों की प्रवृत्ति पंच भौतिक पदार्थ की ओर है। अनेक तरह के नये २ विज्ञान निकालते जाते हैं। तरह २ की कल, भाफ़ और बिजली के द्वारा जो काम कर रहे हैं उसे देख लोग अचंभे में आ जाते हैं। हमारे वेद का भी समय पहिले पहिल निरा Materialism पञ्चभौतिक विज्ञान का था उस समय के हमारे आदिम ऋषि लोग कोई विज्ञान या विद्या नहीं बची जिसका सूत्रपात वे नहीं कर गये। उपरान्त Immaterialism आध्यात्मिक या अपञ्चभौतिक तत्वों की गवेषणा आरम्भ हुई उस में भी वैदिक ऋषि सम्यक् पारगामी हुए। मुसल्मानों के विजयी होने पर जब से हिन्दू जाति अपनी स्वतंत्रता खो बैठी तब से इनकी असाधारण मानसिक शक्ति तथा शौर्य, वीर्य आदि उदार गुणों के स्रोत पर डांट सी लगा दी गई। बहुधा लोग भकुआ मालाधारी भक्त बन गये। स्वार्थलंपट और भीरु प्रकृति के हो अपना पन सर्वथा खो बैठे। भक्त माल के भक्त सब इसी समय हुये। अब इस समय सुशिक्षा का नवजीवन पाय हम जो बहुत दिनों का भूला हुआ अपनापन फिर लाया चाहते हैं तथा अपने पैरों खड़े होने की कोशिशें कर रहे हैं वही राजविद्रोह समझा जाता है। अस्तु जिससे वेद को अधिक धक्का पहुंचा और उसका तत्वार्थ ढँप गया वह पुराणों का अलंकारिक वर्णन है। जैसा वृत्रासुर का इतिहास, इन्द्र और अहिल्या की कथा। इन्द्र एक नाम परमऐश्वर्ययुक्त परमेश्वर का है, अहिल्या का अर्थ यास्क ने निरुक्त में रात्रि का लिखा है जार के अर्थ क्षय के हैं। समस्त तेजयुक्त सूर्य ही इन्द्रपद वाच्य यहां है। सूर्य के उदय होने पर रात्रि का क्षय होता है यही वास्तविक अर्थ इन्द्र के अहिल्या जार का हुआ। इसी को रोचक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भयानक के क्रम पर पुराणों में इन्द्र को अहिल्या का जार बनाने के लिये एक रूपक खड़ा कर दिया गया । ऐसा ही प्रजापति का स्वकन्यानुगमन वाली कल्पना भी कल्पित की गई है। ऐतरेय ब्राह्मण ३-३-९-प्रपाठक है। "प्रजापतिर्वैस्व दुहितर मभ्यध्यायत्" प्रजा के पालन का अधिकार सूर्य का है इस लिये कि सूर्य गरमी से अन्न उपजाता है फल सब पकते हैं। सूर्य उदय होते ही ऊषा Dawn पौफट होने लगता है। ऊषा का जन्म तभी होता है जब अरुणोदय होने लगता है तो सिद्ध हुआ ऊषा मानो सूर्य की दुहिता "कन्या" रूप हुई स्त्री और पुरुष के संयोग सदृश अरुण रूप किरण वीज के समान सूर्य उसमें निक्षेप करते हैं। इस कथा को अत्यन्त अनर्गल और भ्रष्ट कर पुराणकारों ने वर्णन किया है। 'काम' कितना भयानक है कि प्रजापति को भी अपने वश कर लिया इससे काम को दबाना ही कल्याण का मार्ग है यह इससे उपदेश निकला। इत्यादि जितने रूपक इतिहास के क्रम पर पुराणों में गढ़ दिये हैं सबों का ऐसा ही एक २ तात्पर्य निकलता है वृत्रासुर की कथा, समुद्रमथन आदि इतिहास सब रूपक में विस्तार के साथ रोचक कर ऐसा दिखाये गये हैं कि वास्तविक अंश उनका बिलकुल छिप गया। इन ऐतिहासिक रूपकों में ऐसे कोई भी न निकलेंगे जिनमें कोई न कोई अच्छा उपदेश न निकलता हो अस्तु—वेद क्या है इस बात की टटोल हमारे पढ़ने वालों को कुछ न कुछ अवश्य हो गई होगी। एक विशेष बात वैदिक साहित्य (Vedic Literature) की ओर भी ध्यान देने के लायक़ है कि वेद के जिस भाग को विचारो चाहे वह आध्यात्मिक विषय का हो चाहो आमुष्मिक राष्ट्रीयता का भाव सब ओर चुआ पड़ता है। जिसमें अपने देश का योगक्षेम और आर्य जाति की उत्कर्षता सर्वोपरि स्थिर रहै यही वैदिक ऋषियों के सिद्धान्त का सारांश है और उसी को वे सब से अधिक और मुख्य धर्म मान गये हैं इसी से यह कहना अनुचित न होगा कि स्वराज्य के लिये वेद महोपकारी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे पुराने ऋषिजन क्यों माननीय थे

हमारे पुराने ऋषि मुनि जिनके नाम से हम बिक रहे हैं सर्वथा निकम्मे और गिरी दशा में आ कर भी हम ऋषि सन्तान हैं इस अभिमान में फूले नहीं समाते सो उन ऋषियों में कौन सी ऐसी बात थी जिस का हमें इतना घमण्ड है। क्या उनके अङ्ग, प्रत्यङ्ग, हाड़, मास सब इसी पञ्चभूत के नहीं बने थे? उनकी रक्त संबाहिनी शिराओं में जिस उत्तेजना के साथ रक्त सञ्चालन होता था वह अब हम में क्यों नहीं होता? निश्चय वे भी ऐसे ही हाड़ मास के बने थे जैसे हम हैं बल्कि हम तो अब इस सभ्यता के समय में पैदा होने का दावा बांधते हैं। कितने तरह के आराम और आशाइसें जो हम में हैं उन ऋषियों को मयस्सर न थीं। बहुत तरह के विज्ञान और कलाओं का अंकुर भी कदाचित् उन ऋषियों के समय में न था। वर्त्तमान बीसवीं शताब्दि का तो कहना ही क्या है जिस समय हमारे वेद प्रवर्तक ऋषि हुये वह अत्यन्त आदि में काल होने से वे लोग साधारण सभ्यता की अनेक बातों से वञ्चित थे। वल्कल पहिनते थे जापान के बने रेशमी कपड़ों का कभी नाम भी उन्होंने न सुना होगा। पर्णकुटी में रहते थे कन्द मूल और नीवार (एक प्रकार का मोटा धान) उनका भोजन था। कविवर भवभूति ने लिखा है " नीवार मुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि " "ये घर उन गृहस्थों के हैं जो मूठी भर पसई का चावल पकाय खा कर रह जाते हैं"। इन सब बातों से पूरी टटोल हो सकती है कि नूतन सभ्यता की सामग्री कहां तक उनमें थी। किन्तु चित्त की एकाग्रता, स्थिरता, दृढ़ सङ्कल्प और अपने सिद्धान्त के ऐसे पक्के थे कि इस समय के बड़े बड़े सभ्यों के कान काटे थे। जिस बात के लिये अड़ गये उसे कभी के छोड़ा यही सुशिक्षा और सभ्यता का दम भरने वाले हम हैं कि देशी चीज़ों के बर्ताव के लिये हज़ार सिर धुनते हैं और प्रत्यक्ष देख भी रहे हैं कि देश की बनी वस्तुओं को काम में न लाने से दरिद्रता देश में डेरा किये है पर विलायती चीज़ों के चटकीलेपन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और नफ़ासत में ऐसे फसे हैं कि हमारे हज़ार बार के लेक्चर का एक भी फल न हुआ। हमारे पूजनीय ऋषि प्रमादी और भोगलिप्सू न थे। इन्द्रियग्राम को भरपूर कसे थे जब कभी प्रबल इन्द्रियां के वश में भी हो जाते थे तो पीछे अत्यन्त सावधान हो द्विगुण संयम से तपस्या कर उस अपनी त्रुटि को पूरी कर डालते थे। जिनकी हम नक़ल कर रहे हैं उनमें इन्द्रियों का कसना नाम को नहीं है। ज्यों २ सभ्यता बढ़ती जाती है त्यों २ भोगलिप्सा, आमोद, प्रमोद दसगुना अधिक होता जाता है और इसी से हमें ढाढ़स बँधी है कि ये भी एक दिन हमारे समकक्ष हो जायगे। मुसलमान इसके उदाहरण हो चुके हैं। अपनी सब ज़रोरी तरोरी खो बहाय हमारे ही समकक्ष जित और गुलाम वे भी हो गये। इसमें सन्देह नहीं भारत की भूमि सोने से लसी है पर उस सोने में विष का असर ज़रूर हैं जिसके पास गया वही प्रमादी हो रङ्गीला छबीला बनने लगता है। समस्त जाति की जाति के पौरुषेय गुणों में डाट दे दी जाती है। ऋषियों को इस सोने के दोष का भरपूर परिचय था इसीसे वे सब त्याग वन में बसते थे। हमारे यहां के जल वायु का कुछ ऐसा ही असर देखा जाता है कि हम किसी दूसरे के गुणों को कभी न ताकेंगे केवल दुर्गुणों को गांठ बांध लेंगे। ऐयाशी, नुमायश, नज़ाकत, कोमलता, मिथ्याभिसन्धि हम ने मुसलमानों से सीखा। भोगलिप्सा, फ़ेशन की काट छांट, शराबख़्वारी अब इनसे सीख रहे हैं। कलकत्ते के बाबू लोग इसके उदाहरण मौजूद हैं। शिक्षा के साथ ही साथ एक बात भलाई की भी ये हमारे में बो रहे हैं कि हम आज़ादगी के गुण को पहिचानने लग गये हैं। आज़ादाना ख़याल ज़िन्दान तोड़ जाति पांति के बन्धन से खान पान में आज़ाद इत्यादि नस २ में आज़ादी भरी जा रही है। अन्त को यह आज़ादगी हमारे में एक दिन राष्ट्रीय (Political) आज़ादगी का बाइस होगी "क्वचिद्दोषो गुणायते"। ईश्वरीय प्रेरणा से यही हमारी स्वतन्त्रता आर्षक्रम पर ढुलक गई निज स्वरूप का ज्ञान, स्वार्थ त्याग, आत्म निर्भर, अपने पैरों खड़े होना आदि शुभ गुण आते क्या देर। पूर्वज ऋषियों के ऋषित्व का आदर्शरूप तभी मुसल्मान भी उन्हीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषियों के इस कहलाने योग्य होंगे और यह सब अवश्य भावी है क्योंकि प्रकृति के नियम अनुसार सदा एक देश एक सी दशा में नहीं रहा "नीचैर्गच्छत्युपरिच दशा चक्रनेमिक्रमेण"। ऐसा मालूम होता है वह दिन बहुत दूर नहीं है। एक फ़सल कटने पर दूसरी जो अब तैयार हो रही है अवश्य देश को उबारेगी। जिनमें उच्चशिक्षा के साथ ही साथ स्वतन्त्रता का भाव बे तरह जगह करता जाता है। न जानिये क्या ईश्वरीय नियोग है कि इस समय ऐसी हवा बह चली है कि सबही अपनी २ उन्नति पर कटिबद्ध हैं। हमें खेद अपनी ब्राह्मण जाति पर है कि इस समय एक यही निरी भिक्षावृत्ति का सहारा किये हुये निकम्मे हो रहे हैं। ऋषियों का पुराना ब्रह्मवर्चस् तभी उत्तेजित हो सकेगा जब हमारे ब्राह्मण चेतेंगे। उन्हीं के न चेतने से हमारे धर्म का ह्रास है। खेद है कि जिस सात्विक चोखे धर्म को आर्य ऋषियों ने प्रचलित किया वह इन स्वार्थलंपट ब्राह्मणों के कारण बिगड़ रहा है। जो केवल ब्राह्मणों के स्वार्थत्याग ही से बन सकता है और बता रहा है कि ऋषिजन क्यों पूजनीय थे।

कीर्त्ति कौमुदी के विकाश का द्वार

ग्रन्थकारों ने लिखा है "कीर्त्तिर्यस्य सजीवति" संसार में सदा जीता वही रहता है जिसकी कीर्त्ति सब लोग गाते हैं। कीर्त्ति कौमुदी के विकाश में अन्धकार का कहीं से संचार नहीं रहता। यह ऐसा उँजाला है जिसके आगे पूर्णकला शारदेन्दु की चाँदनी का उँजाला अत्यल्प तुच्छ तथा हेय है। तब क्षणप्रभा बिजली और महताब की क्षणिक रोशनी किस गिनती में है। काल महा पिशाच कवलित करने से किसी को नहीं छोड़ता पर कीर्त्ति कौमुदी के निगलने में उस की भी शक्ति घट जाती है। वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति ऐसे कवि; हरिश्चन्द्र और कर्ण ऐसे दानी; राम और युधिष्ठिर ऐसे दृढ़व्रत, सत्यप्रतिज्ञ धर्मात्मा; भोज और विक्रम से विद्या रसिक, गुणग्राही;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकन्दर और नेपोलियन से विजयी; अर्जुन, प्रताप तथा शिवा जी सरीखे युद्धोत्साही वीर न जानिये कब हुये हैं पर काल अपनी विकराल करालता इन पूर्वोक्त महापुरुषों पर प्रगट करने से हार मान बैठा। इसी से कहा है "नाम काल नहिं खाय" तो निश्चय हुआ, कविता, उदारता, वीरता आदि अनेक प्रशंसनीय उत्कृष्ट गुण ही कीर्त्ति कौमुदी को चिरस्थायिनी करने के हेतु या द्वार हैं। कीर्त्ति कौमुदी के विस्तार करने वाले द्वार इन सब गुणों के रहते इस समय सब से बड़ा द्वार देश के उद्धार का है। यह समय सीताहरण का है गुणग्रामाभिराम श्रीराम की बाट सभी जोह रहे हैं। जिस पुरुधौरेय के लिलार में यह यश पाना लिख दिया गया है "ततोन्यो नास्ति पुण्यकृत्" उसी की कीर्त्ति कौमुदी प्रकाश भास्वान् सा सदा भासता रहेगा।

पृथु चरित्र नाटक

(गतांक से आगे)

चौथा गर्भाङ्क

(स्थान नगरवीथी)

(नेपथ्य में कल कल के उपरान्त कई एक नागरिकों को साथ लिये एक राजदूत का प्रवेश)

राजदूत—उग्र शासनकर्त्ता हमारे राजा वेणु की आज्ञा है कि जैसा तेरा नाम सुकृतान्तक है वैसा काम भी तुझ से होना चाहिये। सो तू जा इन अपराधियों को साथ ले इनके अपराध की सब कथा लोगों को सुनाय, जो दण्ड जिसको हमने जैसा दिया है वह सबों को बतला दे। (नागरिकों में से एक को अपने आगे कर) यह "सुचालवर्द्धनी" सभा का सभापति है। हमारे महाराज को जो कुछ अरोचक है वही यह सुचाल शिक्षा के बहाने लोगों को बतला रहा है। इसलिये इसे दश वर्ष के कठिन कारागार का दण्ड दिया जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा दूत-(उसे धकियाता हुआ) अपने किये का फल भोगने को चल यहां से। क्यों राज विरुद्ध कर्म तू ने किया? (हाथ में हथकड़ी छोड़ ले जाता है)

नागरिक-हाय! ऐसे निठुर अन्यायी का भगवान कब सत्यानाश करेंगे। अन्याय! अन्याय!! महा अन्याय!!! (चिल्लाता हुआ जाता है)।

राजदूत—(दूसरे नागरिक को आगे कर) यह "विद्या विनोदिनी" पाठशाला का अध्यापक है। ऐसी एक पाठशाला स्थापित कर यह अविद्या अन्धकार के उच्छेद का यत्न कर रहा है। महाराज को भय है कि सब विद्या पढ़ लेंगे तो हमारी कुटिलता कहीं खुल न जाय। इससे इसे सदा के लिये देश निर्वासन का दण्ड दिया जाता है।

दूसरा दूत—(उसे भी वैसा ही धकियाते ले जाता है यह अन्याय! अन्याय!! चिल्लाता हुआ बाहर जाता है)।

राजदूत-(तीसरे नागरिक को आगे कर) तुम सदा महाराज की हां में हां मिलाते रहे। दंभ के आचरण और चिकनी चुपड़ी बातों से लोगों को रिझाय ठग लेने में बड़े प्रवीण हो। बहुत ही चलते पुर्ज़े हो महाराज तुम्हारे इन गुणों से रीझ तुम्हे महामहोक्ष की पदवी देते हैं। सब लोग ध्यान रक्खो! जो कोई हमारे राजा को प्रसन्न रक्खेगा उसका इसी तरह सत्कार किया जायगा।

नागरिक—धन्योस्मि! कृतार्थोस्मि! अनुग्रहीतोस्मि!—"अनिष्ट संघात सदा प्रभोक्ता खलाग्रणी धर्मकुठारघाती। तवैष कृत्यान्यतिगर्हितानि फलान्यवाप्स्यस्य चिरेण राजन्" ईश्वर करे महाराज नरकपुर (रुक कर स्वगत) मेरे मुंह से यह क्या सरस्वती निकल गई नहीं नहीं स्वर्गद्वार के पाहुने हों। (जाता है)

दूत—(चौथे नागरिक को आगे कर) तुम स्वार्थसाधन में बड़े प्रवीण हो। तुम ने अपने थोड़े से लाभ के लिये देश की बड़ी बड़ी हानि करने में कभी संकोच नहीं किया। ऐसे ही ऐसे लोगों का जब तक एक दल न बन जायगा तब तक राज में स्थिरता न आवेगी। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से महाराज प्रसन्न हो तुम्हे अर्थपिशाच की पदवी देते हैं। तुम श्रेष्ठि-चत्वर के जितने धनी सेठ हैं सबों के सिरताज किये गये।

नागरिक-ऐसे ही राजा होते रहैं तो हम लोगों की बन पड़े लोगों को ठग रुपयों से घर भर दें।

दूत-बाकी लोगों को राजकीय प्रबन्ध न बिगड़े इसलिये महाराज अभी छोड़े देते हैं। और सूचित किये देते हैं कि जो उनके उग्रशासन से विचलित होगा उसे ऐसा दण्ड मिलेगा। जो राजा के अनुकूल रहैगा वह ऐसा ही इनाम भी पावेगा। (सब गये)

पाचवां गर्भाङ्क

(स्थान राज पुरोहित कुक्कुट मिश्र का घर)

(राजपुरोहित कुक्कुट मिश्र का प्रवेश)

कुक्कुट—ठीक कहा है "अति परिचयादवज्ञा" अत्यन्त घिष्ट पिष्ट से आदर सन्मान मटिया मेट हो जाता है। बाहर से न मालूम कहां २ के आये उनके नाम के आगे दो दो गज का पुछल्ला लगा दिया गया। हम मुह ताकते ही रह गये। पण्डिताई की जो कहो तो हमारी इस पाग और पाव भर सुंघनी के बेल ही से हमारी पण्डिताई झलक मार रही है। वास्तव में हम हैं भी ऐसे माहन् महत्तर पण्डित। भवभूति को कुछ भी आगे पीछे का ज्ञान होता तो।

"उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोपि समाव धर्मा,
कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी"।

हमारा सा पण्डित न आगे था न अब है न कभी होगा। न पुछल्ला ही हमारे नाम के आगे लगा तो हमारी पण्डिताई में कभी खण्डिताई आ सकती है। उः हमारी पण्डिताई का कुछ ओर छोर है। उरान पुरान तो किसी गिनती में नहीं समग्र वेद वेदांग को हमने दो दिन में पढ़ डाला। सांख्य, मीमांसा और पातंजल को दो घंटे में। तर्कवाद न्याय को सूंघ कर फेंक दिया। तब हम सा पण्डित काहे को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं है गा। तातचरण हमारे कुछ पढ़े लिखे तो थे नहीं, हम धुरन्धर हुये इस लिये हम अपने बाप से भी बड़े हो गये । तब क्या "मूर्ख पुत्रस्तु पण्डितः तृणवन्मन्यते जगत्" इसी से हम सिर सदा ऊंचा किये रहते हैं संसार भर को भुनगा मानते हैं । झुकना जानते ही नहीं शालीनता सभ्यता तथा विनीत होना सब को भंगघोटने के साथ कूड़ी में घर घोट कर पी गये । न विश्वास हो हमारा यह भंगघोटना देख लो । पण्डिताई में और है क्या तनिक ज़बान चर पर हो सो लिखा है "पाण्डित्ये चापलंवचः" तिसमें हम राजपुरोहित ठहरे "वाम्हन हाऊ झाऊ" एक गुन हमारे में और बड़ा भारी है कि व्यवस्था देना बहुत अच्छा जानते हैं । जैसा रुपया पावैं वैसी व्यवस्था दे दें । काशी के पंडित यह सब विद्या हमी से सीख गये हैं । एक बात और कहते हैं सभा में गये और कोई कुछ पूछ बैठा तो आकाश की ओर ताकने लगते हैं "वैयाकरण खमूवी मीमांसक दुदु रूटः" जिसमें हमारे भीतर की पोल न खुले इस लिये केवल कल्लेइराजी कर पार ले जाते हैं और बड़े २ विद्वानों पर अपना रोब जमाये रहते हैं पर एक अपनी मिसरानी से अलबत्ता लाचार हैं ।

(नेपथ्य में)—कहां गये घंटों से आसरा देख रही हैं । मिलैं तो देखो आज सब पंडिताई निकाले देती हूं ।

कुक्कुट—हो आ गई क्या ? (दबक के एक कोने में खड़ा हो जाता है) ।

मिसरानी—काहे ! कहां रहे ! अब तक घर से कह के चले थे नोन लेने जाते हैं । अरे मैं तुम्हारे सब लच्छन जानती हूं । चलो तो सही । हे खाना लुआठ ! मैं असिल बाप की हूंगी तो बे नोन की दाल खिलाऊँगी । हमे तो उसी दिन से क्रोध चढ़ा है जिस दिन तुम्हे दमड़ी दास की बहू से हँस २ के बात करते देखा था । चलो तो देखो तुम्हारी कैसी गत बनाती हूं (कान पकड़ ले जाती है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा अंक

पहला गर्भाङ्क ।

(स्थान राज भवन की डेहुड़ी)

वृद्धश्रवा कंचुकी का प्रवेश

वृद्धश्रवा—यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्त्व मविवेकता ।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥

न जवानी, असंख्य धन संपत्ति, प्रभुता, इतने परभी क्या भला है और क्या बुरा क्या हानिकारक और त्यागने योग्य है और क्या काम करने योग्य है इसका भरपूर ज्ञान का न होना इन विचारों में केवल एकही बात मनुष्य को सब भांत नाश कर देने में बहुत है न कि जहां चारों एक साथ इकट्ठा हैं वहां का क्या कहना । हमारे इस नये राजा में आज दिन ये चारों एक साथ आ टिके हैं । तब इसकी भलाई निरी दैवाधीन है परमेश्वर ही कुशल करे । जिस राजघराने में पहले के बूढ़े राजाओं की प्रभुता, मान, मर्यादा तथा राजकाज में उग्रग्र गंभीर बुद्धि वाले मन्त्रियों की मंत्रणा के परिचालन में पटुता संसार भर में विदित थी, दूर २ के आये हुये मण्डलेश्वर राजाओं की भीड़ लगी रहती थी, जो जिस श्रेणी के और जिस योग्य थे उनकी ऐसी भावभक्ति और ख़ातिरदारी के प्रवन्ध में मुझे जहां दम मारने की फ़ुरसत नहीं मिलती थी वहां अब सन्नहटा छाया रहता है । मैं भी पड़ा २ दिन रात घरोंटा मारा करता हूं । इसके क्रूरस्वभाव और कुटिलाई से लोग दुखी हो जहां जिसके जी में समाता है भागे जा रहे हैं । जब देखो दो चार ख़ुशामदी टट्टू घेरे रहते हैं । उन्हीं की हड़ा फू में इसका दिन रात कटता है । राज में जो कुप्रबन्ध फैला हुआ है उससे लोग त्राहि २ कर रहे हैं । कर के बोझ से प्रजा दबी जाती है । शासन में नरमाई कैसी होती है सो यह जानता ही नहीं । सबों को दबा के हुकूमत के ज़ोर से अपने ताबे में रखना चाहता है । सो कभी संभव नहीं कि यह अपनी कुटिल पालिसी में सदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतकार्य और कामयाब रहे। बढ़ई का बायां हाथ एक दिन गया ही समझो। सुना है नगर के प्रधान २ नागरिक लोग ऋषियों की शरण में गये हैं राज प्रबन्ध की कुल बागडोर उन ऋषियों ही के हाथ में है। अपने आश्रम में सुख से बैठे २ ऐसे २ नियम और क़ायदे गढ़ २ यहां भेजते हैं कि उसी के अनुसार इतने बड़े राज का शासन अविच्छिन्न चल रहा है। इस समय जो लोगों में उद्वेग फैल रहा है उसका कारण यही है कि उन नियमों का इस समय उल्लंघन हो रहा है। प्रभुता के मद में चूर इस अविवेकी को जो कुछ समझाओ तो उसमें यह अपनी हतक मानता है और उस समझाने वाले का उलटा बैरी बन जाता है। एक तो ऋषियों का कुपित होना अच्छा नहीं दूसरे आगम कुछ अच्छा नहीं देख पड़ता। इसी घराने के राजाओं की सेवा करते हम बूढ़े हो गये, बाल सब पक गये, दांत गिर गये, कान से सुन भी कम पड़ता है, कमर झुक कर कमान हो गई पर अपमान कभी नहीं सहा। बड़े राजा तो इतना मानते थे कि हमारे बिना पूछे कोई बात नहीं करते थे। रनवास में तो हमारा राम राज था प्रधान २ रानियां हमारे हाथ की करछली थीं अनेक दास दासियों पर हमारा अधिकार था पुछल्ला सी लगी हमारे पीछे २ डोलती फिरती थीं। वही अब हम गेंद सा अलग दूर फेंक दिये गये हैं। प्रभुता के घमण्ड में नई २ उमङ्गें इसे सूझा करती हैं। कुढंग देख भीतर ही भीतर कुढ़ते हैं पर कुछ बोल नहीं सकते। इस घराने से हमारा पुराना प्रेम और स्वामिभक्ति हमें विकल किये हैं। हमसे रहा नहीं जाता फिर भी हमारे महाराज के वंश का अंकुर है बना रहे इसका कोई अनिष्ट न हो तो अच्छा। जांय हमारी बूढ़ी महाराणी दिनरात सोच में भरी उदास रहती हैं उन्हें आश्वासन दें। (जाता है)

हेनरी पैट्रिक

स्काटलैंड अन्तर्गत एबरडीन नामक स्थान के एक ग्राम में हेनरी पैट्रिक पैदा हुआ। इसके बाल्यकाल में किसी को यह सम्भावना न थी कि यह कोई महान् पुरुष होगा। इसका पिता जान हेनरी बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ चेष्टा करने पर भी इसे विद्वान् न कर सका। यह जंगलों में अहर्निश आखेट किया करता था। २० वर्ष का भी नहीं हुआ था कि इसने अपना विवाह भी कर डाला। कुछ दिन खेती करता रहा पीछे व्यौपार की ओर झुका और अन्त में दिवालिया बन बैठा। निर्धनता के कारण यह बहुत ही बुरी दशा में आ गया। इसी समय पादरी और राज कर्मचारियों में विवाद उठ खड़ा हुआ कि पादरियों को धन देना चाहिये कि नहीं। इस अवसर पर इसने पादरियों का पक्ष ले ऐसी योग्यता पूर्वक वाक्पाटव दिखलाया कि सब लोग चकित हो गये। इसकी यावत् कार्यवाही ऐसी अनुपम वाक् पटुता की हुई कि सब लोग इसे Born orator औत्पत्तिक वावदूक कहने लगे। जब अमेरिका में यह प्रश्न उठा कि बृटिश पार्लियामेंट को अमेरिका पर कर लगाने का अधिकार है या नहीं उस समय यह मान लिया गया कि हेनरी ने इस विप्लव में गेंद को पहिली ठोकर दी। अन्यान्य अनुभवी विद्वान् बृटिश पार्लियामेंट की इस कार्यवाही से असन्तुष्ट तो अवश्य थे किन्तु किसी की हिम्मत न हुई कि खुले मैदान में आ खड़ा होता और इस कार्य में अग्रसर बनता।

इस नैराश्य के समय अमेरिका के मृतप्राय दिलों को ढाढ़स देने वाला, देश की डूबती हुई नाव को खेकर किनारे लगाने वाला, गर्त में गिरते हुये बालक को सहारा देने वाला तथा अमेरिका के स्वातंत्र्य का जन्मदाता यही पैट्रिक हेनरी हुआ। इसकी सारगर्भिता वक्तृता जो इसने सन् १७७५ ई० के २८ मार्च को प्रतिनिधियों की परिषद् में दी थी पढ़ने योग्य है। पहिला विरोध जो अमेरिकाने इङ्गलैण्ड के साथ किया स्टैम्प ऐक्ट रिज़ोल्यूशन था जिसे इसी हेनरी ही ने पास कराया था।

सन् १७७४ ई० में जब समस्त देश क्रोध से जल रहा था, सरकार छींकते छुरी लिये नाक काटने को उद्यत थी, सब लोग डर से कांपते थे, पॉलिसी (राज कैतव) से असिधारा और न्यायधारा से प्रजा के मुखों में कपड़ों के गोलों को ठूंस कर गूंगा बनाने की ठान ली गई थी, हार पहिनने और गाड़ी खिचवाने वाले प्रजा के लोलुप दुम दबा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग गये थे। उस समय इससे चुप न रहा गया इसने समझा जो मैं इस समय नाक कटाता हूं तो नकृा कहलाऊँगा और देश दासत्व ही में पड़ा सड़ैगा इससे सत्य कह अपने को भय में डालना अच्छा है, स्वार्थी बन जीना अच्छा नहीं। यह सब विचार दार्शनिक तर्क और युक्तियों के साथ ऐसी वक्तृता की कि लोगों के लिये स्वतंत्रता का मार्ग सहज हो गया।

राधामोहन गोकुल जी कलकत्ता।

मनकी मौज

मनुष्य के तन में मन एक ऐसा अथाह सागर परमात्मा ने सृजा है जिसमें न जानिये कितनी मौज और तरङ्गें उठा करती हैं। जैसा मन चंचल है कभी एक सा नहीं रहता वैसा ही मनुष्य के सुख और दुःख की दशा बदला करती है। जब हम सुखी हैं तब सुख की तरंगें उठती हैं, दुखी होने पर दुःख की, मन की चंचलता रोकने को योगीजन नाक दबाय योग साधते हैं पर नहीं मालूम होता इसमें क्या आनन्द मिलता है। मन की मनमानी मौज का मज़ा जिसे न मिला ऐसा मनुष्य संसार में उपज कर भी मृतक तुल्य है। संसार में आने का यही आनंद प्रतीत होता है कि हम मन की मौजों में ग़ोते मार संसार के अनेक सुख दुःख भोगा करें। मनुष्य के शरीर में मन सब इन्द्रियों के ऊपर इसी लिये किया गया है कि इसके द्वारा हर एक अवस्था में हम अपने मन का लड्डू खा कर घंटे दो घंटे के लिये अपनी वर्त्तमान सुख या दुःख की दशा को भूल जांय। मन के द्वारा हम क्या नहीं कर सकते कहावत है—"मन पर धरै तो सब कुछ करै"। हमारी होनहार उन्नति या अवनति का ज्ञान देश की शिक्षित समाज के मन की उमङ्ग ही से होता है। हम हिन्दुस्तानियों का मन आज कल बहुत ही बढ़ रहा है जिससे बोध होता है कि भविष्य में इन्हें कुछ न कुछ बड़प्पन अवश्य मिलना है। माडरेट (नरम दल वालों) से हम क्यों घिनाते हैं इसी लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे नवयुवकों के मन की मौज को आगे बढ़ने से रोकते हैं और यह नहीं समझते कि देशहितैषी देश के रहने वालों का मन टटोल उसी के साथ २ चलते हैं। जन समूह के मन के प्रबल वेग को रोकना उस समूह को नीचे गिराना या उसे सर्वथा नष्ट करना है। मन के वेग की कुछ अद्भुत लीला है कि वह किसी के रोके नहीं रुकता। रुकैगा तो अपनी ही इच्छा से जब अपने उद्देश्यों को पूरा कर लेगा। इसमें सन्देह नहीं कई प्रबल शक्तियां हमारे मन की मौज को बे तरह रोक रही हैं। उन्हीं शक्तियों का सहकारी नरम दल भी हो रहा है। पर एक दिन वह भी आवैगा कि वेही शक्तियां जो इस समय अड़चन हो रही हैं हमारी सहायक होंगी और हम भरपूर अपने उद्यम में कृतकार्य होंगे।

मदनशुक्ल।

बूढ़े और जवान

बूढ़ों में बल न रहने से हिम्मत (Energy) तो अवश्य घट जाती है पर बहुत सी ऊंची नीची दशा झेलने से अनुभव उनका बढ़ जाता है बहुदर्शिता आ जाती है। कितने बुड्ढे तो ऐसे भी देखे जाते हैं कि जिस सिद्धान्त को उन्होंने दृढ़ कर लिया उसे ऐसा गहि के पकड़े रहते हैं कि कितना ही समझाओ वे उसे नहीं छोड़ते। जैसे कितने मर्ज़ लाइलाज होते हैं वैसे ही इन बुड्ढों की पकड़ है। जहां कहीं उन्होंने उलटा पकड़ लिया है उसे सीधा करना अति दुष्कर है। अब जवानों को लीजिये। जोशख़रोश में भरे हुए उनके रोम २ से जोश टपका पड़ता है। यही प्रतिक्षण सोचा करते हैं कि हम कैसे ज़मीन और आसमान का कुलावा एक कर दें। बूढ़े जिसे अपनी दूरदर्शिता की धुन में बैठे २ सोंचा करते हैं और हिम्मत नहीं पड़ती कि उलझी गांठ को सुलझावें जवान उसी में आव ताव कुछ न देख आगा पीछा बिना सोंचे चट काम कर गुज़रते हैं। बहुधा तो अपने काम में अवश्य कृतकार्य होते हैं कदाचित कामयाब न भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए तो कुछ सोच नहीं। नई उमंग सोच को पास फटकने का मौक़ा ही नहीं देती। माना कि बूढ़ों में विवेक शक्ति भरपूर है पर हौंसला या बल (Energy) न रहने से जौ भर भी आगे बढ़ने की हिम्मत उनमें नहीं रहती, तब उनकी दूरदर्शिता किस काम की? जिस का प्रत्यक्ष उदाहरण देखा गया कि भारत में शिक्षा का प्रचार हुए सौ वर्ष के लगभग हो गया पर हमारे सिनरसीदा बड़े लोग बड़े पगड़ वाले कुछ न कर सके कि सर्व साधारण को राष्ट्रीय विषय का यथोचित ज्ञान होता। तीन वर्ष से बङ्गाल के स्वयम् सेवक नवयुवकों का दल उभड़ उठा। राजा और प्रजा दोनों के नेत्र खुल गये। सर्व साधारण को अपनी स्थिति का ज्ञान कुछ २ होते चला। कहावत है "बिना रोये लड़का भी दूध नहीं पाता।" "बिन भय होहि न प्रीति"। गवर्नमेंट के शासन का ढंग ही कुछ ऐसा मालूम होता है कि राष्ट्र सम्बन्ध में जब तक भरपूर आन्दोलन न किया जाय तब तक कर्मचारियों का ध्यान उस ओर नहीं होता। इसमें सन्देह नहीं उस आन्दोलन के दबाने की भरपूर फ़िकिर की जाती है सही पर साथ ही 'सीधी उँगलियों घी नहीं निकलता' वाली कहावत के अनुसार हमारे सन्तोष की ओर भी कुछ न कुछ ध्यान होता ही है। इस समय नये २ रिफार्मों का मिलना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। तब तिलक महाराज का यह सिद्धान्त कि नवयुवक क्यों राष्ट्र सम्बन्ध में हिस्सा न लें अयुक्त नहीं है। यह कहना कि अभी तो तुम पढ़ रहे हो राष्ट्र सम्बन्ध में प्रवेश करने से तुम्हारी शिक्षा में बाधा आवेगी। उपरान्त सरकारी नौकरी में रह हाथ पांव कस दिये गये। पेन्शन लेकर बैठे तब बूढ़े हो गये। जिस बुढ़ापे का विवरण हम ऊपर दिखा चुके, तब तुम देश का काम कब करोगे? जैसे आये वैसे चले गये तुम्हारे जन्म लेने से लाभ ही क्या? "काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुंक्ते।" अपना पेट तो कुत्ता कौआ भी पालते हैं। जो राजा का सो प्रजा का नहीं जो प्रजा का सो राजा का नहीं। इस प्रचलित पालिसी के अनुसार जब तक राजसेवा के उच्च पद पर रहे जो पेन्शन के दिनों तक हो जाना क्रमशः तरक्क़ी पाते २ कुछ कठिन नहीं है प्रजा के हानि लाभ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ख़याल न कर बड़वानल सा गवर्नमेंट का उदर भरते रहे। इस ख़ैरख़्वाही के परिणाम में राय बहादुर कर दिये गये; सी० एस० आई० हुए; लौ लगी है कि कब कौन सी शुभ घड़ी आवैगी कि राजा का ख़िताब पा जायँगे। अपने बन्धु बान्धव, लड़के और पोते परपोतों को ऊँचे से ऊँचे ओहदों पर नौकर रखाने की फ़िकिर से भी न चूके। तात्पर्य यह कि जो कुछ किया सब अपने ही लिये स्वार्थ देव की प्रत्यक्ष मूर्त्ति बनने में कहीं से त्रुटि न होने पाई। सर्व साधारण और लोकोपकार क्या है कभी जाना ही नहीं। वही जो उनकी छात्र दशा में राष्ट्रीयता का बीज बो गया होता तो कहां तक उनके पदारूढ़ होने के समय में न फबकता और उनके द्वारा देश का बड़ा उपकार होता। इससे यही ठीक मालूम होता है कि छात्र दशा ही से हमें राष्ट्रीय आन्दोलनों में हिस्सा लेना भलाई है जिसके लिये हमारे नवयुवकों को प्रवृत्त होना अनुचित नहीं है।

भारत का भविष्य और वसन्त

वरु सूर्य होयं पश्चिम उदोत, अरु बहै सोई बिधि गंग स्रोत।
ग्रह चन्द्र टरैं वरु स्वगति खोय, गिरि उदधि चहै थल क्यों न होय ॥१॥
पै भारत समुदय होनहार, टर सकत नहिं अब कोई प्रकार।
हिय शत्रु जरैंगे तन मलीन, भारत होगा निश्चय नवीन ॥ २ ॥
इसका दृढ़ पद अङ्गद समान, जो पड़ा अभ्युदय मार्ग आन।
तिल भर न तिसे कोई सकत टार, लग जायं एक नहिं दस हज़ार ॥ ३ ॥
जे झेल चुके हैं सभी कष्ट, हो चुके क्षीव हत नीष भ्रष्ट।
लखि तिन्हें उच्च दृढ़ आस होत, होगा भारत का भी उदोत ॥ ४ ॥
यह प्रकृति नियम जे भये राव, ते फिरैं रंक वन गांव गांव।
नहिं होएं नष्ट जब लौं समूल, फिरते न लहत ते यश दुकूल ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति पतित हमारी दशा चूर्ण, हिय को देती विश्वास पूर्ण ।
पद दलित धूल ज्यों चढ़त माथ, त्यों हमहू चढ़ैंगे एक साथ ॥ ६ ॥
यह शुभ परिवर्तित समय पाय, होंगे हम निश्चय विमल काय ।
तज अति निन्दित दासत्व रूप, अब हमहुं धरैंगे नव स्वरूप ॥ ७ ॥
हूं दूर अवैदिक प्रथा त्याज्य, होगा स्वधर्म का अटल राज्य ।
होंगे समस्त जन विज्ञ धीर, आचरण शुद्ध गुरु औ गम्भीर ॥ ८ ॥
ये पुत्र रत्न मम होन हार, नहि जिन्हें उचित हम करत प्यार ।
होंगे इनमें सब देश काज, परताप, शिवा जी, पृथ्विराज ॥ ९ ॥
जन जन में होगी सुमति प्रीति, अरु प्रचलित जग वैदिकी रीति ।
शुभ नीति कुशल होंगे नरेश, तज कायरता का मलिन वेष ॥ १० ॥
ज्यों प्रकृति हेतु ऋतुराज आज, त्यों हमहुं होयँगे हित समाज ।
उत तजत वृक्ष जिमि जीर्ण पत्र, त्यों कुमति तजैंगे हम इकत्र ॥ ११ ॥
उत नव पल्लव अंकुरित होत, इत नव युव हिय नव मति उदोत ।
उत पुष्प सुगंधित विविध रंग, कुसुमित, इत शिशुगन नए ढंग ॥ १२ ॥
उत पवन मंद नभ शशि प्रकाश, इत होगा चहुं दिस यश विकाश ।
उत हरी भरी क्षिति पूर्ण अन्न, इत देख पड़ैंगे सब प्रसन्न ॥ १३ ॥
उत पक्षि लोग कूजत स्वतंत्र, इत गावैंगे जन वेद मन्त्र ।
उत शीत जा रही शक्ति त्याग, इत कष्ट जायंगे दूर भाग ॥ १४ ॥
हम कहैं कहां लग इस प्रकार, होगा परिवर्तन जो अपार ।
उत वर्ष अन्त इत दुःख अन्त, यहि विधि भविष्य भारत वसन्त ॥१५॥

माधव शुक्ल ।

चित्र दर्शन

एक दिन मैं अपने पुस्तकालय में बैठा पाठ्य पुस्तकों के पन्ने उलट रहा था। अकस्मात् एक चित्र मुझे उसमें मिला जो ठीक उसी चित्र सा था जिसका वर्णन मैं कुछ दिन हुए कर चुका हूं। जिस महानुभाव का यह चित्र है उनकी विशाल सौम्य मूर्त्ति को मैं हृदय से प्रणाम कर इनके सरल अकुटिल भाव की भावना मन में करने लगा। उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही विचार चित्त में उठा कि इन का सा खरापन और इनके अनेक अनुपम गुणों का लेश भी मेरे में आ जाय तो मैं अपने को कृतार्थ समझूं। बुढ़ापे के कारण इनके चेहरे पर शिकन तो आ गई थी किन्तु द्युति और चेहरे की दमक में तनिक भी अन्तर न था। हम पहले चित्र में इनकी भ्रातृ बधू का इशारा दे आये हैं उससे इन्हें बड़ा क्लेश मिला वह सापिन सी सदा इन्हें डसा की और यहां तक इन्हें उद्वासा कि समस्त पैतृक सम्पत्ति से इन्हें हाथ धोना पड़ा। पीछे इनके कई एक मित्रों ने जिनमें नगर के कई एक प्रतिष्ठित वकील भी थे इन्हें बहुत २ उभाड़ा और कहा "तुम एक बार हां कह दो हम तुम्हें पैत्रिक सम्पत्ति सब दिलवा दें। कई हज़ार का धन मिल जायगा, सुख से जीवन पार करोगे, क्यों दुःख उठा रहे हो।" पर इन्हें कुछ ऐसी सनक सवार थी कि इन्होंने मंजूर न किया। एक इनके वकील मित्र का कथन हमें अब तक याद है:— Notwithstanding your scholastic learning you are a regular idiot 'होनहार हिरदै बसै बिसर जाय सब सुद्ध'। सब विलाय गया पर बार २ चितावनी मिलने पर भी जो स्वभाव ही के कदर्य हैं नहीं चेतते। एक ही डंठरी के दो गुलाब एक पर इतने कीड़े छा गये कि भीतर ही भीतर मुरझा के रह गया। दूसरा प्रस्फुटित हो अपनी मीठी सुगन्धि से सब ओर महर २ करता रहा। "जन्म जन्मांतर में किये मनुष्य के शुभाशुभ कर्म बीज रूप हो बिना उगे नहीं रहते।" गीता में भगवान कृष्णचन्द्र के इस सिद्धान्त को कौन पलट सकता है। हमारे चित्रनायक यदि प्रकृति की उदारता काम में न लाय लोभ में आय यक्षवित्त सदृश धन पर लोभ में आय फिसल गये होते तो कदाचित् इस महत्व को न पहुंचते। धन कार्कश्य जीवन पर्यन्त सहा किये पर महत्व में बराबर बढ़ते ही गये और अपने दृढ़ सिद्धान्त तथा एक स्थिरशैली से इधर उधर न हुये। चार पांच जो इनके एकान्त भक्त और प्रेमी मित्र थे ईश्वर उनकी आत्मा को उत्तम से उत्तम गति दे उन्हीं के सहारे तथा अपने विमल चरित्र की कसौटी पर निर्भर रहे। नवयुवक चढ़ती उमर वालों को इन का सदा यही उपदेश रहता है कि विद्या चाहो कम पढ़ो पर अपना चरित्र धोखे से चोखा रक्खो। सच है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित्रपालन मनुष्य के जीवन की ऐसी कसौटी है कि जो इस कसौटी में कस गये हैं वे ऊँची नीची दशा में आ जाने पर भी उम्र की किश्ती को दरिया में डूबने नहीं देते । हमारे चित्र नायक इसके निदर्शन हैं। न जानिये कितने २ तूफ़ान सामाजिक, राजनैतिक तथा अपने निज बन्धु बान्धवों के उभाड़े उपस्थित हुये पर ये स्थिरशीली पर दृढ़ रह उन तूफ़ानों से अब तक पार होते ही गये । मनुष्य की बाल्य अवस्था बड़ी चञ्चलता की होती है उपरान्त गदह पचीसी का अलहड़पन उससे भी अधिक है जब कि चढ़ती जवानी की नई २ उमङ्गें न जानिये कितनी तरह की उठा करती हैं उस समय कुढङ्ग और कुत्सित आचरणों से वही बचे रह सकते हैं जिनको अपने सुचरित्र का सहारा है । इनका वह समय केवल विद्याभ्यास में बीता । बाल क्रीड़ा के अनेक खेल कूद इन्होंने जाना ही नहीं । कबूतर उड़ते देख इन्हें बड़ी प्रसन्नता होती है जहां कहीं कबूतर पले रहते हैं वहां अब तक खड़े हो कर देखने में इन्हें आनन्द मिलता है । अपनी लड़काई के किस्से जब ये कहने लगते हैं तो उन्हें सुन कुछ तो हँसी आती है कुछ अचरज होता है । दूसरा उपदेश इनका यह है कि साथ करे तो उनका जो अपने से ऊँचे हैं और उनमें जो भलाई देखे उसे अङ्कित करता रहै । गायत्री के जप में इनकी बड़ी निष्ठा है । सोलह प्रणायाम और ५०० गायत्री का जप इनका अब तक प्रतिदिन निभता गया । इनका विश्वास है कि गायत्री का जप करने वाला सङ्कट में नहीं पड़ता जब जब इन्हें सङ्कट आ पड़ा है तब तब इन्होंने बड़े एकाग्र मन से गायत्री का जप किया और सङ्कट से मुक्त हो गये ।

बाल्य विवाह के ये सदा प्रतिकूल रहे । इन का दृढ़ निश्चय है कि जब तक इस कुरीति से हमारा गला न छुटैगा तब तक देश का उद्धार न होगा । पहले का सा ब्रह्मचर्य फिर से बिना स्थापित किये हम स्वराज्य के योग्य कभी हो ही नहीं सकते । लेख में ये भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का अनुगामी अपने को मानते हैं जिनसे इनका बहुत अधिक घिष्ट पिष्ट रहा । बर प्रदान के समान एक बार बाबू साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनसे बड़े प्रसन्न हो कह भी गये कि हमारे उपरान्त तुम्हारा लेख उत्कृष्ट माना जायगा। एकान्न भोजन की प्रथा को भी ये बहुत अच्छा नहीं समझते। बाल्य विवाह के सम्बन्ध में इतना यहां और कहना है कि ११ या १२ वर्ष की कन्या को ब्याहना बाल्य विवाह का उठाना नहीं है जब तक ऋतु के पहिले कन्या ब्याहने की क़ैद न उठैगी तब तक देश का कल्याण न होगा। माननीय वृद्ध कहेंगे कि ऋतुमती को ब्याहने से पुरखे नरकगामी होंगे।

"माताचैव पिताचैव ज्येष्ठभ्राता तथैव च।
ते नरा नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम्" ॥

एक ही के पुरखे नरक में जायँगे देश का देश जो इस महा पातक से नरक कुण्ड मे गिर रहा है सो तो बच जायगा। किसी को विधवा विवाह की सनक है, किसी को जाति पांति उठा देना ही देश की भलाई है, किसी को स्त्रियों का परदा उठा देना स्वराज पाने की तदबीर है, इनको बाल्य विवाह के उठा देने की सनक सवार है जिसके लिये इन्होंने कोई उपाय नहीं छोड़ रक्खा। पर यह कुरीति यहां तक दृढ़ मूल हो गई है कि किसी तरह इससे गला छूटते नहीं मालूम होता। सहवास के सम्बंध में एलबर्ट बिल के अनुमोदन में इन्होंने कई लेख लिखे थे इस लिये कि इस बिल से बाल्य विवाह की जड़ कटती है जिस पर इन के कई एक बंग देशी मित्र इनसे रूठ गये पर यह अपने सिद्धान्त से न हटे। संस्कृत साहित्य महासागर का कोई अंग नहीं बचा जिसमें यह भरपूर न तैरे हों इत्यादि इनके गुण गण मुझे याद आये इतने में मैंने दूसरा पन्ना उलटा तो मुझे एक दूसरा चित्र मिला जिसका विवरण हम पाठकों को फिर सुनावैंगे।

म० भ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज की सब क़लई खुल गई

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज को शुद्ध Politic il राष्ट्रीयता की बुनियाद पर खड़ा किया है । सत्यार्थ प्रकाश में साफ़ २ लिखा है कि विदेशियों का स्वेच्छा शासन आर्यों के लिये अहित कर है । दूसरे गोरक्षा, परस्पर की एकता, मुसलमान तथा ईसाइयों को प्रायश्चित्त कराय हिन्दू बनाना आदि राष्ट्रीयता की बुनियाद नहीं तो क्या हैं ? हम लोगों को आर्य समाज पर जो अब तक श्रद्धा थी उसका भी यही कारण था कि यही एक मज़हब खड़ा किया गया है जो पंजाब के गुरु गोविन्द सिंह के समान शुद्ध राष्ट्रीयता की बुनियाद पर है । नहीं तो आर्य समाज से जनसमूह को क्या लाभ है ? लोग जिस परम्परागत शृङ्खला के अनुसार चलते रहे उससे विचलित से हो गये । कितने सींग पूछ कटाय बछेरू से बन खुला खुली आर्य समाजी हो गये । दूसरे हम लोग ब्राह्मणों का तो आर्य समाज पक्का दुश्मन है और यही चाहता है कि कैसे जल्दी इन पोपों का सर्वनाश हो । यह तो हमारे वैदिक ऋषियों का पुण्य और लोकोपकार की शुद्ध इच्छा और नियत से वह अब तक चला ही तो जाता है और अन्त में संशोधन हो यही रहेगा भी । गीता का सिद्धान्त है "न बुद्धि भेदं जनयेद ज्ञ न कर्म संगिनाम्" कर्म में जो लगे हैं और अज्ञ हैं अर्थात् तत्व क्या है सो नहीं जानते उनकी बुद्धि में भेद न पैदा करे । सो बहुत ठीक है हम देखते हैं बहुतेरे लोग जो शिक्षित नहीं हैं और समाजी हो गये हैं वे तत्व तक न पहुंच जो क्रम पर चले जा रहे थे उधर से उनकी श्रद्धा बुद्धि हट गई और वे न इधर के रहे न उधर के । तो निश्चय हुआ कि समाज संशोधन में जो कुछ इस समय हो रहा है वह तालीम का कारण है आर्य समाज से कुछ नहीं हुआ । बङ्गाल में आर्य समाज कहां है और बङ्गाली जितनी उन्नति कर चुके उतनी इन देशों में नहीं हुई तब सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति शिक्षा का फल है । अस्तु लाला लाजपतराय को पालिटिक्स में शरीक होने के कारण समाज से अलग कर देना और पटियाले वाले मामले में माफ़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांग लेना दोनों बदलें आर्य समाज के नेताओं से ऐसी बन पड़ीं जिस से सब क़लई खुल गई और लोगों की श्रद्धा आर्य समाज की ओर न रह गई। अथवा इसमें भी आर्य समाजियों की कोई भीतरी बात हो उसे कौन जान सकता है। पर लाला मुंशीराम का इसे निरा धार्मिक कृत्य कहना सर्वथा अनर्गल है।

उपयुक्त क्रिया

काटना—बात का—दांत का—ज़बान का—सिर का—दिन या काल का—रास्ते का।

चलना—चरखे का—पेट का—नाम का—चित्त का।

लगना—लगन का—मन का—आंख का—"न लगी आंख जब से आंख लगी"।

टूटना—नाते का—दिल का।

पड़ना—गांठ का—"दृग उरझत टूटत कुटुम जुरत चतुर सो प्रीति—पड़त गांठ दुरजन हिये दई नई यह रीति"।

खाना-ग़म का-ख़ार का—चुग़ली का—लात का—खोपड़ी का—गाली का—क़सम का।

कमाना—रोटी का—"रोटी तो कमा खांय किसी भांत मुच्छ-न्दर"—नाम का।

मारना-मन का-आंख का-गप का-झखमारना-दे मारना।

फटना—जी का—छाती का—मन का।

मिलना—मन का—मित्र का।

फेरना—आंख का—घोड़े का—पान का।

कूटना—झांझ का—धान का।

चहचहाना—चिड़ियों का।

झेपना—आंख का।

उड़ना—होश का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हांकना—गप का।

चाटना—दिमाग़ का—होठ का—हाथ की।

देना—झांसे का—फांसी का—दान का।

लेना—नाम भगवान् का।

घूटना—लहू के घूंट का—बात का।

ज—सहज—पूर्वज—अनुज मूर्द्धज—आत्मज—पङ्कज—उरोज—वारिज—अज—कुज—स्वेदज—अण्डज—पिण्डज—मनसिज—सरसिज—कुम्भज—द्विज—सरोज—क्षितिज—करज—मनुज—दितिज—जलज—भूमिज—इत्यादि।

द—मानद—वारिद—धनद—नीरद—जलद—पयोद—करद—भूरिद—कुन्द—मुकुन्द—"कुन्द कुञ्ज ममुदक्ष्य सरसीरुहलोचने—अमुना—कुन्द कुंजेन सखिभिः किं प्रयोजनम्"।

रुह—तनूरुह—महीरुह—सरोरुह—सरसीरुह—कररुह—धरणीरुह—इत्यादि।

ग—नग—अग—अग्रग—शीघ्रग—खग—पतग—पतङ्ग—उरग—पन्नग—मतङ्ग—इत्यादि।

ज्ञ—अज्ञ—विज्ञ—प्राज्ञ—मनोज्ञ—सर्वज्ञ—शास्त्रज्ञ—धर्मज्ञ—सुज्ञ—त्रिकालज्ञ—मर्मज्ञ—इत्यादि।

चर—जलचर—नभचर—खचर—खेचर—स्थलचर—तृणचर—पाटचर—रात्रिंचर—रात्रिचर—भूचर—गगनचर—इत्यादि।

भू—करभू—वर्षाभू—स्वयंभू—प्रभु—विभु।

श्रीयुत गांधी के कारावास की कहानी

(गताङ्क से आगे)

जांच पड़ताल

प्रत्येक कार्याधीश के आने के समय क़ैदियों को एक पंक्ति में खड़े हो कर और टोपी उतार कर सलाम करना पड़ता था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबों के पास अङ्गरेज़ी टोपियां होने के कारण हमें इस नियम के पालन करने में कुछ भी असुविधा न प्रतीत होती थी और ऐसे समय पर टोपी उतारना न्यायसङ्गत तथा उचित भी था। ऐसा करने के लिये हमें "Fall in" शब्दों का संकेत किया जाता था। इन शब्दों के अनुसार प्रति दिन ४, ५ बार कार्य करना पड़ता था; इसीलिये हम इन से उतने ही परिचित हो गये थे जितने कि भोजन से इन कार्याधीशों में जेल के चीफ़ वार्डर (Chief Warder) का एक नायब बड़ा हठी मनुष्य था इसलिये हम लोगों (भारतवासियों) ने उसका नाम "जनरल स्मिट्स" रख लिया था। संध्या समय और प्रातःकाल के आने वालों में प्रायः वही सब से पहला होता था। साढ़े नौ बजे डाकृर साहब आते थे। वे बड़े भद्र और दयालु थे और सदा हम लोगों से हमारा हाल पूछ लिया करते थे। जेल के नियम के अनुसार हर एक क़ैदी को पहले दिन अपने समस्त शरीर को नङ्गा कर डाकृर साहब को दिखलाना पड़ता था। परन्तु हम लोगों को डाकृर साहब की कृपा से इस नियम का पालन नहीं करना पड़ा। जब और बहुत से भारतवासी हमारे साथ आ मिले तो डाकृर साहब ने हम से कहा कि, "आप लोगों में से जिन महाशय को खुजली आदिक किसी प्रकार का कोई रोग हो वे केवल मुझे उस रोग से सूचित कर दें जिससे कि मैं उनके शरीर की "कैमेरा" (Camera) में जांच कर लूं।" साढ़े दस अथवा ग्यारह बजे गवर्नर और चीफ़ वार्डर आया करते। गवर्नर साहब दृढ़, न्यायवान तथा शांतिप्रिय मनुष्य थे। उनके प्रश्न यही हुआ करते थे कि "आप लोग अच्छे तो हैं ? आप को किसी वस्तु की आवश्यकता तो नहीं है ? आप को किसी बात की शिकायत तो नहीं हैं ?" इत्यादि वे हमारे दुखड़ों को चित्त देकर सुनते और हमारे दुःख दूर करने का यथाशक्ति प्रयत्न भी करते थे। अपने कुछ दुःख और कष्टों का हाल मैं आगे चल कर वर्णन करूंगा। गवर्नर साहब के डिपुटी (नायब) भी प्रायः आया जाया करते थे। वे भी दयालु थे। परन्तु सब से अच्छे स्वभाव के मनुष्य हमारे चीफ़ वार्डर महाशय थे। नितान्त धार्मिक होने के कारण से केवल हमारे ही साथ सद्व्यवहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करते थे वरन् उनकी दयालुता के कारण प्रत्येक क़ैदी उन की प्रशंसा मुक्तकण्ठ से किया करता था। वे क़ैदियों के स्वत्व रक्षा का सदा विचार रखते थे और क़ैदियों के छोटे मोटे अपराधों की ओर ध्यान भी न देते थे। हम लोगों पर उनकी विशेष कृपा इस लिये और भी थी क्योंकि वे जानते थे कि हम सब लोग नितान्त निर्दोष थे। वे प्रायः हम लोगों के पास आते और बात चीत किया करते।

हमारी संख्या का बढ़ना

मैं कह चुका हूं कि पहले पहल जेल में हम पांच ही निष्क्रिय-प्रतिरोध का प्रयोग करने वाले थे। १४ जनवरी मङ्गलवार के दिन श्रीयुत् थाम्बी नायडू, आन्दोलन के मुख्य प्रचारक (Chief Picket) और चाइनीज़ एसोसिएशन के सभापति मिस्टर काएन भी हम में आ मिले। हम ने उन सब का सहर्ष स्वागत किया। १८ तारीख़ को १४ मनुष्य और आये जिनमें श्रीयुत् समुद्रख़ां भी थे। उनको दो मास का कारावास दण्ड मिला था। शेष मद्रासी, कुनामिया और गुजराती हिन्दू थे। ये लोग बिना लायसेंस (License) के दूकानदारी करने के अपराध में पकड़े गये थे। इनमें से प्रत्येक को २ पौंड (३०) रु०) जुरमाना अथवा १४ दिन कारावास का दण्ड दिया गया था। उन्होंने वीरता के साथ जुरमाना देने के बदले जेल जाना स्वीकार किया। २१ तारीख़ को ७६ मनुष्य और जेल में आये। इन में श्रीयुत् नवाब ख़ां को दो मास का कारा दण्ड था और शेष सब के लिये दो २ पौंड जुरमाना अथवा जुरमाना न देने पर १४ दिन का कारावास दण्ड था। इनमें अधिकांश गुजराती हिन्दू थे, कुछ कुनामिया और मद्रासी भी थे। २२ ता० को ३५, २३ को ३, २४ को १, २५ को २, २८ को १० और २९ को ४, भारतवासी और हम में आ मिले। इस प्रकार २९ ता० को हमारी संख्या १५५ तक पहुंच गई। ३० ता० को मैं प्रिटोरिया भेज दिया गया परन्तु मैं जानता हूं कि उस दिन ५ या ६ भारतवासी और भी जेल में पहुंच गये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन

हम में से बहुतों के लिये भोजन का प्रश्न सर्वदा ही बड़े महत्त्व का प्रश्न है परन्तु कारावासियों के लिये यह प्रश्न और भी अधिक महत्त्व का है। उनको अच्छे भोजन का मिलना परम आवश्यक है। नियम यह है कि क़ैदी को जेल के भोजन से ही संतुष्ट रहना चाहिये, उसको बाहर से भोजन नहीं दिया जा सकता। नियमित भोजन पाने वाले सैनिक की भी यही दशा होती है परन्तु इन दोनों में अन्तर इतना है कि सैनिक को अपने मित्रों के भेजे हुए भोजन पाने का अधिकार प्राप्त है परन्तु क़ैदी के साथ ऐसी रियायत नहीं की जाती। क़ैदी को बाहर से भोजन दिये जाने में इतनी रोक टोक करने से उद्देश्य यह है कि क़ैदी को कारावास के कष्ट का अनुभव हो, बात चीत में जेल के कर्म-चारीगण कहा करते थे कि क़ैदियों का भोजन स्वादिष्ट नहीं बनाया जा सकता और कोई भी खाने की चीज़ क़ैदियों को बाहर से नहीं मिल सकती। जेल के औषधालय के अध्यक्ष से बात-चीत करते हुये मैंने एक समय उनसे कहा कि "रोटी के साथ चाय, घी अथवा ऐसा ही अन्य कोई पदार्थ हमें अवश्य मिलना चाहिये।" उन्होंने उत्तर दिया कि "आप स्वाद के साथ खाना चाहते हैं परन्तु स्वादिष्ट चीज़ें जेल में नहीं मिल सकतीं।"

भोजन का नियम यह है कि पहले सप्ताह सवेरे प्रत्येक भारत-वासी को बिना चीनी अथवा घी की १२ औंस (छै छटांक) लपसी (Mealie Pap) मिलती है। दोपहर को ४ औंस चावल और १ औंस घी; और सन्ध्या को ४ दिन तक १२ औंस "लपसी" और तीन दिन तक १२ औंस उबली हुई सेम (Beans) तथा नमक दिया जाता है। भोजन का यह हिसाब 'काफ़िर' क़ैदियों के भोजन के अनुसार रक्खा गया था। अन्तर केवल इतना ही था कि संध्या के समय "काफ़िरों" को कूटी हुई मकई और सुअर का मांस अथवा चर्बी मिलती थी और भारतवासियों को चावल मिलते थे। दूसरे सप्ताह में तथा उसके पीछे भी दो दिन तक उबले हुए आलू और फिर दो दिन तक गोभी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौकी अथवा कोई अन्य तरकारी मकई के आटे के साथ दी जाती थी। मांसाहारियों को रविवार के दिन मांस भी मिलता था।

क़ैदियों (हम लोगों) की पहली मंडली ने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि किसी प्रकार की प्रार्थना सरकार से न करेंगे और जो कुछ भोजन मिलेगा यदि उसका खाना धर्म के बिरुद्ध न होगा तो चुपचाप ग्रहण कर लेंगे। ऊपर लिखे हुए भोजन में वैद्यक के अनुसार पौष्टिक तत्व अवश्य है किन्तु वास्तव में वह भारत-वासियों के लिये किसी प्रकार भी उचित नहीं है। मकई काफ़िरों का भोज्य पदार्थ है और इसी लिये यह अनाज उन की प्रकृति के अनुसार है। जेल में रहते हुए भी इस अनाज को खा कर वे स्वस्थ बने रहते हैं। परन्तु भारत-वासी बहुत ही कम मकई खाते हैं, चावल उनकी प्रकृति के अनुसार है। अकेली सेम खाने का अभ्यास भी हम लोगों को नहीं है और न हमको काफ़िरों के हाथ की बनाई हुई अथवा काफ़िरों के लिये बनाई हुई तरकारियां ही रुचती हैं। वे लोग तरकारियों को कभी साफ़ नहीं करते और न उनमें किसी प्रकार का मसाला ही देते हैं। युरोपियन क़ैदियों की तरकारियों के छिलके इत्यादि की ही काफ़िरों के लिये तरकारी बनती है। मसाले के नाम सिवाय नमक के और कुछ नहीं होता। चीनी स्वप्न में भी देखने को नहीं मिलती। इसी लिये भोजन का प्रश्न हम सब के लिये बड़ा ही कठिन प्रश्न था। तौ भी हमने निश्चय कर लिया था कि निष्क्रिय प्रतिरोधक गण अर्थात् हम लोग जेल के कर्म-चारियों से किसी भी अनुग्रह की प्रार्थना न करेंगे और इसी प्रकार के भोजन से सन्तुष्ट रहेंगे।

गवर्नर से पूछने पर हमने उससे कह दिया था कि इस प्रकार का भोजन हमको बिलकुल नहीं रुचता; परन्तु हमने निश्चय कर लिया था हम सरकार से किसी प्रकार की याचना न करेंगे। यदि सरकार स्वयं अपनी इच्छा से भोजन में कोई परिवर्तन कर दे तो उसको हम सहर्ष स्वीकार कर लेंगे। अन्यथा हम नियमित भोजन ही लेते रहेंगे। परन्तु हमारी यह दृढ़ता बहुत दिनों तक स्थिर न रह सकी। जब हम में और अनेक भारतवासी आ मिले तो हमने यह उचित न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा कि उन बेचारों को भी हम अपने इस कष्ट का साथी बनावें क्योंकि उनके लिये जेल जाने में हमारा साथ देना भी कुछ कम न था इस बात पर विचार कर हम ने उन लोगों के विषय में गवर्नर से बात चीत करना आरम्भ किया। हमने गवर्नर से कहा कि हम स्वयम् किसी भी प्रकार का भोजन पाने को प्रस्तुत हैं परन्तु बेचारे नये आने वाले क़ैदी ऐसा नहीं कर सकते। गवर्नर महाशय ने इस विषय पर विचार करने के पीछे हम से कहा कि "धर्मरक्षा के विचार से उनको अलग भोजन बनाने की आज्ञा मिल सकती है परन्तु भोजन की सामग्री वही होगी, उसमें मैं कोई परिवर्त्तन नहीं कर सकता"।

इसी बीच में १४ मनुष्य और भी हमारे साथी बने। उनमें से कुछ लोगों ने लपसी खाने की अपेक्षा भूखों मरना पसन्द किया। इस पर मैंने जेल की नियमावली पढ़ी। उसके पढ़ने से पता चला कि इस विषय में जेलख़ानों के डाइरेक्टर के पास प्रार्थनापत्र जाना चाहिये। मैंने गवर्नर से डाइरेक्टर के पास प्रार्थनापत्र भेजने की आज्ञा मांगी। आज्ञा मिलने पर निम्न विषय की अर्ज़ी डाइरेक्टर के पास भेजी गई:—

"हम निम्न लिखित क़ैदी एशिया वासी हैं हममें से १८ भारत-वासी और ३ तीन चीन निवासी हैं।

"हम १८ भारतवासियों को सवेरे लपसी दी जाती है और अन्य क़ैदियों को घी और चावल मिलता है। हमें तीन दिन सेम और चार दिन लपसी मिलती है। शनिवार के दिन हमें आलू दिये जाते हैं और रविवार को अन्य तरकारियां। हमारे धर्मके अनुसार मांस खाना निषिद्ध है। हम में से कोई २ तो मांस खाते ही नहीं और कोई यहां पर इस लिये नहीं खाते कि यहां जानवर शास्त्र विधि के अनुसार नहीं मारे जाते।

"चीन निवासियों को चावल के बदले मकई मिलती है। हम सब को प्रायः यूरोपियन रीति से बनाये हुये भोजन खाने की ही आदत है। हम रोटी तथा आटे के बनाये हुए दूसरे पदार्थ खाते हैं परन्तु इस प्रकार की लपसी खाने का हममें से किसी को भी अभ्यास नहीं है। हममें से कुछ मनुष्यों को अजीर्ण रोग हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम में से सात प्रातःकाल के समय कुछ भी भोजन नहीं करते। हां जब कभी चीन-निवासी क़ैदी जिनको रोटियाँ मिलती हैं अपनी रोटियों में से एक दो टुकड़े दयावश इन्हें दे देते हैं तब उन टुकड़ों के सहारे ये लोग पानी पी लेते हैं। जब यह बात गवर्नर महाशय के कानों में पड़ी तो उन्होंने कहा कि इस प्रकार चीनियों से रोटी ले लेना जेल के नियमों को तोड़ना है।

"इस प्रकार का भोजन हमारी प्रकृति के नितांत विरुद्ध है। इस लिये हम लोग प्रार्थी हैं कि हमको यूरोपियन क़ैदियों के अनुसार भोजन मिलना चाहिये और लपसी को अब से छुट्टी दे दी जाय, अथवा हमें ऐसा भोजन दिया जाय जो हमारा आधार होते हुए हमारी प्रकृति और रीति के अनुसार हो।

"यह एक परमावश्यक विषय है इस लिये कृपया तार द्वारा उत्तर दीजिये।"

हम २१ मनुष्यों ने इस अर्ज़ी पर हस्ताक्षर किये। हम इस अर्ज़ी को भेजने ही वाले थे कि इतने में हमारे ७६ भाई और भी आ गये। उनको भी लपसी से घृणा हुई और इस लिये हमने उस अर्ज़ी में यह और बढ़ा दिया कि "नये आने वाले क़ैदी भी भोजन के विषय में हम से सहमत हैं"। मैंने गवर्नर महाशय से उक्त अर्ज़ी को तार द्वारा भिजवाने की प्रार्थना की। उन्होंने टेलीफ़ोन द्वारा अपने अफ़सर से आज्ञा मांगी और उसी समय "लपसी" की जगह चार २ औंस की रोटियां मिलने की आज्ञा हो गई। ऐसा हो जाने से हम सब को बड़ी प्रसन्नता हुई और २२ तारीख़ से चार चार औंस की रोटियों को लपसी का स्थान मिल गया। संध्या को हमें ८ औंस के वज़न की रोटी (Half a loaf) मिलने लगी परन्तु यह प्रबन्ध केवल थोड़े ही दिनों तक था। इस प्रश्न पर विचार करने के लिये एक कमेटी हुई थी। हमने सुना है कि उन लोगों ने आटा, घी, चावल, और दाल देने की राय भी दे दी थी परन्तु ऐसा होने के पहिले ही हम लोग छूट गये और यह बात यों हीं समाप्त हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिले पहल जब हम केवल ८ आदमी थे, हम अपने हाथ से भोजन नहीं बनाते थे हमें कच्चे चावल और कभी २ अर्ध-कच्ची तरकारी मिल जाया करती थी इस लिये हमने अपने हाथ से अपना भोजन बनाने की आज्ञा मांगी । पहिले दिन श्रीयुत् कडवा ने हम सब के लिये रसोई बनाई । उसके पीछे श्रीयुत् थाम्बी नायडू और श्रीयुत् जीवन ने इस काम के करने का भार अपने ऊपर ले लिया । अन्त के दिनों में उन्हें १५० आदमियों के लिये भोजन बनाना पड़ा । सिवाय उन दो दिनों के जब तरकारियाँ मिलती थीं उन्हें सप्ताह भर दिन में एक बार रसोई करनी पड़ती थी किन्तु हर सप्ताह के इन दो दिन उन्हें दिन में दो बार चूल्हे का मुख देखना पड़ता था । श्रीयुत नायडू इस विषय में बड़ा परिश्रम करते थे । मैं भोजन परसा करता था ।

ऊपर की अर्ज़ी के ढंग से पाठकों ने इस बात को जान लिया होगा कि वह सब भारतवासियों की ओर से दी गई थी । उसमें केवल ८ ही का नाम न था । हमने इस बात को गवर्नर महाशय को भी समझा दिया था और उन्होंने वचन भी दे दिया था कि "हम सब एशिया-निवासी क़ैदियों का ख़याल रक्खेंगे ।" हमें अब भी आशा है कि भारत-वासी क़ैदियों के लिये जेल के भोजन में कुछ सुधार होंगे ।

किन्तु बेचारे चीन-निवासी क़ैदियों को चावल के बदले दूसरी चीज़ें मिलती थीं । इस बात से हम सब असन्तुष्ट हुए क्योंकि ऐसा होने से हम में और उनमें पृथकता तथा छुटाई बड़ाई प्रतीत होती थी । चीनियों की ओर से मैंने गवर्नर महाशय और मिस्टर प्लेफ़ोर्ड से प्रार्थना की और अन्त में यह आज्ञा हो गई कि भारत-वासियों के समान ही वे भी समझे जावें ।

युरोपियन क़ैदियों के भोजन के साथ अपने भोजन की तुलना करना शिक्षाप्रद होगा । युरोपियन लोगों को सबेरे लपसी और ८ औंस के वज़न की रोटी मिलती है । दोपहर को रोटी और शोरबा, रोटी और मांस, अथवा रोटी, मांस और आलू या तरकारी और संध्या को रोटी और लपसी मिलती है । इस प्रकार वे दिन में तीन बार रोटियां पाते हैं और इस लिये वे लपसी की कुछ परवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करते और फिर उनको ऊपर से मांस अथवा शोरवा मिल जाता है। इन चीज़ों के सिवाय उनको प्रायः चाय और कहवा मिलता है, इन बातों से प्रगट है कि युरोपियन और काफ़िर दोनों को उनके स्वभाव के अनुसार भोजन मिलता है। केवल बेचारे भारतवासियों को ही कष्ट भोगना पड़ता है। उनके भोजन का कोई विशेष प्रबन्ध ही नहीं। भारतवासियों को युरोपियन ढंग के भोजन दिये जाने से युरोपियन लोगों को संकोच होता है और भारतवासियों के भोजन का पता लगाने की किसी को क्या पड़ी है। परिणाम यह होता है कि इस विषय में उन्हें अपनी गणना काफ़िरों में करनी पड़ती है और इस प्रकार भूखों मरना पड़ता है। मैं समझता हूं कि इस में दोष भारतवासियों ही का है। कोई २ भारत-वासी क़ैदी चुरा छिपा कर उचित भोजन पा जाते हैं और कुछ ऐसे हैं जिनको जो कुछ मिला उसी में सन्तुष्ट रहते हैं। परन्तु अपने इस कष्ट को जन-समूह पर प्रगट करने से या तो उन्हें लज्जा आती है अथवा उन्हें दूसरों का कुछ ख़याल ही नहीं होता।

इस प्रकार जनसमूह इन कष्टों की ओर से बेख़बर रहते हैं। यदि हम सत्य का अवलम्बन करते हुए जहां कहीं अन्याय होता हुआ देखें वहां आन्दोलन करें, तो अवश्य हमें फिर इस प्रकार के कष्ट भोगने न पड़ें। स्वार्थ को त्याग कर यदि हम दूसरों की भलाई करने में लग जायँ, तो हमारी ये सब असुविधायें शीघ्र ही लोप हो जावें। परन्तु जिस प्रकार हमें इन सब कष्टों के दूर करने का विचार होना चाहिये वैसे ही हमें कुछ और बातों पर भी ध्यान देना चाहिये। क़ैदियों में कुछ कष्टों के सहन करने की शक्ति होना आवश्यक है। यदि कोई भी कष्ट न हो तो फिर "क़ैदी" होने में लाभ ही क्या है? जो अपने मन को वश में किये हुए हैं वे विपत्तियों में सुख अनुभव करते हैं और जेल के भीतर आनन्द से दिन बिताते हैं। परन्तु वे कष्टों के होने को भूल नहीं जाते और न उनको भूलना चाहिये ही क्योंकि उनके उस कष्ट में दूसरे भी उनके साथी होते हैं। हम में अपनी रीति रिवाज़ का अधिक पक्षपात होना भी एक दुर्गुण है। रोम में रहते हुए हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोम वालों का सा ही व्यवहार करना सीखना चाहिये। हम दक्षिणी अफ्रिका में रहते हैं इसलिये हमें उन २ भोजनों के खाने का अभ्यास करना चाहिये जो यहां पर अच्छे समझे जाते हैं। "लपसी" (Mealie Pap) ऐसी ही अच्छी, सादी और सस्ती खाद्य वस्तु है जैसा हमारा गेहूं। हम यह कदापि नहीं कह सकते कि उसमें स्वाद नहीं होता; कभी २ तो लपसी गेहूं को भी मात करती है। मेरी समझ में इस देश के सन्मानार्थ जिस को हम ने अपना लिया है, हमें इस देश की उन वस्तुओं का जो हानिकारक न हों प्रयोग करना चाहिये। बहुत से श्वेताङ्ग इस "लपसी" को पसन्द करते हैं और सवेरे खाया करते हैं। यह लपसी दूध, चीनी अथवा घी मिलाने पर स्वादिष्ट हो जाती है। इन कारणों से और इस बात का विचार करते हुए कि हमें फिर जेल जाना पड़ेगा, प्रत्येक भारतवासी को इस लपसी के खाने का अभ्यास करना चाहिये। एक बार आदत पड़ जाने पर समय पर इसका नमक के साथ खाना भी बुरा न मालूम होगा। स्वदेश की भलाई के लिये हमें अपनी कुछ आदतों का छोड़ना आवश्यक है, उन २ राष्ट्रों के लोग जिन्हों ने उन्नति की है अपनी उन बातों के छोड़ने में नहीं झिझके जिनके छोड़ देने से उनकी कोई हानि नहीं होती थी। साल्वेशन आर्मी (मुक्तिफ़ौज) ईसाई धर्म के प्रचारकों की एक मण्डली के लोग जहां कहीं जाते हैं उस देश के उन २ व्यवहारों को ग्रहण करके लोगों के चित्त को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं जिन का ग्रहण करना विशेष निन्दनीय न हो।

क्रमशः।

हमारी भाषा हमारी पूंजी है

नागरी प्रचारिणी पत्रिका के संपादक महाशय की कुशाग्र बुद्धि को हम अवश्यमेव सराहेंगे जिनका यह मन्तव्य है कि वैज्ञानिक तथा शिल्प संबन्धी विषय जब तक अपनी भाषा में न कर लिये जांयगे तब तक वे हमारी पूंजी नहीं होंगे। हमारे सुशिक्षित नवयुवक भांत २ की वैज्ञानिक शिक्षा के बड़े २ इमतिहान पास कर विज्ञान के बहुत से तत्व जान जाते हैं। बहुतेरे उनमें के पूर्ण पंडित भी हो गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हमें उनकी पण्डिताई से क्या लाभ? इस लिये कि जो कुछ उन्होंने जाना या सीखा सब दूसरों की पूंजी की बदौलत। इन सुशिक्षितों का पहिला कर्तव्य यही है कि जो कुछ उन्होंने जाना है उसे अपनी पूंजी बना लें। जो तभी हो सकता है जब सब अपनी कमाई को अपनी भाषा में कर निज की पूंजी कर लें। बाबू महेशचरण सिंह "रसायन शास्त्र" की एक पुस्तक बनाय इस बात में अग्रसर हुये हैं। सुशिक्षित मण्डली के और लोग भी इनका अनुकरण करते हुये आधुनिक नये २ विज्ञान के ग्रन्थ लिख चलें तो वह सब हमारी पूंजी हो जांय और हमारी भाषा की भी असीम वृद्धि हो। भाषा की उन्नति भी राष्ट्रीय उन्नति का एक सब से बड़ा अंग है तब इस प्रधान अंग की पूंजी बढ़ने से हमारा राष्ट्रीय धन बहुत अधिक बढ़ सकता है और आत्मशासन के लिये हमें दृढ़ कर सकता है।

अमेरिका तथा भारतवर्ष की रेलगाड़ियां

फ़रवरी मास के "माडर्न रिव्यू" में उक्त विषय पर एक अत्युत्तम सचित्र लेख छपा है। लेखक ने बतलाया है कि प्रारम्भ में भारतवर्ष में रेलों के जारी होने से बहुत कुछ लाभ की सम्भावना थी। रेलों के चलाने का उद्देश्य ही यह बताया गया था कि इनके कारण दुर्भिक्षों में कमी होगी। अनाज को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में सुविधा होगी और इस प्रकार भूख के कारण जो मृत्युएं होती हैं उन की संख्या घट जावेगी।

किन्तु शोक से कहना पड़ता है कि प्रायः पचास वर्ष की परीक्षा के पीछे रेलों के जारी होने का फल आशाओं के नितांत विरुद्ध दिखाई देता है। उन्नीसवीं शताब्दी के पहिले ५० वर्ष में अकालों की संख्या तथा अकालों द्वारा मृत्यु की संख्या ऐसी भयानक नहीं थी जैसी पिछले ५० वर्ष में जब कि रेलें प्रचलित थीं। कारण यह है कि भारतवर्ष में रेलों के जारी करने का उद्देश्य भारत की आर्थिक उन्नति नहीं है वरन् भारत के शासकों की राजनैतिक आवश्यकता है। तीस कोटि मनुष्यों को दो लाख अन्य जाति के लोग बिना रेल तार इत्यादि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदापि अपने शासन में नहीं रख सकते। इस के अतिरिक्त एक दूसरा कारण यह भी है कि रेलों द्वारा अङ्गरेज़ों का धन बड़े लाभ दायक व्यापार में लगता है। दरिद्र भारत में सैकड़ों मील रेलवे के खुलने के येही दो मुख्य उद्देश्य है। यद्यपि भारतवर्ष की सरकारी अथवा कम्पनी की रेलों की आमदनी भारतवासियों ही से है तौ भी रेल गाड़ी से भारतवासियों को अन्य जाति के मनुष्यों की अपेक्षा बहुत कम सुख मिलता है और कोई ही ऐसा दिन जाता होगा जिस दिन किसी न किसी भारतवासी की रेल पर मानहानि न होती हो। जिस किसी दर्जे में एक योरोपियन बैठा हुआ हो वहां से प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित भारतवासी का Black niggard कह कर निकाला जाना तो एक साधारण सी बात है। हिन्दोस्तानी अबलाओं के सतीत्व-भङ्ग होने की हृदयविदारक कथाएं भी कुछ कम सुनने में नहीं आती। तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों को जो २ कष्ट सहने पड़ते हैं उनका तो कहना ही क्या? गांठ से दाम देकर कोड़े खाते हमने संसार में इन्हीं को देखा है। बड़े २ मेलों तमाशों पर बराबर देखा जाता है कि जगह कम होने के कारण पुरुष, स्त्रियां और बालकों को असबाब तथा पशुओं की गाड़ियों में ठूस २ कर भर दिया जाता है।

सारांश यह है कि भारतवर्ष में रेलगाड़ियों में देशवासियों के सुख तथा आदर का कुछ भी विचार नहीं किया जाता। परन्तु इसके विपरीत अमेरिका की रेलों में मुसाफ़िरों का आराम ही मुख्य समझा जाता है। अमेरिका में दो प्रकार की गाड़ियां हैं एक दिन के मुसाफ़िरों के लिये और दूसरी रात में सफ़र करने वालों के लिये। सब मुसाफ़िर एक ही दरजे में सफ़र करते हैं। प्रत्येक दरजे में कितने ही गद्देदार बेञ्च अथवा कुरसियां होती हैं और एक बेञ्च पर केवल दो आदमी बैठ सकते हैं। दरजे में स्त्री पुरुषों के लिये पृथक पाख़ाने होते हैं और नहाने और पीने के लिये पानी होता है। पीने का पानी गर्मियों में बरफ़ से ठण्डा रक्खा जाता है। बैठने की गाड़ियां अलग और असबाब रखने की अलग होती हैं।

रात में सफ़र करने वालों को दिन वालों से कुछ अधिक किराया देना होता है। हर एक सोने वाले को एक कोच मिलता है जिस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर परदे रहते हैं और बिजली की रोशनी का प्रबन्ध होता है। सैर करने वालों (Tourists) की गाड़ियों में खाना पकाने के लिये अङ्गीठियां होती हैं। धनाढ्यों के लिये गाड़ियों में ऐश का पूरा सामान कुर्सी, समाचार पत्र, पियानों इत्यादि होते हैं और इन के साथ खाने पीने की वस्तुओं की दूकान भी होती है। जाड़ों में सब गाड़ियां भाप द्वारा गरम रक्खी जाती हैं और वायु तथा प्रकाश का पूरा प्रबन्ध होता है। गाड़ियां भारी भरकम और सड़क साफ़ होने के कारण हिचकोले बहुत कम लगते हैं। प्रत्येक जाति तथा देश के मनुष्य साथ साथ एक दरजे में सफ़र करते हैं और सब के साथ एक सा बर्ताव किया जाता है। संक्षेप से यह कि अमेरिका में भारतवर्ष के विपरीत मुसाफ़िरों के मान चैन तथा सुख पर पूरा ध्यान दिया जाता है और सफ़र में पीड़ा तथा दुःख कम कर के दिल्लगी तथा आनन्द बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है।

वसन्ती देवी की रसिकता।

(माडर्न रिव्यू से)

इङ्गलैण्ड में लार्ड राबर्ट्स ने सरकारी मदरसों के लड़कों की केडिट्कौर (Cadet corps) अर्थात् नवयुवक सेनादल बनाने का प्रयत्न किया है। बसन्ती देवी (मिसेज़ बेसन्ट) ने भी इसकी नक़ल में बनारस हिन्दू कालिज के छात्रों का एक सैन्य दल बनाया है। किन्तु अन्तर यह है कि लार्ड राबर्ट्स का प्रत्येक सैनिक जितने चाहे शस्त्र धारण कर सकता है और बसन्ती देवी के सैनिकों के लिये तलवार या बन्दूक़ को छूने पर भी २ वर्ष का कड़ा कारावास है। सच तो यह है कि किसी शस्त्रहीन जाति के युवकों को केडिट कौर कहना घाव पर नमक छिड़कना है। आज युवकों की सेना बनी है कल पायनियर आफ़िस के दफ़्तरियों की गोन्दानियों तथा दवातों का तोपख़ाना बनेगा और फिर किसी दिन हिन्दोस्तानी क्लर्कों की दो टांगों पर चढ़ने वाली छतरियों से सुसज्जित अश्वारोही सेना रचे जाने की सम्भावना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीबी बसन्ती का युवकदल यथार्थ में उनका साया उठने वाला परिचर दल ही है। किन्तु न जाने बसन्ती देवी इस बात के स्वीकार करने में संकोच क्यों करती हैं? थोड़े दिन हुए हिन्दू कालिज मेगेज़ीन में मिसेज़ बेसेण्ट को "आयरलैण्ड के राजाओं की संतान" कहा गया था फिर यदि हिन्दुओं की सन्तान इस शाही ख़ान्दान वाली मेमों के सामने सिर झुकावें तो हानि ही क्या है?

मासिक दृश्य।

भाई परमानन्द प्रोफ़ेसर डी० ए० वी० कालिज पकड़े गये।

नासिक हत्या के सम्बन्ध में बम्बई में चतुर्भुज जबेर भाई अमीन के मकान की तलाशी हुई। छत के नीचे एक ब्राउनिङ्ग पिस्तौल और १४९ कारतूस निकले।

लाहौर राज द्रोह के अभियोगों में पं० गणेशी लाल प्रकाशक "आकाश" और लाला लालचन्द प्रकाशक "सरकारी मुलाज़िमत" इत्यादि ने सरकार से क्षमा माँग ली।

पटियाले राजद्रोह के अभियोग में अभियुक्तों ने महाराजा से क्षमा की प्रार्थना की।

सक्कर राजद्रोह के मुक़द्दमे में श्रीयुत वीरूमल तथा चेतूमल को ३ वर्ष के कालापानी तथा १०००) जुरमाने की सज़ा हुई। श्रीयुत गोवरधन लाल को २॥ वर्ष का कालापानी और ५००) जुरमाना हुआ।

कलकत्ता हाईकोर्ट की सीढ़ियों पर सायंकाल के ५ बजे शमसुल आलम डि० सु० पुलीस को वीरेन्द्र नाथ दत्त गुप्त नामक एक १८ वर्ष के नवयुवक ने पिस्तौल से मार डाला युवक थोड़ी देर में पकड़ा गया।

हेली का धूम्र केतु दिखाई दिया।

वाइसराय की नवीन राज नियम व्यवस्थापक सभा का पहिला अधिवेशन हुआ। सभासदों ने राजभक्ति की शपथ की।

मुसलिम लीग इण्डिया का वार्षिक अधिवेशन देहली में हुआ।

शमसुल आलम के हत्याकारी वीरेन्द्र नाथ दत्त गुप्त का मुक़द्दमा हाईकोर्ट में हुआ। हत्यारे को फांसी का हुक्म हुआ।

वीरेन्द्र के पकड़ने वाले सिपाहियों को इनाम तथा सनद मिले।

प्रेस बिल का प्रस्ताव लेजिस्लेटिव कौंसिल में पेश हुआ। इस पर विचार करने के लिये एक कमेटी बनाई गई। छापेख़ानों तथा समाचार पत्रों की स्वतंत्रता को कम करने के लिये प्रेस बिल पास हुआ। बङ्गाल के नव निर्वासित नेता छोड़ दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-दर्पण

स्त्रियों और लड़कियों के पढ़ने योग्य हिन्दी भाषा में पहिला

मासिक पत्र।

धर्म, साहित्य, सामाजिक सुधार, राजनीति आदि
विषयों पर अधिकतर

स्त्रियों ही के लेख

इस पत्र में लिखे रहते हैं।

मूल्य डाक व्यय सहित साल भर के लिये २।) एक प्रति।)

सम्पादिका—श्रीमती रामेश्वरी देवी

मैनेजर—श्रीमती कमला देवी

पता—१३ सिटी रोड—प्रयाग

"श्री वेङ्कटेश्वर समाचार" लिखता है:—"कन्याओं और महिलाओं के लिये यह पत्र अत्युत्तम है और उपयोगी है। हम बड़े आदर से इसका स्वागत करते हैं। समस्त शिक्षित घरानों में इसको जगह मिलनी चाहिये। हमारा ख़याल है कि यदि यह पत्र चलता रहा तो स्त्री शिक्षा की बहुत बड़ी उन्नति होगी।"

इसी प्रकार से और और अङ्गरेज़ी और हिन्दी पत्र लिखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD. NO. A. 308.

कर्मयोगी ।

हिन्दी भाषा

में

भारत राष्ट्रीय धर्म का सब से उत्तम साप्ताहिक पत्र

(प्रत्येक शुक्रवार को प्रयाग से निकलता है)

सम्पादक

श्रीयुत् सुन्दरलाल जी बी० ए०

यह पत्र प्राचीन वैदिक धर्म की मर्यादा को सामने रखते हुए भारत राष्ट्रीय पक्ष के सिद्धान्तों पर निर्भयता के साथ विचार प्रकट करता है ।

वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित केवल २॥)

मिलने का पता:—

मैनेजर "कर्मयोगी"

इलाहाबाद ।

श्री मथुरादास के लोक प्रेस इलाहाबाद में सुन्दरलाल के प्रबन्ध से छप कर प्रकाशित हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री

वन्दे मातरम्

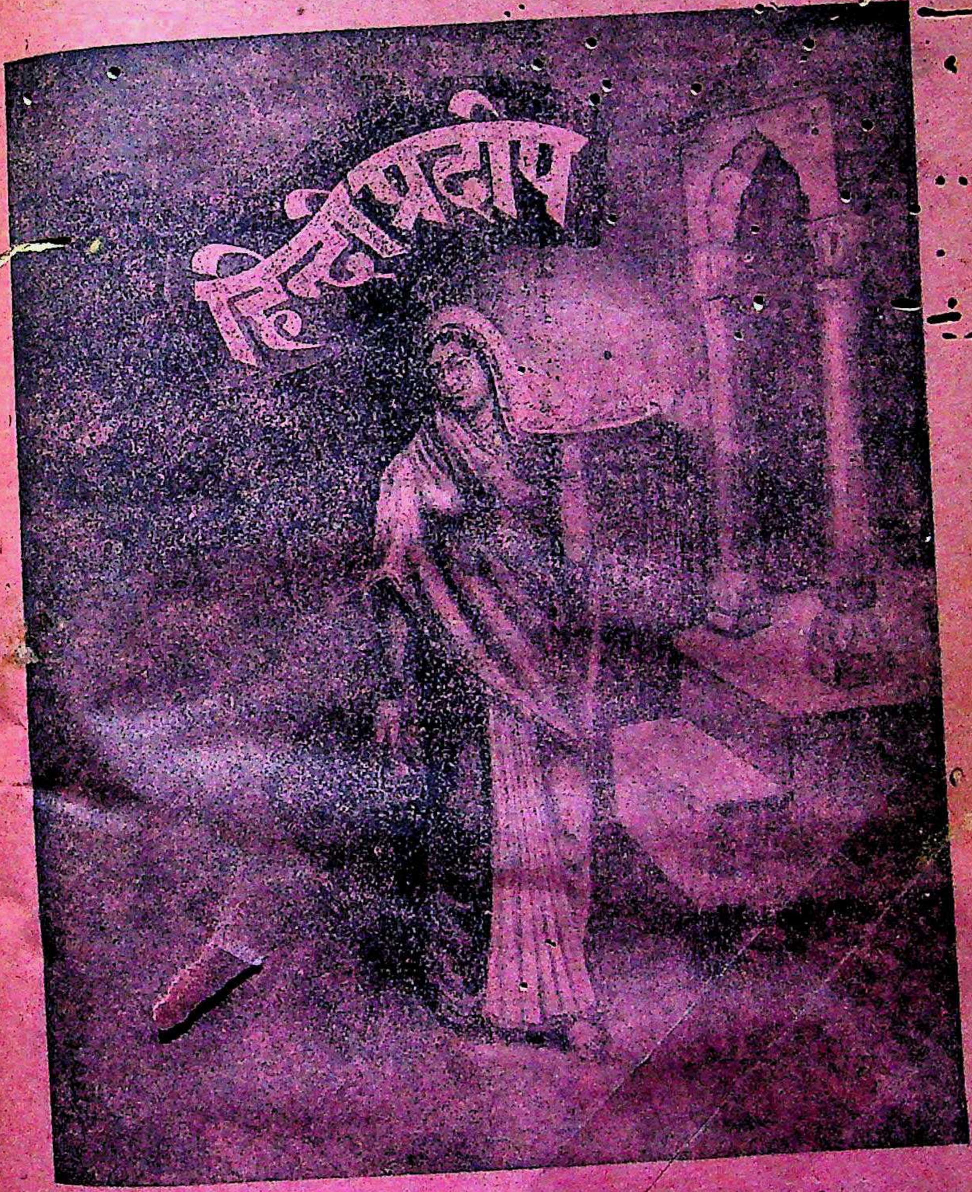

(हर महीने की अमावस्या को प्रयाग से निकलता है)

सम्पादक—पं० बालकृष्ण भट्ट

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप समथिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक वि[illegible]र उन्नति कुमति सब यामें जरै।
"हिन्दी प्रदीप" प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विषय सूची ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१–नवयुवकों में गाम्भीर्य आवश्यक है ... १
२–अब की हमारी बारी है ... ३
३ होली ६
४ पृथु चरित्र नाटक ... ७
५–जाया स्तोत्र १०
६–[illegible]शीस्य [illegible] रहस्य .. ११
७–नये नवरत्न १३
८ श्रीयुत गान्धी के कारावास की कहानी १४
९ भक्ति की भावना ... २०
१० शिक्षा का प्रकाश ... २४
११–चन्द्रोदय २५
१२ नई सभ्यता की बानगी ... २७
१३–सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परोददातीति कुबुद्धिरेषा ... ३०
१४–देशभक्त मैज़िनी की कतिपय उक्तियां ३२
१५–क्या आप अङ्गरेज़ों का ... अनुकरण करते हैं ? ... ३३
१६–मासिक दृश्य ३७

नोटिस ।

जिन सज्जनों के पास यह अङ्क बतौर नमूने के भेजा जा रहा है उन्होंने यदि अगले अङ्क के निकलने तक कोई उत्तर न दिया तो समझा जावेगा कि वे ग्राहक होना स्वीकार करते हैं और "हिन्दीप्रदीप" का अगला अङ्क उनकी सेवा में वी० पी० द्वारा भेजा जावेगा, हमको पूर्ण आशा है कि वे लोग वी० पी० को स्वीकार कर बाधित करेंगे ।

मैनेजर—"हिन्दीप्रदीप"

हिन्दीप्रदीप का

मूल्य १ साल का डाक व्यय सहित साधारण लोगों से २॥)

राजा महाराजा और तालुक़ेदारों से ५)

सरकार अङ्गरेज़ी, सरकारी अफ़सरों तथा दफ़्तरों से २५)

एक प्रति का मूल्य ।)

मिलने का पता

मैनेजर—"हिन्दीप्रदीप"
प्रयाग पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड्
इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

जि० २१ { फाल्गुण वदी अमावस्या शुक्रवार सम्वत् १९६६ } सं० ५

नवयुवकों में गाम्भीर्य आवश्यक है

इसमें सन्देह नहीं भारत अपने भावी सुदिन के [illegible] न होग[illegible]
की बाट जोह रहा है । इनकी चढ़ती उमंग और [illegible] केवल इतनी है [illegible]
के उद्धार का द्वार होगा । तब यह कहना अत्[illegible] विचारपूर्वक [illegible]ना
हमारी भविष्य भलाई के अंकुर हैं । कसर [illegible] । कर्मचारीगण [illegible]स्य
की सरगरमी और जोश में गाम्भीर्य तथा सशंकित से रहते हैं और
की शक्ति का अभाव प्रगट हो रहा अंगरेज़ कर्मचारी अपना [illegible]रा-
में सलतनत की बागडोर है इन [illegible]ते वे हमारे हितैषी तथा [illegible]था-
यही कारण है । मामा[illegible]कि [illegible]जाति के स्वार्थ में हानि नहीं [illegible] रूस
हमारे अनुकूल नहीं कर सक[illegible] युवकों में गाम्भीर्य रहता [illegible]वन बाद-
तक हैं जहां तक उनकी [illegible] न हो गया
भी इन शिथिल [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करने में प्रवृत्त रहते तो बार बार इनका स्खलन न होता न राजकर्मचारियों की ऐसी कड़ी नज़र इन पर रहती । इन कर्मचारियों का समूह यद्यपि अधिकांश स्वार्थलंपट है तौ भी उस समूह में जो न्याय दृष्टि वाले हैं और न्याय पथ पर चलने का जिन का प्रण है वे इनकी विचार और गाम्भीर्ययुक्त उमंग से रीझ इनकी प्रार्थना पर कहां तक ध्यान न देते । कार्य अकार्य का विचार न होने ही से इनका सब उत्साह निरा अरण्यरुदन सा व्यर्थ है । हमारे युवक जन राष्ट्रीय विषयों में हस्तक्षेप न करें राजकीय कर्मचारियों की ओर से इसकी ताकीद भांत २ के क़ानून और रिज़ोल्यूशन के द्वारा उन्हें उधर से महरूम रखने का प्रयत्न तो निरी हिकमत अमली है । वास्तव में उन्हें राष्ट्रीयता से अलग रखना देश के लिये कभी भलाई न मानी जायगी । उच्चशिक्षाप्राप्त कालेज के लड़कों को राष्ट्रीय बातों में हस्तक्षेप करने से रोकना उनकी ख़मीर को बरबाद करना है । रहा विचार और गाम्भीर्य सो तो उनकी उमर शारीरिक बल और मानसिक शक्ति Mental faculties के साथ ही साथ आप ही बढ़ता जायगा । तब कार्य अकार्य के विचार का अभाव भी मिट जाना सम्भव है । बड़े २ सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ Statesmen जिन्होंने न जानिये [illegible]न्दोलनपुस्तकें इस विषय की रच डाली हैं । राष्ट्रीयता Politics में योग्य हुये ।ति का प्रमाण माना जाता है वे छात्र दशा ही से [illegible]या । गरम दल में हिस्सा लेते लेते न जानिये कितनी चोट खाकर [illegible], अगुआ या प्र[illegible] पढ़ लिख कर भी जो गोबर बने रहे तो सुशिक्षा [illegible] सो नहीं वरन [illegible] वाले हों चाहो नरम दलवाले जो इस समय [illegible]ग्य हुये । पुरानों के आन बनते हैं एक ही दो दिन में इस योग्य [illegible]ते हैं और नये लोगों में नवयुवक रहे तभी से अभ्यास डालते २ [illegible] भी हम उन पर श्रद्धा रखते[illegible] शुद्ध आचरण पर भी जो हम [illegible]का अंकुर पाया जाता है । इन्हें[illegible] से उनके भ्रष्ट और दूषित [illegible]ों खड़े होने का प्रयत्न पाया जो हैं सो इसी से कि इनमें [illegible] अपने स्वरूप का परि- [illegible]ता है । सुशिक्षा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाव सब ओर से इनमें जागरूक है। सदालों पुरानों में इन सब बातों का अभाव है। नयों का नवाभ्युत्थान देख चित्त हर्ष निर्भर हो ताण्डवी लीला का अनुभव करने लगता है। पुरानों की दास्य-भावपूर्ण जीर्ण जर्जरित दशा पर ग्लानि होती है। मन की कली प्रस्फुटित होने के बदले मुंद कर मलिन पड़ मुरझा जाती है। कर्म-चारीगण इसी से इन्हें प्रोत्साहित न कर इनकी Spirit उठती उमंग को दबाया चाहते हैं। उस उमंग के साथ जो गम्भीरता और विचारशक्ति भी आटिके तो कदाचित् कर्मचारी भी प्रतिकूलता का भाव मन से ढीला कर डालें और ये नवयुवक देश के बड़े उप-कारी हों।

अब की हमारी बारी है

उसे जाने दीजिये जब भारत का उग्र शासन समस्त भूमण्डल में व्याप्त था। टर्की, ईरान, तूरान, अरब की मरूभूमि सब भारत के अन्तर्गत रही। जिसके चिन्ह अब तक जहां तहां पाये जाते हैं और भारत की विजय पताका सब ओर फहरा रही थी। इतिहास इस बात की साक्षी है कि यूरोप का उत्तरी भाग अनुर्वर और अत्यन्त शीतप्रधान होने से नितान्त निर्जन और उजाड़ पड़ा था। जो लोग उसमें बसते थे वे अत्यन्त असभ्य और जङ्गली थे। लैपलैण्ड आदि देश अब तक उसके उदाहरण हैं। यूरोप का दक्षिण भाग जहां शीत इतना अधिक नहीं है नातिशीतोष्ण कटिबन्ध Temperate Zone के सन्नीरस्थ होने से तथा समुद्र पास रहने से जहां का जल वायु भी मृदु और स्वास्थ्यसम्पादक है सब एशिया के आधीन था। महम्मद के उत्तरा-धिकारी खलीफाओं के समय समस्त इटली, स्पेन, पोर्टगाल, आधा फ्रांस तक खलीफाओं ने ग्रास कर लिया था यूरोपियन टर्की या रूम अब तक जिनके अधिकार में है अत्याचारी भोगलिप्सू यवन बाद-शाहों का अत्याचार और भोग बिलास इतना अधिक न हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता तो कदाचित् समग्र योरोप को वे लोग एक दिन निगल बैठते और एशिया खण्ड सब के ऊपर रहता। पर समय के हेर फेर से काल-चक्र की अद्भुत वक्रगति कुछ ऐसा पलटा खाती है कि दिन का रात और रात का दिन बन जाता है। उजाला अंधियारे में पलट जाता है। पांव की धूलि सिर पर चढ़ जाती है और सिर की टोपी पांव तले आ जाती है। उत्तरी योरोप की वही जङ्गली जाति जिनका वस्त्र पेड़ की छाल और आखेटलब्ध पशुओं की मांस जिनका भोजन था अब सबों के शिक्षागुरु और समस्त सभ्यता की सिरमौर बनी है। एशिया खण्ड का कोई देश नहीं बचा जहां यूरोप ने अपना पञ्जा नहीं फैला रक्खा। ब्रिटिशसिंह की तो अकथ कहानी है उसका कहना ही क्या है। कहीं फ्रांस ने अपना पांव जमा रक्खा है, कहीं हालैंड और बेलजियम के डच लोगों ने अपनी प्रभुता को सर्वोपरि मान रक्खा है, कहीं जरमनी की जड़ जम गई है, वीरप्रसविनी माताओं के सुसन्तान जापान के वीर बांकुरे यदि एशिया वालों का मुख उज्वल न किये होते तो रूस का भालू उसे भी अपने डाढ़ के अन्तर्गत कर लिया होता। काल के विपर्यय का महत्व है जो इस क्षितितल में प्रत्यक्ष देख पड़ता है कि जो ऊँचे पर चढ़े हैं वे नीचे गिरे जाते हैं जो सब के नीचे रह तुच्छातितुच्छ थे वे सर्वश्रेष्ठ हो फूले नहीं समाते। एशिया जो एक समय आध्यात्मिक तथा ऐहिक ज्ञान का केन्द्र था जहां से प्रकाश की किरणें फूट २ समस्त संसार में छिटकी। बड़े बड़े ज्ञानी, तत्ववेत्ता, धर्म के प्रवर्तक बुद्ध, ईसा, महम्मद आदि सब एशिया ही में हुये; जिनके बताये मार्ग पर चलने वाले सम्पूर्ण पृथ्वी भर में फैले हैं। एक २ इन मतप्रवर्तकों के कई करोड़ मनुष्य मानने वाले हैं। एक हमारे मित्र का यह सिद्धान्त है कि "जो देश जितना ही पुराना है वहां उतनी ही ईश्वर के सम्बन्ध में छान बीन की गई है" बहुत ही उचित मालूम होता है। कौन सी विद्या तथा चातुरी बच रही जिसे एशिया के विद्वानों ने पहिले पहिल नहीं प्रकाश किया। शौर्य और शारीरिक बल में एशिया ही अग्रसर रहा। उस समय के प्रचलित विज्ञान भी एशिया ही में प्रगट किये गये। अब इस समय एशिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीहत रुी हो जितनी उन्नति होना सम्भव है सब के लिये योरोप का मुह जोह रही है। पहले के जङ्गली असभ्य यूरोप के लोग बाहुबल, विज्ञान, शिल्प, नई सभ्यता, नये नये आविष्कार तथा धन सम्पत्ति में नित्य-नित्य बढ़ते हुये सीमा के बाहर होते जा रहें हैं—"पतनान्ताः समुच्छ्रयाः" उन्नति की अवधि नीचे को पतन है। वह उन्नति अपनी सीमा तक पहुंच चुकी है। फ़ेशन में तराश ख़राश और भोग विलास का बढ़ना ही पतन का सहकारी है। और वही इस नई सभ्यता का प्रधान अंग हो रहा है। तब यह बेल बहुत दिनों तक मड़ये पर नहीं चढ़ी रह सकती। अब हमारी बारी आई है। चक्र जो घूम रहा है सदा उत्तर की ओर से ढुलकना आरम्भ करता है। यूरोप में उत्तर ही के देशों से उसका आरम्भ हुआ था यहां भी जापान के वीर बांकुरों ने उसका आरम्भ कर दिया है। वह उत्तर की हवा चलते २ चीन तक पहुंच चुकी है। चीन वाले इस समय निद्रा से जाग अपने को सम्हाल रहे हैं। क्रमशः वह हवा हिमालय को पार कर भारत में आ बहैगी। देर हो रही है अवश्य किन्तु "देर आये दुरुस्त आये" वाले सिद्धान्त के अनुसार वह हवा यहां बड़ी दृढ़ता के साथ बहैगी और हमारी बारी आवैगी। तब समय एक ही अर्जुन और कर्ण थे अब घर २ अर्जुन देख पड़ेंगे। सत्य पर अटल स्नेह रखने वाले तब एक ही युधिष्ठिर थे अब प्रत्येक कुनबे में एक २ युधिष्ठिर पैदा हो जांयगे। तब एक ही बाहुबलशाली भीम थे अब न जानिये कितने भीम भावी हैं। तब एक ही दृढ़प्रतिज्ञ भीष्म थे अब सभी को देश के उद्धार की प्रतिज्ञा के पालन का प्रण है। फ्रान्स में एक ही नेपोलियन हुये इङ्गलैंड में भी एक ही बर्क और शेरिडन जन्मे थे यहां एक २ बालक नेपोलियन बनने का उत्साह मन में रखते हैं। वक्तृत्वशक्ति में पाठशालाओं के एक २ छात्र बर्क और शेरिडन होते हुये देख पड़ते हैं। हिमालय से कन्याकुमारी तक "वन्देमातरम्" की ध्वनि गूंज रही है। कोई स्थान नहीं बचा जहां जन्मभूमि वात्सल्य और देशप्रेम की पताका न फहरा रही हो। कसर केवल एक फ़सल कट जाने की है नई फ़सल जो अब तैयार हो रही है चिरकाल की निद्रा का विसर्जन कर उद्यम, साहस, बल, वीर्य के द्वारा भारत का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काया पलट एक बार फिर इसे राम और युधिष्ठिर के समय का कर दिखावेगी । इसी से हम कहते हैं "अब की हमारी बारी है" ।

होली

ऐसी होरी मचाओ, यार अब ऐसी होरी मचाओ ।

द्वेषद्वेष को नशा छानि के मिलन हू को छनाओ ।
धर्म नीति की गजक उड़ाओ मेल फाग मिल गाओ ॥
परस्पर कंठ लगाओ ॥ १ ॥

विद्या को केसर सम जानो गाढ़ो रंग घोराओ ।
शुभ आशा पिचकारी भरि भरि सबही पै छिड़काओ ॥
ऊँच नहिं नीच बराओ ॥ २ ॥

धन संपति गुलाल सब जानो झोरिन भरि भरि धाओ ।
देश भद्र हित उँमगि उँमगि कै भरि भरि मूंठ चलाओ ॥
शिल्पशालायें खोलाओ ॥ ३ ॥

मित्रभाव को करो कुमकुमा अनुभव अबिर भराओ ।
प्रेम समेत परस्पर घालो नाजुक अंग बचाओ ॥
जुगुति ऐसी ठहराओ ॥ ४ ॥

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई ऐकै सुर सब गाओ ।
अपनी तान अलापि अलग ही फजिहत नाहि उठाओ ॥
बात यह मन में लाओ ॥ ५ ॥

देश वस्तु निज प्यारी जानो ताहि सिँगार कराओ ।
ऐसो सुन्दर पाय सुअवसर लपकि हिये लपटाओ ॥
लाज सब खोय बहाओ ॥ ६ ॥

प्रेम समेत सत्य उन्नति की सब मिलि चांचरि गाओ ।
देशभक्ति की कहो कबीरैं तनक नहीं शरमाओ ॥
विजय यश जग में पाओ ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथु चरित् नाटक

(गताङ्क से आगे)

दूसरा अङ्क—दूसरा गर्भाङ्क

स्थान—राज भवन

(सिंहासनारूढ़ बेणु)

बेणु—हम सार्वभौम चक्रवर्ती हैं तब हम से बढ़ कर संसार में कौन हो सकता है जिसका हम मान करें। हमको तो अपनी गम्भीर बुद्धि के आगे बड़े से बड़े बुद्धिमान् और विद्वान् सब भुनगा जँचते हैं। उः! हमारी अथाह सम्पत्ति, धन और रत्नराशि का कहीं आर पार है! तब उद्धत भाव छोड़ नम्र हो हम क्यों गिड़गिड़ांय। आठो दिक्पाल का अंश राजा में रहता है राजा प्रत्यक्ष देवता है। तब प्रत्यक्ष देवता हमें छोड़ किसी दूसरे को लोग क्यों पूजते हैं। समस्त देवताओं के देवता हमारे विद्यमान् रहते इन्द्र, वरुण, कुबेर इत्यादि होते कौन हैं जिन्हें लोग यज्ञ में आहुति देते हैं। ब्राह्मणों ने यज्ञ की प्रथा चलाय सब बिगाड़ रक्खा है। इस का फल होगा कि आगे मेरे वंशधरों की दुर्गति होगी। (हँस कर)

"ब्राह्मन घर घर फिरैं मांगते शूद्र बैठ पुजवाते हैं।
पैसा दो दक्षिणा लेन हित पहरों सीस खपाते हैं।
ब्रह्मभोज सुन बिना बुलाये कोसों दौड़े जाते हैं।
वेदपाठ, हरिभजन, योग जो ब्रह्म धर्म कहलाते हैं।
सब को छोड़ वृथा धनिक की घुड़की झिड़की खाते हैं।
नीचन के घर पचैं रसोई पहले उन्हें खिलाते हैं।
बचे खुचे से पेट पूर कर निज सौभाग्य सराहते हैं।
मिल बाज़ार से सौदा लावैं जमा ख़र्च समझाते हैं।
पैसा टका भूल हित प्रतिदिन डांट डपट सब सहते हैं।
नीच-जाति के सूतमुतों को ब्राह्मन गोद खेलाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लार मूत बस्तर पर पड़ता तहू नहीं शरमाते हैं।
ऐसे कितने नीच कर्म कर तनिक नहीं सकुचाते हैं।
निपट लालची हैं कलियुग में द्विजता दाग लगाते हैं"।

अस्तु युग युगान्तर में इन ब्राह्मणों की दुर्गति अवश्य होनहार है और यह सब इसी लिये होगी जो ये सब हमारी अवज्ञा कर रहे हैं। अच्छा है (हँसता है)

(दौवारिक का प्रवेश)

दौवारिक-महाराज की जै हो! तपोवन से ऋषि लोग आये हैं।

वेणु—क्या हमारे राज्य में अभी ऋषिकुल बचा है-हमारी तो सदा यही चेष्टा रही कि ब्राह्मणों को निर्मूल न कर सकें तो इन्हें सब भांत लुञ्ज पुञ्ज कर रक्खें जिसमें ये कभी ज़ोर न पकड़ सकें अच्छा जा बुला ला। आने दो देखो इन बूढ़ी डाढ़ी वालों को कैसा बनाते हैं कि इनका ऋषित्व का अभिमान छार में मिल जायगा।

दौवारिक—जो आज्ञा (जाता है और भृगु आदि ऋषियों को साथ लिये फिर आता है) (वेणु ऋषियों को बिना प्रणाम किये अकड़ के बैठ जाता है)।

ऋषि समूह—राजन् तुम्हारा कल्याण हो!

वेणु-आप लोग कौन हैं? क्यों आये हो? क्या चाहते हो? राजाओं के द्वार में भिखारी जङ्गली हूर्सों के आने का क्या काम? क्षितिपाल-मौलिलालित चरण कमल राजा महाराजाओं के सभामण्डप में आने का क्या क्रम है इसे जङ्गल के रहने वाले तुम लोग क्या जानो! बड़े २ नगर तथा राजधानियों में तुम्हारा आवागमन रहा होता तो जानते कि सभ्य समाज का क्या बर्ताव है। अस्तु कहो क्या चाहते हो?

भृगु—(स्वगत) अरे यह तो बड़ा मदोद्धत है। निश्चय इसका नाश बहुत समीप है। नहीं तो इसकी ऐसी विपरीत बुद्धि न होती "विनाश काले विपरीत बुद्धिः" हम इसे समझाने और उपदेश देने आये थे सो यह उलटा हमी को मूर्ख बनाता है। चौबे से छब्बे होने गये पास का दो गवाँय दुबे ही रहे सोलह सौ के हज़ार हुये। (प्रकाश) राजकुमार! तुम अभी बालक हो और उस कुल में जन्मे हो जहां धर्म की मर्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कभी अन्तर नहीं पड़ा। इससे हम तुम्हारा सब अपराध क्षमा कर तुम्हे समझाते हैं कि न्याय के मार्ग पर चलो जिसमें किसी को क्लेश न पहुंचे। हम बन के रहने वाले हैं सही पर तुम ऐसे पण्डितमानी न जानिये कितने सभ्यों को बना दिया है। जिसे तुम सभ्यता कहते हो उसका मूल किसने गढ़ा? राजकुमार अब भी चेतो भला होगा!

वामदेव—राजनन्दन! भृगु बहुत ठीक कहते हैं इनके कहने पर काम दो।

अत्रि—तुम अभी निरे बालक हो बूढ़ों का कहना मानना उचित है नहीं मानोगे तो पीछे पछताओगे। जो समझ के काम करते हैं वे पीछे नहीं पछताते।

मैत्रावरुणि—तुम बड़े ऊँचे कुल में जन्मे हो अपने कुल का ध्यान कर सुराह सीखो।

बेणु—ये बन के जीव हमें सुराह सिखलाने आये हैं (हँस कर) चौदहो विद्यानिधान हमें भला क्या कोई सिखावेगा। अस्तु हम तुम्हारा अपराध क्षमा करते हैं। किन्तु अब ऐसी धृष्टता आगे से न करना चेत रक्खो। नहीं जानते राजा का बड़ा ऊँचा दरजा है। हमी ईश्वर हैं प्रत्यक्ष को छोड़ परोक्ष पर दौड़ प्रजा को तुम्ही लोगों ने बिगाड़ रक्खा है लोकायत न हो लोग अदृष्ट पर दौड़ रहे हैं। बस बहुत हो गया चले जाओ नहीं गरदनिया दै निकलवा देंगे।

ऋषि समूह—(क्रोध से) अरे यह कुलपांसन कुलकुठार कुलांगार बड़ा दुष्ट है। इसका जीवित रहना बड़ा हानिकारक होगा इसे शीघ्र नष्ट करो (मारण के मंत्र पढ़ कमण्डल का जल कुश से बेणु पर छिड़कते हैं)

दुष्ट दलन पापी दल खण्ड हुं फट।
डाकिन, शाकिन, भूतिन, प्रेतिन आओ आओ आओ झट॥
दुष्टदलन पापी दल खण्डन हुं फट।
मारो २ काटो २ कूटो २ पीटो २ चटपट॥
दुष्ट दलन पापी दल खण्डन हुं फट।
जो हों ऐसे जन दुखदायी निरे निकम्मे भट खट॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्टदलन पापी दल खण्डन हुं फट ।
अत्याचारी पीड़ाकारी चंचलचित्त जिमि मरकट ॥
दुष्टदलन पापी दल खण्डन हुं फट ।
तिनका तुर्तहि करौ विनाशन रहै न कोई खट पट ॥
दुष्टदलन पापी दल खण्डन हुं फट ।
(वेणु शक्तिहीन हो सिंहासन से नीचे गिर गतप्राण हो जाता है। चारों ओर भीषण हाहाकार छा जाता है) (परदा गिरता है) शेष ।

जाया स्तोत्र
(लक्ष्मी से)

अस्य श्री जाया स्तोत्र मंत्रस्य अरुषं ऋषि रनुष्टुप् छन्दः
हुं बीजं हं शक्तिः श्री जाया प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम्

रक्तनेत्रां सदाक्रूरां क्रोधप्रस्फुरिताधराम् ।
नित्यं कलह सन्तुष्टां जायां ध्यायेत् कृताञ्जलिम् ॥

पतिरुवाच

परुषा परी वज्र वाक्या कलहा कलह प्रिया ।
नमस्ते त्वां महा चण्डीं बकवादरता सदा ॥१॥
कूकरी पूर्व जन्मा त्वं सर्वदा भूकनेरता ।
मानुषी जन्म धारेपि पूर्वाभ्यासं न मुंचति ॥२॥
कटही कटुवाक्या च व्यंग वाक्य प्रपूरिता ।
चिड़िचिड़ी चण्डिका ख्याता त्वां नमामि दिवानिशम् ॥३॥
नित्य मुद्विग्न चित्तासि शांति याहिक्षणैकतु ।
मस्तिष्क चोषणेमालं क्षमध्वं चण्डिकेऽधुना ॥४॥
प्रात रुत्थाय प्रत्यह्नि क्रूर शब्दान् प्रवर्षिणीम् ।
निरन्तरं नमस्यामि प्रसन्ना भव डाकिनी ॥५॥
पंचश्लोकात्मकं स्तोत्र मिदं यः प्रयतः पठेत् ।
अति दुष्टापि जायास्यप्रसीदति न संशयः ॥६॥
इति कश्चित् पतिप्रणीतं जायापंचकं नाम स्तोत्रम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशीस्थ पण्डित रहस्य

दरभङ्गा नरेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह की विधवा महारानी ने यहां ५०० पण्डितों को १५) एक २ पण्डितों को बांटा। ख़बर है एक २ पण्डित चार २ आदमियों का नाम लिखाय एक आप, दो या तीन पण्डितों के स्थान में घर के किसी भृत्य को पण्डित बनाय दक्षिणा रुपये ले आये। इन पण्डितों में अधिकतर मैथिल थे। महारानी स्त्री ही ठहरीं पण्डितों के इस रहस्य को क्या जान सकती हैं। उनके कामदार कैसे निरे गोबर हैं कि इस अन्याय को न पहचान सके। हमारे पण्डितों पर जो दिन २ लोगों की अश्रद्धा बढ़ती जाती है उसका यही कारण है कि इनके काम ऐसे निकृष्ट होते जाते हैं कि एक महामति मन्द भी ऐसा न करेगा। विद्वानों का सत्कार कभी निन्दनीय नहीं कहा जायगा पर वह सत्कार जो विवेकपूर्ण हो। बहुधा इन बड़े दानियों को अपने औदार्य की उमंग में विवेक का अभाव देखा जाता है और इसी अपात्रे पात्रता बुद्धि के कुपरिणाम से शुद्ध सत्य धर्म पर आघात पहुंचा रहा है। यह कुपात्र के दान का फल है कि देश में दरिद्रता टांग अड़ाये हुए है और आलसी आवारा निकम्मों का दल बढ़ता जाता है। जितना अधिक दान यहां होता है उतना किसी देश या जाति में नहीं किन्तु वह इतना बेतुका सा होता है कि उससे देश का कोई उपकार साधन नहीं पाया जाता वरन उलटे उससे देश की सब तरह पर हानि हो रही है बहुधा लोग तीर्थ में जाय कुपात्रों को दान देने ही में तीर्थ यात्रा की सफलता मानते हैं पर ऋषियों ने तीर्थ यात्रा का फल यों लिखा है—

तीर्थ फल

यस्य पादौ च हस्तौ च मनश्चैव सुसंयतम् ।
विद्यातपश्च कीर्तिश्च तीर्थ फलमश्नुते ।

जो अपने हाथ पांव तथा मन को रोके है अर्थात् जो हाथ से किसी का धन नहीं चुराता, मन को बुराई की ओर नहीं आने देता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या पढ़े है, तप अर्थात् दमनशील है जिसकी संसार में कीर्त्ति सब ओर फैली है वही तीर्थ यात्रा का फल पाता है।

प्रतिग्रहादुपावृत्तः सन्तुष्टो येन केनचित्।
अहंकार विमुक्तश्च स तीर्थ फलमश्नुते॥

जो दान नहीं लेता अपने परिश्रम से जो कुछ मिले उसी में जिसे सन्तोष है, जो अहंकारी नहीं है वही तीर्थ का फल पाता है।

अक्रोपनो ऽमलमतिः सत्यवादी दृढ़व्रतः।
आत्मोपमश्च भूतेषु स तीर्थफलमश्नुते॥

जिसे क्रोध नहीं आता जिसकी बुद्धि में कपट भाव नहीं है सत्य बोलता है अपने निश्चय का दृढ़ है जीवमात्र को अपने समान मानता है वही तीर्थ का फल पाता है।

अदांभिको श्रद्धधानः लघ्वाहारो जितेन्द्रियः।
विमुक्तो दुष्टसंगैर्यः स तीर्थफलमश्नुते॥

और भी जो मक्कार अर्थात् ऊपर से देखाने मात्र को जो धर्माचरण नहीं करता है, ईश्वर में जिसे श्रद्धा बुद्धि है नास्तिक नहीं है, पेटू नहीं है, इन्द्रियों को जीते हैं, बुरी सोहबत से अलग है, वही तीर्थ का फल पाता है। और भीः—

सत्यं तीर्थं दया तीर्थं तीर्थ मिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूतदया तीर्थं सर्वत्रार्जवमेवच॥

दानं तीर्थं दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थ मुच्यते।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थंच प्रियवादिता॥

ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्यं तीर्थ मुदाहृतम्।
तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा व्यवहार तीर्थ है, किसी को दुखी देख मन में दया आ जाना तीर्थ है, इन्द्रियों को अपने बश में रखना तीर्थ है, सब बात में अकुटिल भाव का होना तीर्थ है, देश की भलाई के काम में चन्दा देना तीर्थ है, दमन (Controll) तीर्थ है, सन्तोष तीर्थ है (हम लोग इस तीर्थ की सेवा करना खूब जानते हैं आधे पेट खाने को मिले तो उसी में सन्तुष्ट हैं) ब्रह्मचर्य्य तीर्थ है, (दुधमुहों को व्याहने के शौकीनों की करतूत से इस सर्वोत्तम तीर्थ का जड़ पेड़ से मटियामेट हो गया) सब से प्रिय बचन बोलना तीर्थ है, ज्ञान तीर्थ है, धैर्य्य तीर्थ है, भलाई का काम तीर्थ है, सब से बड़ा तीर्थ चित्त की शुद्धि है । कहा भी है—"शुचि मनो यद्यस्तितीर्थेन किम्"। तीर्थों को गिनाने में हम क़लम की कारीगरी दिखलाने से न चूके पर हमारे पुराने ख़याल वाले लकीर फ़कीर कब मानते हैं ।

नये नवरत्न

बङ्गाल के नवरत्न जो हाल में निर्वासन से मुक्त हुये हैं ख़राद पर चढ़े मणि सदृश अब खूब चमकेंगे । "नहि सुखं दुःखैर्विना लभ्यते" । पहिले बिना दुख उठाये सुख नहीं मिलता। यह निर्वासन मानों उनके लिये ख़राद थी । दूसरे यह कि अब सचेत हो देश के काम में लगेंगे ऐसे मार्ग का अनुसरण बरकावेंगे जिसमें कर्मचारियों के आंख का कांटा बनैं । उचित भी ऐसा ही है जल में रह जलचर से विरोध कौन सी नीति है । यों तो अपने पैरों खड़े होने के लिये लोगों को चिताना कुछ न कुछ खटक पैदा करेही गा पर उतने से ऐसी हानि नहीं है जितना निर्वासित रहने या जेल में पड़े २ सड़ने से है। अस्तु ये नवरत्न देश के कल्याण साधन में नित्य २ चमकते जायँगे और बङ्ग देश की श्री वृद्धि में दत्तचित्त रह सर्वसाधारण में प्रतिष्ठा पावेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत गंधी के कारावास की कहानी

(गताङ्क से आगे)

बीमारी

बड़े ही आश्चर्य की बात होती यदि हम १५० क़ैदियों में से कोई भी बीमार न पड़ता। बीमार पड़ने वालों में सब से पहला नम्बर श्रीयुत समुन्द्र ख़ाँ का था। जेल में आने के समय भी वे रोगी ही थे। जेल में आने के दूसरे ही दिन उन्हें हस्पताल की शरण लेनी पड़ी। श्रीयुत कड़वा को गठिया की बीमारी थी। कुछ दिनों वे जेल की कोठरी ही में पड़े रहे और वहां पर ही डाक्टर से दवा लेते रहे परन्तु अन्त में उन्हें भी हस्पताल ही जाना पड़ा। दो और मनुष्यों को मूर्च्छा के रोग से पीड़ित हो हस्पताल जाना पड़ा। मूर्च्छा रोग के पधारने का कारण यही था कि गरमी बहुत पड़ती थी और हम लोगों को दिन भर धूप में रहना पड़ता था इसी से बार बार मूर्च्छा आ जाया करती थी। हमने मूर्च्छित मनुष्यों की भरसक सेवा शुश्रूषा की। श्रीयुत नवाब ख़ां भी बीमार पड़े। उनकी ऐसी हीन अवस्था हो गई थी कि जेल से छूटने के दिन उन को हाथ पकड़ कर ले जाना पड़ा। डाक्टर की आज्ञा हो जाने पर उन्हें दूध आदि दिया जाने लगा तब उनकी दशा कुछ सुधर गई। साधारणतः यह कहा जा सकता है कि सब मिला कर निषक्रियप्रतिरोधकों का (हमारा) स्वास्थ्य अच्छा ही रहा।

स्थान की तङ्गी

मैं कह चुका हूं कि केवल ५१ क़ैदी हमारी कोठरी में रह सकते थे और इतने ही आदमी खुले हुए स्थान (Area) में भी गुज़र कर सकते थे। परन्तु यहां तो ५१ की जगह पर १५१ थे। निदान बड़ा ही कष्ट भोगना पड़ा। गवर्नर महाशय ने बाहर तम्बू तनवा दिये और बहुतों को इन तम्बुओं की शरण लेनी पड़ी। क़ैद के पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों में हम में से लगभग १०० मनुष्यों को रात को बाहर सोना पड़ता था और प्रातःकाल फिर भीतर चला आना पड़ता था। खुला हुआ स्थान भी मनुष्यों की इस संख्या के लिये बड़ा संकीर्ण था और हमारा समय इस संकीर्ण क्षेत्र में बड़ी ही कठिनता से व्यतीत होता था। हमारी हर स्थान पर थूकने की बुरी आदत हमारी इस विपत्ति की वृद्धि का कारण हुई। इस गन्दी आदत के कारण हमारा स्थान गन्दा हो गया और ऐसा हो जाने से रोग फैलने का भय उत्पन्न हुआ। ईश्वर की कृपा से हमारे साथी सदोपदेश को मान लेते थे और इस लिये स्थान को स्वच्छ रखने में उनसे हमें सहायता मिली। उक्त स्थान और पायख़ानों की स्वच्छता पर बड़ी तीव्र दृष्टि रखी जाती थी और इसी कारण किसी रोग को वहां पधारने का कष्ट न उठाना पड़ा। प्रत्येक मनुष्य इस बात को स्वीकार कर लेगा कि इतने मनुष्यों को इतने संकीर्ण स्थान में रखने का दोष गवर्नमेण्ट ही पर है। यदि स्थान की तङ्गी थी, तो गवर्नमेण्ट को इतने मनुष्य वहां न भेजना चाहिये था। यदि निष्क्रियप्रतिरोध का संग्राम इसी प्रकार चलता रहता तो गवर्नमेण्ट कदापि और क़ैदियों को इस जेल में न भेज सकती।

पठन पाठन

मैं पहले कह चुका हूं कि गवर्नर महाशय ने हम लोगों को मेज़, क़लम, दवात इत्यादि के प्रयोग करने की आज्ञा दे दी थी। जेल के पुस्तकालय में भी हम बे रोक टोक जा सकते थे। वहां से मुझे कारलाईल रचित पुस्तकें और बाइबिल मिल गई थीं। एक चीनी भाष्यकार वहां आया करता था, उससे मैंने अङ्गरेज़ी भाषा में अनुवादित कुरान-शरीफ़, हक्सले की वक्तृताएं, कारलाईल लिखित बर्न्स, जांसन तथा स्काट के जीवन-चरित्र और बेकन के एसेज़ (Essays) कुछ दिनों के लिये मांग लिये थे। मेरे पास मेरी अपनी पुस्तकों में मणि लाल नाथू भाई की टीका की हुई भगवद्गीता, कुछ तामील भाषा की पुस्तकें, मौलवी साहब की एक उर्दू की पुस्तक, और टालसटाय, रस्क़िन, तथा सुक़रात के ग्रन्थ थे। इन पुस्तकों में से बहुतों को मैंने एक बार और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुतों को कई २ बार जेल में पढ़ डाला। तामील भाषा की पुस्तकों को मैं प्रतिदिन पढ़ता था। प्रातःकाल गीता पढ़ता था और दो पहर को प्रायः कुरान। सन्ध्या को मैं मिस्टर फ़ोरटून को बाइबिल पढ़ाया करता था। यह महाशय चीनी ईसाई थे। वे अङ्गरेज़ी पढ़ना चाहते थे और मैं उन्हें बाइबिल द्वारा अङ्गरेज़ी भाषा पढ़ाता था। यदि मैं अपना समस्त समय लगा पाता तो मैं कारलाईल और रसकिन की एक एक पुस्तक का अनुवाद कर डालता। मुझे विश्वास है कि उपरोक्त पुस्तकों के अध्ययन में लगे रहने के कारण यदि मुझे दो मास से अधिक का दण्ड भी मिलता तो भी मैं न घबड़ाता, इतना ही नहीं वरन् मेरे ज्ञान तथा स्वाध्याय का भाण्डार बहुत बढ़ जाता। मेरा विश्वास है कि वह मनुष्य जिसे अच्छी पुस्तकें पढ़ने का शौक़ है चाहे कहीं भी हो एकांतवास के कष्ट को सहज ही सहन कर सकता है। इसी कारण मैं अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत कर सकता था।

मेरे सिवाय मेरे अन्य साथी जिनको पढ़ने का शौक़ था श्रीयुत पिल्ले, श्रीयुत नायडू और चीनी क़ैदी थे। श्रीयुत नायडू ने गुजराती भाषा पढ़ना आरम्भ कर दिया था। कारावास के दिनों के अन्त में गुजराती भाषा के संगीत की कई पुस्तकें आ गई थीं कई मनुष्यों ने उनका प्रयोग करना आरम्भ कर दिया था। परन्तु मैं इसे किसी प्रकार का भी अध्ययन नहीं समझता।

व्यायाम

जेल में दिन भर पढ़ने ही में लगे रहने की आज्ञा न थी। मैं समझता हूं कि यदि आज्ञा होती भी तो वह हमारे स्वास्थ को हानिकारक सिद्ध होती। बड़ी कठिनता से मैं ने वार्डर (Warder) से जेमनास्टिक्स (कसरत) सीखने के लिये गवर्नर की आज्ञा प्राप्त की। वार्डर महाशय बड़े अच्छे आदमी थे वे प्रातःकाल और सन्ध्या को हम लोगों से ड्रिल (क़वायद) कराते थे। यह ड्रिल हमारे स्वास्थ्य के लिये बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई और यदि अधिक समय तक हम ड्रिल करते रहते तो हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष लाभ पहुंचता। परन्तु क़ैदियों की संख्या बढ़ जाने के कारण वार्डर का काम भी बढ़ गया। इधर स्थान की तङ्गी हो गई। अन्त में ड्रिल बन्द ही करना पड़ा परन्तु श्रीयुत नवाब ख़ां के साथ होने के कारण हम लोगों ने स्वयम् ड्रिल करने की हठ की।

गवर्नर महाशय की आज्ञा से हम लोगों ने सीने की मशीनों का काम भी अपने हाथ में ले लिया था। इन मशीनों द्वारा हम क़ैदियों के थैले बनाना सीखने लगे। श्रीयुत टी० नायडू और मिस्टर ईस्टन ने इस काम को शीघ्र ही सीख लिया परन्तु मुझे अधिक समय लगा। इस काम को अच्छी तरह सीखने के पहिले ही हमारी जन संख्या बढ़ने लगी। अंत में मुझे यह काम छोड़ना पड़ा।

इस से यह सिद्ध होता है कि जहां प्रबल इच्छा है तहां मार्ग भी निकल ही आता है। यदि कोई क़ैदी काम करने ही में लगा रहे और एक काम के समाप्त होने पर दूसरे को हथिया ले तो उसका कठिनता से कटने वाला समय सहज ही में व्यतीत हो जायगा यही नहीं वरन् जेल से छुटकारा पाने पर उसे अपनी योग्यता तथा ज्ञान बढ़ा हुआ प्रतीत होगा। जेल में कई अच्छे आदमियों ने बड़े२ काम कर डाले हैं। उदाहरण के लिये जान बनयन ने अपनी जगत्प्रसिद्ध पुस्तक The Pilgrims Progress को जेल में ही लिखा और लोक-मान्य तिलक ने Orion को जेल ही में रचा। इस लिये जेल में अथवा बाहर सुखी वा दुखी रहना विशेष कर हमारे ही हाथों में होता है।

बाहर के सज्जनों का आना

कुछ अंगरेज़ हम लोगों को देखने आया करते थे। नियम यह है कि एक मास के भीतर क़ैदी से कोई नहीं मिल सकता। इसके पीछे एक मनुष्य प्रत्येक मास के एक रविवार को क़ैदी से भेंट कर सकता है। इस नियम का उल्लंघन भी किसी २ सूरत में हो सकता है। मिस्टर फ़िलिप्स ने इस बात (उल्लंघन) से लाभ उठाया। उनको आज्ञा मिल गई और वे हमारे कारावास के दूसरे ही दिन चीनी ईसाई मिस्टर फ़ौरटून से भेंट करने आये। उस समय वे हम से भी मिले। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें अनेक वाक्यों से उत्साहित किया और हमारे लिये ईश्वर से प्रार्थना की। वे हम से तीन बार मिले और दूसरे पादड़ी मिस्टर डेविस भी हमसे इतने ही बार मिले।

मिस्टर पोलक और मिस्टर कोहेन भी विशेष आज्ञा ले कर हम से मिलने आये। इनकी भेंट कारबार के विषय में कुछ बात चीत करने के लिये थी। भेंट करने वालों के साथ पहरेदार रहते हैं और क़ैदी से बात चीत उन्हीं के सामने होती है।

ट्रांसवाल-लीडर (Transval Leader) के सम्पादक मिस्टर कार्टराईट विशेष आज्ञा (Special permission) मांग कर हम लोगों से तीन बार मिले। वे हम से कुछ क़ानूनी मामलों (Settlement) पर बात चीत करने आया करते थे इस लिये उनके वार्तालाप के समय हम पहरेदार की निगहबानी से मुक्त रखे जाते। प्रथम बार उनका आना इस बात के पूछने के लिये हुआ कि ऐसे समय में भारतवासियों को क्या करना चाहिये। द्वितीय बार वे एक मसौदा (Draft) ले कर आये थे। यह मसौदा उनका और अन्य अङ्गरेज़ों का बनाया हुआ था। उस मसौदे का संशोधन कर मिस्टर कोईन, श्रीयुत नायडू और मैंने उस पर हस्ताक्षर कर दिये। इस मसौदे और हमारे हस्ताक्षरों की चर्चा दूसरे स्थान पर की गई है इस लिये मैं इस विषय में और कुछ कहना आवश्यक नहीं समझता।

चीफ़ मैजिस्ट्रेट मिस्टर प्लेफ़ोर्ड भी एक बार पधारे थे। उनको जेल देखने का सरकारी तौर से अधिकार है इस लिये हम यह नहीं कह सकते कि वे हमारे ही देखने के लिये गये थे। परन्तु हमें यह बतलाया गया कि हम सबके जेल में होने के कारण ही उन्होंने जेल देखने का समय निकाला था।

धार्मिक शिक्षा

पाश्चात्य देशों में राज्य की ओर से सब क़ैदियों के धर्म कर्म का बड़ा विचार रखा जाता है और यही कारण है कि जोन्सबर्ग के जेल में क़ैदियों के लिये एक गिर्जाघर बना हुआ है परन्तु यह गिर्जा केवल गोरों की ही आवश्यकता पूरी करता है क्योंकि इस में दूसरों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश नहीं हो सकता। मैंने मिस्टर फ़ोर्टून के और अपने लिये विशेष आज्ञा चाही परन्तु गवर्नर महाशय ने जवाब दिया कि यह गिर्जा केवल श्वेतांग ईसाइयों ही के लिये है। प्रति रविवार को गिर्जा घर में श्वेतांग क़ैदी जाते हैं और विविध ईसाइ मतों के उपदेशक उन्हें धर्मोपदेश करने को वहां पहुंचते हैं।

विशेष आज्ञा लेकर कितने ही मिशनरी लोग काफ़िरों को ईसाई करने के लिये जल में जाते हैं काफ़िरों के लिये कोई गिर्जा नहीं है। लोग खुले मैदान में बैठते हैं। हिन्दू और मुसलमानों को इस विषय में कोरा रहना पड़ता है। निस्सन्देह भारतीय क़ैदी बहुत ही थोड़े हैं परन्तु इस पर भी उनकी धार्मिक क्रियाओं के सम्पादित होने में असुविधा हो अच्छा दीख पड़ता है दोनों जातियों के नेताओं को पूरा २ प्रयत्न कर अपने २ धर्मानुयाइयों की धार्मिक क्रियाओं के सम्पादन का जेल में सुप्रबन्ध करना चाहिये चाहे उनके धर्म का अनुयायी एक ही क़ैदी क्यों न हो। उपदेशक चाहे हिन्दू हों अथवा मौलवी-पवित्र हृदय के होने चाहियें और उन्हें इस बात का विशेष विचार रखना होगा कि वे क़ैदियों को किसी प्रकार कष्ट-दायक सिद्ध न हों।

उपसंहार

जो बातें जानने योग्य थी वे ऊपर वर्णन की जा चुकी है। भारतवासियों की गणना काफ़िरों के साथ होती है यही बात विशेष विचारणीय है। प्रत्येक श्वेतांग क़ैदी को तो एक चारपाई दांत साफ़ करने का ब्रश, मुंह हाथ साफ़ करने को तौलिया और रुमाल इत्यादिक मिलते हैं परन्तु बेचारे भारतवासी को कुछ भी नहीं मिलता। न जाने यह अन्तर क्यों हैं ?

यह कभी न सोचना चाहिये कि इन बातों में हमारा दख़ल देना उचित नहीं है छोटी २ बातों ही से हमारी जाति का सम्मान बढ़ता अथवा घटता है। एक अर्बी की पुस्तक में लिखा है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मसम्मान को धीरे २ बढ़ाते हुए ही संसार के राष्ट्रों ने अपना महत्व बढ़ा लिया है। आत्म-सम्मान से निरा गर्व अथवा उद्दण्डता का मतलब नहीं है वरन् इस शब्द से हृदय की उन भावों का अनुमान करना चाहिये जिनके कारण केवल भय अथवा आलस्य में फंस मनुष्य अपने स्वत्वों को त्यागना स्वीकार नहीं कर सकता। परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास करने वाला मनुष्य ही आत्म-सम्मान प्राप्त कर सकता है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि वह मनुष्य जिसको ईश्वर पर विश्वास नहीं कभी सत्य को नहीं पहिचान सकता और न वह इसी बात को ही जान सकता है कि सत्य के मार्ग पर किस प्रकार दृढ़ रहा जा सकता है। क्रमशः

भक्ति की भावना

मनुष्य में चरित्रग्रथन के लिये भक्ति महोपकारी है। जब तक भक्ति का अंकुर चित्त में न होगा तब तक किसी बात के लिये ललक या उमंग कभी उपजे ही गी नहीं। दूसरे यह कि भक्ति का अंकुर उसी के जी में जमता है जिसमें कुटिलता का लगाव नाम को भी नहीं है। जो जितना सीधा सादा और भोला है उतना ही अधिक उसमें भक्ति का उद्गार भरा होगा। ज्ञान तो सर्वदा भक्ति का बिघातक है ही है किसी २ अंश में वैराग्य भी भक्ति को भ्रष्ट कर देता है। इन पिछली शताब्दियों में महाप्रभु कृष्णचैतन्य, सूर और तुलसी सरीखे भक्त जन न हुये होते तो अहं ब्रह्मास्मि वाले वैराग्य और रूखे ज्ञान ने कटैले पेड़ों का बीज बो भारत की उर्वरा भूमि में प्रेम और भक्ति का बीज मार दिया होता। करतूत में नहीं वरन् कहने मात्र को संसार अनित्य और नाशवान मान लेने की धुन ऐसी लोगों पर सवार हो गई थी कि प्रवृत्ति गई रही रूखे ज्ञानी का चित्त कभी अश्रुपात गद्गद हो होगा नहीं बल्कि अश्रुपात हो गया तो मानों उसे पूर्ण बोध हुआ नहीं ममता समता में फसा हुआ है। वही भावुक को भक्ति के रसास्वाद में प्रतिक्षण अश्रुपात सच्ची भक्ति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिली सीढ़ी है । छाती में प्रेमपुष्प को प्रस्फुटित होने का अवसर ही नहीं मिला तब उसकी मीठी महक को गहर २ करने के लिये सहानुभूति के रूप में उसका परिणत होना कहां रहा और सहानुभूति ही के तकिये के सहारे ऐकमत्य टिक रहता है । ऐकमत्य जातीयता का प्रथम विकाश है और बिना जातीयता के राष्ट्रीयता कहां । जहां राष्ट्रीयता मुल्की जोश या निज जन्मभूमि वात्सल्य है वहां का कहना ही क्या ? "रमन्तेतत्र सम्पदः" अपने पैरों खड़े होना साहस अध्यवसाय उद्यम शिल्प वाणिज्य व्यवसाय विज्ञान आदि सब उसी के Out come शाख़ दर शाख़ हैं ।

अब हमारे पढ़ने वाले समझ गये होंगे कि भक्ति से चरित्र ग्रथन कैसे होता है या यह चरित्र ग्रथन की क्योंकर सहकारी है । इसी से हम कहते हैं कि भक्ति का दरजा ज्ञान से बढ़ा है और इसे पहिले के एक नम्बर में सिद्ध कर चुके हैं । अपने स्वामी की सेवा में निरत या अपने उद्देश्यों को पूरा करने में एकाग्र भक्तजन मुक्ति को कुछ माल नहीं गिनते । मुक्ति मुच् धातु से बना है जिसके अर्थ छुटने या छुटकारा पाने के हैं । संसार के सब पचड़ों से छुटकारा पाजाने के लिये हमारे यहां के लोग मुक्ति के पीछे धावा मार दौड़ने लगे पर छुटकारा पाना कैसा पराधीन और वासनाकिंकर बन गये । न इत के भये न उत के । मुक्ति तथा ब्रह्म की प्राप्ति या आत्मा का साक्षात्कार तो दूर रहा विषय वासना के गुलाम अलबत्ता हो गये । कुछ समझ में नहीं आता कि मुक्ति पिशाची में क्या रक्खा है जिसके पीछे पड़ लोग भक्ति को फीका कर बैठे । उसी भक्ति की भावना वाले अपना सर्वस्व सेव्य प्रभु के समर्पण कर सब भांत अपने को प्रभु की मरज़ी या इच्छा पर छोड़ मुक्ति से भी विरत न हुये और परकाल के बनने में तो कोई सन्देह ही न रहा । इसी से कहा गया है:—

"भोजनाच्छादने चिन्ता वृथा कुर्वन्ति भावुकाः-
यो सौ विश्वम्भरो देवो स भक्तान् किमुपेक्षते"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् भावुक जनको भोजनाच्छादन की चिन्ता व्यर्थ है। जो विश्वम्भर देव है और विश्व भर का पालन पोषण कर रहा है सो क्या निज भक्तों की उपेक्षा कर देगा। ज्ञान केवल पदार्थ की अभिव्यक्ति मात्र करा देता है तुम जान सकते हो कि यह इस रूप रंग और ढांचे का है किन्तु वहां तक पहुंचना या उसकी प्राप्ति तभी होगी जब उसके लिये ललक-या भक्ति होगी। सच तो यह है कि ज्ञान और वैराग्य में भी भक्ति ही बड़ा साधन है। वह ज्ञानी और विरक्त किस काम का जिसे भक्ति भाव न हुआ। शुष्क ज्ञानी तो कुतर्क करते २ अन्त में नास्तिक हो जायगा। या उसके कुतर्क का अन्त तभी होगा जब उसकी पैनी बुद्धि गोठिल पड़ कहीं पर जा रुक कर विश्राम लेगी उसी का नाम विश्वास होगा जो भक्ति का एक अंग है। भक्ति के लिये चित्त का अकुटिल सरल भाव आवश्यक है इसी कारण पिछली शताब्दियों में विशेष भक्ति का प्रचार हो गया। मीरा, मलूक, नरसी, नामदेव आदि प्रसिद्ध २ भक्ताग्रगण्य उसी समय हुए और इन महापुरुषों के हृदय का कपाट खुल गया था जिन्हें परमात्मा परमप्रभु का साक्षात्कार भी हुआ किन्तु अब इस समय शिक्षा का अधिक प्रचार होने से चित्त का वह सरल अकुटिल भाव हम से कोसों दूर हट गया। उन महात्माओं की गद्दी पुजाने वालों में अब केवल आडम्बर और दंभ मात्र रह गया जिससे साधारण प्रजा का बहुत सा धन तथा राजा महाराजा और धनी पात्रों के द्रव्य का असद् व्यय हो रहा है। टट्टी की आड़ में शिकार की भांति धूर्त्त और लम्पट महन्त या मन्दिरों तथा तीर्थस्थानों के अधिष्ठाता बन मनमाना भोगविलास में गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। इसी बात को देख स्वामी दयानन्द ने उन सबों का खण्डन कर आर्य समाज खड़ा किया जिस में वह असद् व्यय रुक कर विद्या वृद्धि आदि सत् प्रवृत्ति में लगै किन्तु स्वामी जी ने उन भक्त महापुरुषों के सरल अकुटिल भावको सर्वथा उपेक्षित कर दिया। परिणाम में अब उनके अनुयायी आर्य समाजी शुष्क कुतर्की होते हैं भक्ति का कहीं उनमें लेश भी नहीं रहता। जिसमें प्रेम और भक्ति का अंकुर अंकुरित नहीं हुआ उस नीरस कट्ठर से भलाई की आशा करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही भूल है। अन्त को हमारे लेख का उद्देश्य कि भक्ति चरित्र ग्रथन का सहकारी है सिद्ध हुआ। चरित्र ग्रथन का अङ्ग जो पूर्ण होता तो आर्य समाजियों से लोगों को दुःख न पहुंचता, न ये अपने मत के इतने कट्टर होते जिससे इस समय आपस में सहानुभूति के बदले विरोध दिन दिन बढ़ता जाता है और यह हमारी राष्ट्रीयता को बड़ा हानिकारक है। मान लो हमारे पुराने कम वाले हिन्दुओं में अनेक दोष हैं किन्तु चित्त उनका आर्य समाजियों की तरह कुटिल नहीं है अपने विश्वास के बड़े पक्के हैं और विश्वास ही सन्दल की ज़मीन सदृश है जिस पर भक्ति का खुशबूदार इत्र उतर सकता है। हिन्दुओं के दल में भी ऐसे लोग हैं जो अपने दल में क्या क्या बुराइयां है सो न समझते हों किन्तु उन बुराइयों को Tolerate सहन करते हुये भी भीतर से उनकी भलाई और सुधार की इच्छा रखते हैं और काम पड़ने पर लोगों को समझाते हैं, जहां तक होता है उन्हें सीधे रास्ते पर लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। जन्म भर का कोढ़ एक बार की दवा से नहीं दूर होता वरन् धीरे धीरे उसका इलाज किया जाता है। समाजियों की तरह तलवार हाथ में लिये गरदन काटने को तैयार नहीं हो जाते। दूसरी बात यहां पर और भी कहना ही पड़ता है कि चरित्र ग्रथन का लगाव बहुधा अधिकतर उन में होता है जो श्रेष्ठ कुल या उत्तम वर्ण के हैं। समाज में विशेष वही हैं जो वर्ण विभाग में ऊँचे हुआ चाहते हैं इसी से उनके यहां वर्ण की प्रथा कर्मप्रधान मानी गई है। जन्म से नहीं और हम लोग जन्म तथा कर्म दोनों को लेकर चला चाहते हैं। बल्कि जन्म पर ज़ियादह ज़ोर देते हैं कर्म की प्रधानता कम मानते हैं और इस प्रयत्न में हैं कि जन्म के अनुसार लोगों में गुण कर्म आजांय। देखें हम लोग कहां तक और कितने दिनों में इसमें कृतकार्य होते हैं, पर यह सब "टालरेशन" के साथ किया चाहते हैं, समाजियों की तरह लोगों को चिढ़ाके और उन्हें अपना विरोधी बना के नहीं। भक्ति के भावुक ये नहीं हैं इसीसे यह अनुचित आचरण हो जाता है। खेद है कि समाज देश के बड़े उपकार की होती यदि ये हिन्दुओं से द्वेष बुद्धि छोड़ उन्हें मिलाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की दृष्टि रखती । और यह सब तभी मनुष्य में आ सकता है जब भक्तिभाव की सरलता स्थान पाये हो । सात्विकी, राजसी, तामसी और परा के भेद से भक्ति भी कई प्रकार की है जिसे हम फिर कहेंगे।

शिक्षा का प्रकाश

साधारण शिक्षा का प्रकाश मनोमुकुल का विकाश दोनों साथ ही साथ चलते हैं। योरोप के सभ्यातिसभ्य देश जो इस समय हर तरह की तरक्की के छोर तक पहुंच गये हैं शिक्षा ही का प्रभाव है। साधारण शिक्षा का ही बल है कि हिन्दोस्तान में जागृति का आरम्भ हो चला है। जैसा प्रभातकाल में जब अरुणोदय होने लगता है तब सूर्यदेव की किरणें निकल २ कमलों पर कुछ ऐसा असर पैदा कर देती हैं कि रात को कली में मुंद गया हुआ कमल आप से आप प्रस्फुटित होने लगता है वैसा ही शिक्षा का प्रकाश मनुष्य के मानसिक कमल की कली को विकशित कर देता है। तब उसको अपनी वर्तमान दशा का परिज्ञान होने लगता है अपने देश और जाति की भूत दशा का ख़याल जब उसके ध्यान में आता है और अपने आस पास की जातियों से अपने को मिलाता है तब चित्त में एक अद्भुत भाव पैदा हो जाता है कि हम क्यों ऐसा गिर गये हमारे गिर जाने के क्या २ कारण हुए और अब हम फिर कैसे अपने पूर्वजों के समान हों। योरोप के देशों में जो इस समय इतनी तरक़्क़ी हुई उसका यही कारण है कि एक तो वह देश शीत प्रधान है अधिकतर योरोप का उत्तरी भाग जहां के लोग परिश्रमी विशेष होते हैं दूसरे ५ ही सौ वर्ष से वहां सभ्यता का प्रचार है पहिले इसके लोग वहां के नितांत असभ्य जंगली थे उन पर आधुनिक विज्ञान और नूतन सभ्यता का रंग जल्द जम गया। हिन्दोस्तान ऐसे जर्जर पुराने देश में जो नूतन सभ्यता को स्थान नहीं मिलता उसका यही कारण है कि यह न जानिये कितनी चोट खा चुका कितनी अदल बदल और हेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्येत्वया यास्यति" का भावार्थ भारत ही की भूमि में सुघटित होता है। हिन्दू कट्टर "कंसरवेटिव" अपरिवर्तनशील अवश्य हैं पर जिसे वे भली भांति जांच लेते हैं वह उनकी जांच और परख में ठीक और पूरा उतर आया तो उसे वे स्वीकार भी वैसी ही दृढ़ता के साथ करते हैं जैसा उन्होंने और २ अपरिवर्त्तित सिद्धान्तों को ग्रहण किया था। योरोप जो इस समय तरक्की के छोर पर है वह केवल शिक्षा का प्रभाव है जिसके देने में कर्मचारी संकुचा रहे हैं और हर तरह की कड़ाई करते जाते हैं। जैसा साधारण शिक्षा का प्रवाह देश में इन पिछले ५० वर्ष में रहा वैसा ही बना रहै तो हमलोग नित्यमेव इस गिरी दशा से ऊपर को बराबर उठते जांय। यह ब्रिटिश जाति का सौभाग्य है कि उनके हाथ ऐसा देश लग गया जो इतना परिवर्त्तन विमुख और लकीर का फ़क़ीर है। परिवर्त्तन विमुखता को काटने का पैना औज़ार शिक्षा सो हमें जैसा चाहिये वैसा जी खोल कर दी नहीं जाती न हमारे यहां के श्रीमन्तों ही को उस की ओर इतनी अधिक रुचि है। जिस मन्द गति से साधारण शिक्षा का प्रवाह बह रहा है उतने से हम तरक्की के दौरान में और और उन्नतिशाली देशों के बराबर हो नहीं सकते गर्दखोरी हमारे लिये स्थिर कर ली गई है लाचारी है।

चन्द्रोदय

क्षपातमस्काण्ड का हटाने वाला यह चन्द्रमा ऐसा मालूम होता है मानो आकाश महासरोवर में श्वेत कमल खिल रहा है। उस में बीच २ जो कलंक की कालिमा है सो मानो भौंरे उस पर गूंज रहे हैं। अथवा सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी के स्नान की यह बावड़ी है या कामदेव की कामिनी रति का यह चूना पोता धवल गृह है। या देव नदी आकाश गंगा का पुण्डरीक है। चांदनी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत कुण्ड है अथवा आकाश में जो ये तारे देख पड़ते हैं वे सर्व गौएं हैं उनके झुण्ड में यह सफ़ेद बैल है या हीरे से जड़ा हुआ पूर्वदिगंगना का करणफूल है। काम के बाणों को चोखा करने के लिये सान धरने का सफ़ेद गोल पत्थर है या संध्या नायिका के खेलने का गेंद है। अपने उदय के पहिले सूर्यास्त की किरणों से सब ओर जो ललाई छागई सो मानों इस फागुन में दिगंगनाओं के साथ फाग खेलने में इसने अबीर उड़ाया था वही सब ओर अब तक आकाश में छाई है अथवा निशा योगिनी ने तारा प्रसून समूह से कामदेव की पूजा कर यावत् कामीजनों को अपने वश करने को छिटकी हुई चांदनी के बहाने वशीकरन बुक्का उड़ाया है अथवा स्वच्छ नीले जल से भरे आकाश हौदा में काल महागणक ने रात के नापने को एक घटी-यंत्र छोड़ रक्खा है या कालश्रोत्री ब्राह्मण के नित्य जपने का यह ओंकार महामन्त्र है या अन्धकार महागज के हटाने का यह अंकुश है या विरहिणियों के प्राण कतरने की कैंची है अथवा शृङ्गार रस से पूर्ण पिटारे के खोलने की कुंजी है। या तारा मौक्तिक का गुथा हार के बीच का यह सुमेर है अथवा जंगम जगत् मात्र को डसने वाले अनंग भुजंग के फन पर का यह चमकता हुआ मणि है। पीछे चाण्डीश शिव जी ने अपने चूड़ा का मणि उसी को कर डाला। कुईं की कलियों को विकाशित करने, मृगनयनियों के मान को समूल उन्मूलित करते, छिटकी हुई चांदनी से सब दिशाओं को धवलित करते, अन्धकार को निगलते, चन्द्रमा सीढ़ी दर सीढ़ी शिखर के समान् आकाश विशाल पर्वत के मध्य भाग में मानों चढ़ा चला आ रहा है। शिशिर और हेमन्त में हिम से जो इसकी द्युति दब जाती है सो मानों यह तपस्या कर रहा है जिसका फल यह चित्रा के संयोग से शोभित हो चैत्र की पूनो को पावेगा जब इसकी द्युति फिर दामिन सी दमकैगी इसी से कविकुल गुरू कालिदास ने लिखा है।

"हिमनिर्मुक्तयो र्योगे चित्राचन्द्रमसोरिव"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई सभ्यता की बानगी

मैं बहुत दिनों से फेर में पड़ा था कि सभ्यता किसे कहते हैं। कई एक डिक्शनिरियां उलट पुलट खूब छान बीन की पर कहीं इसका पता न लगा। सभ्य लोगों के व्याख्यान और स्पीचों की बड़ी झांक की वहां भी इसका सुराग़ न लगा। मन में आया किसी पण्डित या मौलवी से पूछें तो कदाचित् मेरा मतलब निकल आवे इसी सोच विचार में था अकस्मात् एक नई रोशनी वाले से भेंट हो गई। देर तक चुनाचुनी के उपरान्त मैं ने उनसे पूछा "भाई मुझे एक बात की शङ्का है हल कर दीजिये तो आपका बड़ा गुन मानें।" नई रोशनी वाले बाबू साहब बोले "तुम लोग बड़े बेवकूफ होते हो। आज मुझे फुरसत नहीं है किसी एतवार को आना तो बतला देंगे।" मैंने कहा "थोड़ी सी तो बात है आप ध्यान लगा के सुनो तो कहूं।" बाबू साहब बोले "तुम लोगों से बातें करना अपना अनमोल समय व्यर्थ गवाना है। खैर आज यही सही पर तुम मेरे साथ२ चले चलो तो शायद मैं तुमसे बात करता चलूं जिसमें मेरे वाकिङ्ग में ख़लल न पड़े"। गर्जमन्दा बावला मैंने सो भी मनजूर कर लिया। बाबू साहब आंधी सा भागने लगे मैं उनके पीछे पतङ्ग का पुछल्ला सा लगा हुआ हांफते २ पूछा कि "सभ्यता किसे कहते हैं?" उन्होंने कहा "तुम्हारा सवाल बड़ा पेचीदा है मेरे साथ चले आओ अपने बङ्गले पर पहुंच इसे हल करूंगा।" खैर ज्यों त्यों किसी तरह बंगले पर पहुंच बाबू साहब छोटी हाज़िरी के लिये डाइनिंग रूम मे घुस गये। मैं बाहर बरामदे में एक कुरसी पर जा बैठा। थोड़ी देर में रुमाल से मुंह पोंछते बाबू साहब बाहर निकले और थके थकाये टट्टू की तरह बरामदे में टहल टहल बोले "वेल! सभ्यता के बारे में आपने पूछा था इसके क्या ठीक माने हैं सो तो मैं नहीं बतला सकता पर जो उदाहरण मैं देता हूं उसी से समझ जाइये। "फ्रीडम" अर्थात स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर स्वतंत्र और निरपेक्ष बल्कि साहब और मेम दोनों की स्वतन्त्रता तराजू पर तौलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मेम साहबा की आज़ादी का पलरा झुका हो। एक उमदा नमूना सभ्यता का यह भी है कि मेम साहब एक दिन भी रंडापे का दुख न उठाने पावें। मियां इधर क़बर में पहुंचे बीबी साहबा के लिये दूसरा तैयार। दूसरे स्त्रियों को परदे मे रखना सभ्यता में बड़ा भारी धब्बा है। सभ्यता जब ज़ोर पकड़ती है तब पुरानी बात और पुराने ख़याल से घिन पैदा हो जाती है। जोश और तेज़ मिज़ाज़ी बे तरह तबियत में जगह कर लेती है। मनुष्य की विवेचना शक्ति Conscience) पर वह बारीक सान धर जाती है कि ईश्वर के अस्तित्व तक में उसे सन्देह होने लगता है और मज़हबी वसूल तो उस बारीक़ सान में कट फट सौ टुकड़े हो जाते हैं, और एक बात बड़ी गुप्त हम तुमसे बतलाये देते हैं उसे अपने मनही में रखना वह यह कि वाइन सब सभ्यता का सार है बिना जिसके सभ्यता कभी शोभा देही नहीं नहीं। सभ्यता क्या है उसे अधिक जानना चाहो तो मिसटरीज़ आफ् लण्डन और पेरिस पढ़ो। बाबू साहब और भी तीन चार किताबों का नाम अट सट गिना गये। सभ्यता की इन सब बातों को सुन मैं सन्नाटे में आ गया। पर मेरे चित्त को सन्तोष न हुआ ख़याल में आया किसी मौलवी से भी इसे पूछूं। शाम को एक मस्जिद के पास जा निकला और जो हज्ज किये हुये बड़े नमाज़ी आबिद मालूम हुये उनको जा घेरा और नम्रभाव से उनसे पूछा "मौलवी साहब! मैं आप को थोड़ी तकलीफ दिया चाहता हूं मुझको आप से कुछ पूछना है।" मौलवी साहब बोले "कहो क्या पूछते हो।" मैंने कहा "सभ्यता किसे कहते हैं?"

मौलवी साहब चकरा गये कहने लगे "मैं नहीं जानता तुम्हारी शैतानी काफ़िरों की ज़बान में यह क्या लफ़्ज़ है। मुझे समझाओ तो शायद तुम्हारा मतलब हल कर सकूं।" अब मुझे और भी कठिनाई आ पड़ी कि मैं उन्हें किस भांत समझाऊँ। थोड़ा सोच बोले "किसी जमात के दस्तूर या चलन को सभ्यता कहते हैं।" उन्होंने कहा "भाई! हम लोगों में तो यही दस्तूर है कि हिन्दू जो करते हों उसका उलटा और बरक्स करना, निहायत मैले और कसीफ़ रहना, नहाने धोने का कोई काम नहीं पर नमाज़ दिन में ... पीना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर मदक और चण्डू में कोई हर्ज नहीं, बेवा की शादी हमारे यहाँ मना नहीं है पर दूसरे की खूबसूरत बहू बेटी देख पड़े तो उसे छीन लेने में कोई हर्ज नहीं और इसके बारे में मालूम करना हो तो लखनऊ या दिल्ली चले जाइये।" इनकी बातें सुन मन में आया कि अब पण्डितों से पूछना चाहिये। काशी चला गया और मणिकर्णिका पर आ बैठा। एक पण्डित जी लम्बी धोती ढीले, सुंघनी का बेल हाथ में लिये, नङ्गे सिर, दुपट्टा कंधे पर धरे देख पड़े। मैं अति विनीत भाव से प्रणाम कर बोला "आज्ञा हो तो मुझे कुछ जिज्ञासा है पूछूं मैं प्रयाग से काशी का नाम सुन आया हूं।" पण्डित जी ने कहा "आप धन्य हो जो इतना श्रम उठाय यहां आये हो। कहिये आप का क्या प्रश्न है?" मैंने कहा पण्डित जी "सभ्यता किसे कहते हैं?" पण्डित जी सुंघनी सूंघ न जानिये कितने श्लोक पढ़ गये। मैंने कहा "महाराज! मुझे इतनी धारणाशक्ति नहीं है कि इन श्लोकों को याद कर सकूं मुझे थोड़े में समझा दीजिये।" पण्डित जी ने कहा "सभ्यता समाज के शुद्ध आचरण को कहते हैं और यह अत्यन्त गर्हित है जैसा अब के नवयुवक पशुओं के आचरण योग्य काम को सभ्यता समझे हुये हैं। सभ्य हमारे रघुकुल मुकुटमणि श्रीरामचन्द्र और धर्मराज युधिष्ठिर महाराज थे। युग बदल गया, ब्राह्मणों पर श्रद्धा लोगों को न रही, धर्म के विरोधी सब हो गये, घोर कलियुग आने वाला है।" पण्डित जी की ये बातें सुन मैं सोचने लगा तो क्या अब देश का देश असभ्य और अधम हो गया सभ्यता कहीं रही न गई। जिससे पूछो वह अपनी ही गीत गा गये। सभ्यता चलन बाज़ार है जिसमें छोटे बड़े सभी मथे हैं। इतना अवश्य कहेंगे सभ्यता निरी चूना पोती क़बर है जिन्हें लोग सभ्य कहते हैं उनके भीतरी आचरण देख घिन होती है। हमी अच्छे जो ऐसी घिनौनी सभ्यता के डांड़े नहीं गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखस्य दुःखस्य नकोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।

"सुख या दुःख का देने वाला कोई नहीं है दूसरा हमको सुख या दुःख का कारण है यह हमारी कुबुद्धि है"। सच है सुख या दुःख मनुष्य को अपने ही निज काम से मिलता है। हम जो अपने में सुलक्षण रखते हों तो कभी सम्भव नहीं कि दुःख भोगें। मनुष्य पर जो कुछ दुःख आ पड़ता है वह उसी के कुलक्षण से। तब यह कहना कि गवर्नमेण्ट के कर्मचारी हमें दुःख देते हैं नितान्त अनमूलक और भूल है। हम क्यों न अपने को उस योग्य हर एक बातों में कर दिखावें कि इन कर्मचारियों को हमारी त्रुटि पकड़ने का मौक़ा ही न मिले। एक एक पग में हमारे में त्रुटि और दोष भरे हैं बिना जिसे हटाये हमारे में भलाई या योग्यता कभी आवेहीगी नहीं। तुम क्यों अपनी तरक़्क़ी के लिये दूसरे का मुख देख रहे हो क्यों न अपने पैरों खड़े होना सीखो। कर्मचारी तो तुम्हारे लिये उतना ही करेंगे जितने में उनका बड़प्पन तुम्हारे ऊपर बना रहे और तुम उनके एहसानमन्द रहो दूसरे उसमें उनकी कुछ हानि न हो वरन् किसी न किसी तरह पर उनकी जाति को कुछ लाभ ही पहुंचे। मान लो शिक्षा देने में कड़ाई की जा रही है और बहुत तरह की तालीम में हिचक है तब तुम उनकी कुछ परवाह न रख अपने निज का स्कूल कालेज या विश्वविद्यालय क्यों न कर डालो। अभी तुम्हारे यहां के आदमी हैं जो विद्यावृद्धि के लाभ को समझ रहे हैं। भली भांत समझ गये होते तो वही धन जो मन्दिर शिवाले या पापी पण्डों के देने में आप उड़ा देते हैं देश के परमोपकारी काम विद्यावृद्धि आदि में दान देते। ऐमेरिका और योरोप को अपना राह दिखलाने वाला मान तुम भी वैसा ही क्यों न करो। वहां के धनियों का दान Charity fund शुभ काम देश की भलाई विद्यावृद्धि आदि कामों की पूँजी में लाखों करोड़ों बल्कि अरब तक दे दिया गया है। उसी का परिणाम है कि वहां अशिक्षित बहुत कम रह गये हैं। तुम भी ऐसा ही क्यों न करो तुम तो अपना पुराना जर्जरित घुना हुआ ढोल बजाते हुए दूसरे को दोष दे रहे हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हमारी तरक़्क़ी में बाधा पहुंच रही है। तुम क्यों आपस में इतना छिन्न भिन्न हो रहे हो? क्यों ऐकमत्य को तिलाञ्जलि दे रहे हो? उन की बुद्धि पर ध्यान दो कि कैसे ढङ्ग से तुम्हारा शासन कर रहे हैं कि तुम्हारे में ऐक्य न होने पावे। नहीं कुछ था तो मुसलमानों ही को तोड़ तुम से अलग कर लिया। बड़े से बड़े अधिकार बहुधा मुसलमानों को मिल जाते हैं तुम मुंह ताकते ही रह जाते हो। किन्तु तुम जो अपने पैरों खड़े होना सीख लोगे तो तुम्हारे लिये उधर की यह नीति महोपकारी होगी तुम उन्नति करते जाओगे मुसलमान सुस्त पड़ जांयगे। यह भावी में कुछ भलाई होनहार है जो शासनकर्त्ताओं को ऐसी बुद्धि उपजी। तुम्हारा अन्न ढोया जाता है तुम क्यों देते हो और महँगा ख़रीद खाते हो। क्यों अपने को क़ैद में छोड़े हो अपनी छंदान तोड़ बाहर निकलो नज़र फैला के देखो और २ देश वाले कैसी उन्नति कर रहे हैं। जो अपने में न पाओ उनसे सीखो। हम सर्वज्ञ है, सब जानते हैं इस घमण्ड को छोड़ो। जिस नये ढङ्ग पर और २ जातियां उन्नति कर रहीं हैं उनमें तुम अभी निरे बालक हो। अपना स्वार्थ बड़े भद्दे ढङ्ग पर पकड़े हो। हमारे शासनकर्त्ता कोई देवदूत या फ़रिश्ते नहीं हैं न यही है कि वे स्वार्थी न हों किन्तु उनका स्वार्थ उनकी जाति के स्वार्थ के साथ बढ़ रहा है। हमारा स्वार्थ अपनी जाति को बिगाड़ कर है। कोई ऐसी बुराई नहीं है जो यहां है और वहां नहीं है जैसा वे हम से और सब भली बातों में बढ़े हुये हैं वैसा ही बुराई में भी। व्यभिचार तो कोई बुराई वहां समझी ही नहीं जाती। रही जुआ, चोरी सो जैसी योरोप की इन सभ्य जातियों में है वैसी हिन्दोस्तान के गोबरगनेसों में कहां किन्तु सभ्यता के अनेक उन्नतिशाली गुणों में दोष उनके छिपे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशभक्त मैज़िनी की कतिपय उक्तियाँ

१—इटली का वास्तविक पुनरुज्जीवन कभी भी दूसरों की सहायता से सिद्ध नहीं हो सकता। पुनरुज्जीवन के लिये श्रद्धा की आवश्यकता है। श्रद्धा कर्म से उत्पन्न होती है। राष्ट्र के पुनरुज्जीवन के लिये जिस प्रकार के कर्म की आवश्यकता है वह कर्म स्वाभाविक तथा राष्ट्रीय अन्तरात्मा से प्रेरित होना चाहिये। केवलमात्र दूसरों के अनुचर बने रहने से कभी भी काम नहीं चल सकता। इसके अतिरिक्त जिस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के प्रयत्न में किसी जाति के अनेक पुत्रों को अपने समस्त जीवन व्यतीत करने न पड़े हों उस स्वतंत्रता की ओर जाति के लोगों के चित्तों में सच्चे अनुराग का उत्पन्न होना असम्भव है। जिस देश में देशवासियों का मान तथा सर्वसाधारण का आदर न होता हो उस देश में स्वतंत्रता कभी भी दृढ़ तथा चिरस्थाई नहीं हो सकती और जिस देश ने किसी दूसरी जाति के अनुग्रह अथवा शिक्षादान से स्वतंत्रता प्राप्त की हो उस देश में मनुष्यों की प्रतिष्ठा तथा सर्वसाधारण का आदर कैसे हो सकता है?

२—हमारी जातीय स्वतंत्रता उसी समय असंदिग्ध होगी जिस समय हम में से प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये पूर्ण स्वार्थत्याग तथा हर प्रकार के कष्ट सहन करने को तैयार हो और जिस समय हम में से प्रत्येक माता का पुत्र अपनी आत्मा के सामने दृढ़प्रतिज्ञ हो कर यह कह सके कि "मैं स्वतंत्र होकर रहूंगा।"

३—श्रद्धा—श्रद्धा के लिये एक ऐसे महान् उद्देश्य की आवश्यकता है जो मनुष्य के समस्त जीवन को आलिङ्गन कर सके, मनुष्य जीवन के समस्त आविष्करणों को एकाग्र कर सके, मनुष्य के विविध व्यवहारों को एक ओर ले जा सके तथा मनुष्य की चारों ओर की क्रियाओं को रोक कर एकमात्र उस उद्देश्य की पूर्त्ति में ही मनुष्य को लीन कर सके। श्रद्धा के लिये मनुष्य के हृदय में इस बात का सच्चा और अटल विश्वास होना चाहिये कि उसका वह महान उद्देश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य पूरा होगा। निज जीवन के उद्देश्य तथा उसकी ओर अपने कर्त्तव्य का पूरा २ ज्ञान हुए बिना श्रद्धा का उत्पन्न होना असम्भव है। इसके अतिरिक्त मनुष्य की आत्मा को इस बात का विश्वास होना चाहिये कि सर्वशक्तिमान परमात्मा श्रद्धावान मनुष्यों के कर्त्तव्यपालन में अवश्य सहायी होते हैं। बिना इन सब भावों के मनुष्य में श्रद्धा का होना असम्भव है और जहां पर इनमें से किसी भाव की भी कमी हो वहां पर मतों, सम्प्रदायों तथा राजनैतिक दलों का होना सम्भव है किन्तु श्रद्धावान वीरों का उत्पन्न होना असम्भव है। बिना इन भावों के किसी देश वा जाति के मनुष्य निज धर्म की रक्षा के लिये प्रतिक्षण बलि देने को प्रस्तुत नहीं हो सकते।

क्या आप अंगरेज़ों का अनुकरण करते हैं?

श्रेष्ठ पुरुषों का अनुकरण सर्वदा प्रशंसा के योग्य है। एक कवि ने तो यहां तक लिखा है कि "श्रुति-स्मृति आदि ग्रन्थों में धर्म का तत्व नहीं जाना जाता किन्तु श्रेष्ठ पुरुषों का अनुकरण ही कल्याण-कारी मार्ग अर्थात् 'धर्म' है"। वास्तव में मनुष्य का स्वभाव ही अनुक-रणशील है।

आज कल भी भारत के अनेक शिक्षित लोग अंगरेज़ जाति को सर्व श्रेष्ठ मान उन्हीं का अनुकरण करने की चेष्टा करते हैं किन्तु किसी व्यक्ति वा जाति का अनुकरण करने के लिये बड़ी भारी बुद्धि चाहिये। आज कल हमारे शिक्षित लोग अङ्गरेज़ों का अनुकरण नहीं करते वरन् सर्वथा उलटा ही आचरण करते हैं। यह बात बड़ी ध्यान देने योग्य है। निस्सन्देह भारतवासी अंगरेज़ों की बात २ में नक़ल करते हैं। किसी ने कहा है किः—

कोटं च पतलूनं च मुखे चुरुट मेव च।
हैट-बूट समायुक्तो जैण्टल मैनस्य लक्षणम्॥

इस पञ्चाङ्ग के बिना तो "जैण्टलमैन" ही नहीं कहला सकता। ये लोग केवल वस्त्रों का ही अनुकरण नहीं करते वरन् उनका आचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार भी अङ्गरेज़ों की ही नक़ल है। अङ्गरेज़ लोग अंगरेज़ी में बोलते, लिखते और पढ़ते हैं ये भी अंगरेज़ी में ही बोलते लिखते और सब कार्य करते हैं। अंगरेज़ लोग अंगरेज़ी न जानने वालों का कम आदर करते हैं, वैसे ही ये भी अंगरेज़ी न जानने वालों का कुछ मान नहीं करते। अङ्गरेज़ लोग इङ्गलिस्तान की बनी हुई वस्तुओं को प्रायः आदर और हिन्दोस्तान की बनी हुई वस्तुओं को ग्रहण नहीं करते, वैसे ही ये भी हिन्दोस्तान में बनी हुई वस्तुओं का अनादर और अन्य देशों की बनी हुई वस्तुओं को ग्रहण करते हैं। यहां तक कि अंगरेज़ लोग जैसे अङ्गरेज़ जाति का अधिक आदर करते और हिन्दू जाति से कम मिलना जुलना पसन्द करते हैं ठीक वैसे ही ये भी अङ्गरेज़ जाति का पूरा २ आदर करते और हिन्दू जाति में मिलना जुलना अपने गौरव के विरुद्ध समझ कर अपने अनुकरणशील होने का पूरा २ निश्चय करा देते हैं। किन्तु विचार किया जावे तो ये लोग अंगरेज़ों का नाम २ अनुकरण नहीं करते?

हम ऊपर कह चुके हैं कि अनुकरण के लिये बड़ी बुद्धि की अपेक्षा है। जब कोई जाति किसी श्रेष्ठ जाति का अनुकरण करना चाहे तो उसे "सम्बन्ध" का ध्यान रखना चाहिये। उदाहरणार्थ एक अंगरेज़ का नाम 'टामस' और उसके पुत्र का नाम 'एडगर' है। मान लीजिये कि 'टामस' नामक मनुष्य 'एडगर' के साथ अच्छा बर्ताव करता है। 'एडगर' की सब प्रकार से रक्षा करता हुआ उसको विद्या विषय से सम्पन्न कर सुयोग्य बनाता है। किन्तु इस बात में आप उस 'टामस' का अनुकरण किस भांति करेंगे? क्या जैसे 'टामस' ने 'एडगर' का उपकार किया वैसे ही आप भी उसी 'एडगर' नामी पुरुष का उपकार करेंगे अथवा जैसे 'टामस' ने अपने पुत्र का हित किया वैसे ही आप भी अपने पुत्र 'सत्यव्रत' नामी का उपकार करेंगे।

ऊपर की दोनों बातों में बड़ा भेद है। यदि पहली बात को ठीक अनुकरण समझें तो आप को अंगरेज़ जाति के बालकों का ही हित करना चाहिये। यदि दूसरी को ठीक समझें तो जैसे अंगरेज़ लोग अपने पुत्र पुत्रियों को सुसम्पन्न करते हैं वैसे ही भारत के लोग भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
गुरुकुल कांगड़ी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पुत्र कन्याओं को सुयोग्य बनावें। हमारा यह दृष्टान्त बहुत ही मोटा है। कोई विचारशील पुरुष भी यह नहीं मानेगा कि 'एडवर्ड' का हित करना वा अंगरेज़ पुत्रों का हित करना अङ्गरेज़ों का ठीक २ अनुकरण है। ठीक २ अनुकरण यही होगा कि अङ्गरेज़ जाति के तुल्य हिन्दू जाति भी अपने ही पुत्रों का उपकार करें।

यदि आप को यह जिज्ञासा हो कि ठीक २ अनुकरण कैसे करना चाहिये तो देखिये और ध्यान दीजिये। अङ्गरेज़ जाति का सच्चा अनुकरण करके हिन्दू जाति के लिये तत्तुल्य सुयश का अर्जन कीजिये अंगरेज़ यदि अङ्गरेज़ी का आदर करते हैं तो क्या आप भी उसी अङ्गरेज़ी का अनुकरण करें? नहीं! नहीं!! जैसे अङ्गरेज़ अपनी मातृभाषा का आदर करते हैं वैसे ही आप भी अपनी मातृभाषा का यथेष्ट सम्मान करें, यही सच्चा अनुकरण है।

अङ्गरेज़ जैसे अङ्गरेज़ी को ही मुख्य समझ कर अपने समस्त कार्य व्यवहार अङ्गरेज़ी ही में करते हैं वैसे ही आप भी अपनी हिन्दी को मुख्य समझते हुए अपने कुल व्यवहार हिन्दी में ही कीजिये यही ठीक २ अनुकरण है। अङ्गरेज़ जैसे ईसाई मत के प्रचार में अपने शरीर तक की परवाह नहीं करते और देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में पहुंच कर "ईसाई धर्म" प्रचार में अपने आप को बलिदान कर देते हैं वैसे ही आप भी अपने धर्म में दृढ़ता रखते हुए देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में पहुंच कर वैदिक धर्म प्रचार में अपने शरीर को अर्पण कीजिये और वैदिक धर्म का प्रकाश चारों दिशाओं में फैलाने के लिये तन, मन और धन से उद्योग कीजिये यही अङ्गरेज़ों का सच्चा अनुकरण है। अंगरेज़ यदि इङ्गलिस्तान आदि की बनी हुई वस्तुओं को ग्रहण करते हैं, अपने देशवासियों को लाभ पहुंचाने तथा अपने देश के कारीगरों का उत्साह बढ़ाने के निमित्त अपने ही देश की बनी वस्तुओं का आदर करते और उन्हें ही ग्रहण करते हैं ठीक वैसे ही भारतीय युवक गण अपने देश के दीन और दरिद्र कारीगरों का उत्साह बढ़ाने के हेतु अपने ही देश के बने मोटे झोटे वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं का व्यवहार करें। यही अङ्गरेज़ों का सच्चा अनुकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहलावेगा । सच्चा अनुकरण यही है कि अङ्गरेज़ जाति जिस प्रकार अङ्गरेज़ों का अत्यन्त आदर करती है वैसेही भारतवासी भी स्वदेश-वासियों का सम्मान किया करें। इस में सन्देह नहीं कि भारत इस समय बुरी दशा में है और चारों ओर से उस पर तिरस्कार का बर्त्ताव होता है परन्तु अन्त में वह हमारा ही भारत है। हमारा घर यदि बिगड़ गया हो तो क्या यह बुद्धिमानी है कि उसकी मरम्मत तक न करें और गिर जाने देवें और अपने आराम के लिये दूसरों का मुंह ताका करें। हमारे हाथ पैर वा किसी और अङ्ग में कोई मलिन वस्तु यदि हमारी असावधानी से लग गयी हो तो क्या हम अपने उस अङ्ग को काट कर फेंक देवेंगे और धो कर ठीक दशा में न करेंगे। हमारी माता को यदि कुछ रोग हो गया है तो क्या उसकी चिकित्सा का ध्यान छोड़ कर हम उसका तिरस्कार करें और कुपुत्र कहला कर संसार में अपने जाति और कुल को कलङ्कित करें। नहीं! हमारा धर्म यह होना चाहिये कि जिस माता के शरीर से हमने जन्म लिया है उसकी सदैव सेवा करना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझें, यदि माता को कुछ रोग हो गया हो तो चिकित्सा करें और माता को प्रसन्न रक्खें। उसके दुःख में दुःखी और सुख में सुखी रहना ही मुख्य समझते हुए संसार को अपने मातृभक्त और माता के सुपुत्र होने का परिचय देवें।

यदि अङ्गरेज़ों का सच्चा अनुकरण करना है तो हमें चाहिये कि हम अपनी मातृ भाषा में उत्साह तथा प्रेम रक्खें। अपनी भाषा को सब विषयों से विभूषित करें, सब प्रकार के श्रेष्ठ ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद करें, नये २ ग्रन्थ निर्माण करें तथा पत्रव्यवहार भी सब इसी ही में करें। अपनी हिन्दू जाति के लोगों का आदर कीजिये। बालक और बालिकाओं को हिन्दी भाषा में इतिहास, गणित, भूगोल, और खगोल आदि की जो चाहे शिक्षा दीजिये। अङ्गरेज़ों के समान आपस में बैर भेद को हटा कर संघ शक्ति बढ़ाइये। जैसा कुछ बर्त्ताव आप के साथ अन्य लोग धर्मपूर्वक करते हैं, वैसे ही आप भी कीजिये। भारत में शिल्प कला का प्रचार कीजिये। जैसे अङ्गरेज़ लोग स्त्रियों की शिक्षा का प्रबन्ध करते हैं वैसे ही आप भी अपने धर्म की शिक्षा स्त्रियों को दीजिये। स्त्रियों के जीवन को पशु तुल्य न बना कर उनको कुछ स्वतंत्रता दीजिये और उनका यथोचित आदर कीजिये। अपने पुत्र व कन्याओं की छोटी आयु में विवाह न कीजिये, उन्हें सब प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सम्पन्न कर जब वे गृहस्थ का निर्वाह करने योग्य हों जावें तब उनको गृहस्थी में डालिये । अङ्गरेज़ जाति का हम सच्चा अनुकरण नहीं करते, उनके चरित्र से हम उचित लाभ नहीं उठाते वरन् विरुद्धाचरण करके अपने को कृतार्थ मान लेते हैं ।

अनुकरण करते समय यह देख लेना चाहिये कि अङ्गरेज़ जिस वस्तु का आदर वा अनादर करते हैं उस वस्तु के साथ उन का क्या सम्बन्ध है ? तथा हमारा वैसा सम्बन्ध किस के साथ है ? अङ्गरेज़ों की मातृभाषा अङ्गरेज़ी है हिन्दुओं की हिन्दी है, अङ्गरेज़ जो अङ्गरेज़ी के लिये करते हैं हिन्दोस्तानी वही हिन्दी के लिये करें । अङ्गरेज़ों का देश विलायत है, हमारा देश भारत है; अङ्गरेज लोग विलायत के प्रेमी और हितकारी हैं आप भारत में अनुराग बढ़ा के उसका हित-साधन कीजिये । जैसा बर्ताव अङ्गरेज़ों का अङ्गरेज़ बच्चों के साथ होता है वैसा ही हिन्दोस्तानियों का हिन्दोस्तानी बच्चों के लिये होना चाहिये। अंगरेज़ों सदृश अपने देश, जाति तथा धर्म का पक्षपाती होना ही अङ्गरेज़ों का सच्चा अनुकरण करना है ।

केशवराम स्वामी

मासिक दृश्य

खुलना के पत्र "पल्ली चित्र" के सम्पादक को ४ वर्ष के कड़े कारावास का दण्ड मिला । "खुलनावासी" के सम्पादक तथा मुद्रक ने क्षमा की प्रार्थना की थी किन्तु दोनों को सौ सौ रुपये जुरमाना की सज़ा हुई ।

पटियाला राजद्रोह का अभियोग समाप्त हुआ महाराजा ने अभियोग बन्द कर दिया । सब अभियुक्तों को पटियाला रियासत से निकल जाने का हुक्म दिया किन्तु पीछे पटियाले के निवासियों को रियासत में रहने की भी आज्ञा दे दी ।

मिश्र देश के प्रधान मंत्री बूतरस पाशा को मिश्र के राष्ट्रीय दल के एक मुसलमान नवयुवक ने गोली से मार डाला ।

१५ फरवरी को "स्वराज्य" प्रयाग के सम्पादक श्रीयुत नन्द गोपाल जी पर राजविद्रोह का अभियोग चलाया गया । इसी अभियोग में गवाही न देने के अपराध में श्रीयुत् सतीशचन्द्र विश्वास को ३ महीने के कारावास की सज़ा हुई ।

"हित वादी" कलकत्ता के प्रिण्टर तथा प्रकाशक को राजद्रोह के अपराध में एक-एक वर्ष के कड़े कारावास का दण्ड प्राप्त हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राष्ट्रमत" बम्बई के सम्पादक को पुलिस की निन्दा करने के कारण ६०) जुरमाना हुआ।

अलीपुर बम के अभियोग का अन्त हुआ। श्रीयुत कृष्ण जीवन सुशील कुमार सेन तथा स्वर्गवासी इन्द्रनाथ नन्दी निर्दोषी ठहराये गये। शैलेन्द्रनाथ वसु को ५ वर्ष के कारावास और वीरेन्द्रचन्द्र सेन को ७ वर्ष के कालेपानी की सजा मिली।

तिब्बत के बौद्ध शासक दलाई लामा चीनी सेना के डर से भाग कर भारतवर्ष की सरकार से सहायता लेने के लिये कलकत्ते आए।

बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा में बजट के साथ मिट्टी के तेल, चांदी, तम्बाकू तथा शराब पर कर बढ़ा दिये गये।

लाहौर राजविद्रोह के अभियोग में 'सहायक' के सम्पादक श्रीयुत मुंशी राम जी को ७ वर्ष का कालापानी, 'बेदारी' के सम्पादक श्रीयुत ईश्वरी प्रसाद को ३ वर्ष के कड़े कारावास का दण्ड, 'पेशवा' के सम्पादक श्रीयुत ज़ियाउल हक़ को ५ वर्ष का कालापानी, और 'स्वराज' के सम्पादक श्रीयुत नन्दगोपाल को ५ वर्ष के कालेपानी की सज़ा हुई।

सम्राट्

दैनिक पत्र

"सम्राट्" साप्ताहिक पत्र जिस योग्यता से सनातन धर्म और भारतवर्ष की सेवा कर रहा है वह हिन्दी रसिकों से छिपा नहीं है। इसी "सम्राट्" को अब उसके स्वामी और सम्पादक श्रीमान् राजा रमेश सिंह बहादुर ने हिन्दी में दैनिक पत्र का अभाव देख कर आगामी चैत्र शुक्ला रामनवमी सम्वत् १९६७ से दैनिक कर देने का सङ्कल्प किया है। इस दैनिक पत्र का वार्षिक मूल्य केवल १०) निश्चित किया गया है परन्तु ५०० ग्राहकों की आवश्यकता है। भारतवर्ष के सम्पूर्ण हिन्दी हितैषियों का कर्तव्य है कि वे शीघ्र ही ग्राहक होने की सूचना देकर अपनी मातृभाषा के उत्साह को प्रगट करें।

जो महाशय सूचना के साथ २ वार्षिक मूल्य भी भेज देंगे उनको दैनिक सम्राट की प्रथम कापी के साथ दो पुस्तकें उपहार में भेजी जावेंगी, जिनमें से एक कविवर भिखारी दास कृत 'श्रीकृष्ण चन्द्र-चन्द्रिका' होगा। १०) मूल्य देकर दैनिक न ख़रीद सकने वाले ५) वार्षिक देकर सप्ताह भर के पत्रों को एक ही साप्ताहिक बण्डल में मँगा सकते हैं।

म० कु० बाबू [illegible] सिंह जू देव मैनेजर—'सम्राट', —कालाकांकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-दर्पण

स्त्रियों और लड़कियों के पढ़ने योग्य हिन्दी भाषा में पहिला

मासिक पत्र।

धर्म, साहित्य, सामाजिक सुधार, राजनीति आदि
विषयों पर अधिकतर

स्त्रियों ही के लेख

इस पत्र में लिखे रहते हैं।

मूल्य डाक व्यय सहित साल भर के लिये २) एक प्रति ।)

सम्पादिका—श्रीमती रामेश्वरी देवी

मैनेजर—श्रीमती कमला देवी

पता—१३ सिटी रोड—प्रयाग

"श्री वेङ्कटेश्वर समाचार" लिखता है: "कन्याओं और महिलाओं के लिये यह पत्र अत्युत्तम है और उपयोगी है। हम बड़े आदर से इसका स्वागत करते हैं। समस्त शिक्षित घरानों में इसको जगह मिलनी चाहिये। हमारा ख़याल है कि यदि य[illegible] चलता रहा तो स्त्री शिक्षा की बहुत बड़ी उन्नति होगी।"

इसी प्रकार से और और अङ्गरेज़ी और हिन्दी पत्र लिखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD. NO. A. 308.

कर्मयोगी।

हिन्दी भाषा

में

भारत राष्ट्रीय धर्म का सब से उत्तम साप्ताहिक

(प्रत्येक शुक्रवार को प्रयाग से निकलता है)

सम्पादक

श्रीयुत् सुन्दरलाल जी बी० ए०

यह पत्र प्राचीन वैदिक धर्म की मर्यादा को सामने रखते हुए भारत राष्ट्रीय पक्ष के सिद्धान्तों पर निर्भयता के साथ विचार प्रकट करता है।

वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित केवल २॥)

मिलने का पताः—

मैनेजर "कर्मयोगी"

इलाहाबाद

[illegible] के चौक इलाहाबाद में सुन्दरलाल के प्रबन्ध से छप कर प्रकाशित हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri